Haryana Vidhan Sabha

Debates

12th February, 1969

(Evening sitting)

Vol. I—No. 13

OFFICIAL REPORT

CONTENTS

Wednesday, the 12th February, 1969 (Evening Sitting)

	Page
Call Attention Notice	(13)1
Presentation of Reports--	
(i) First Report of the Committee on Subordinate Legislation for the year 1968-69	(13)3
(ii) First Report of the Committee on Government Assurances for the year 1968-69	(13)3
Motion under Rule16—	(13)3
Bill(s)-	
The Haryana Appropriation (No. 2), 1969	(13)3
Extension of Time of the Sitting	(13)32
Bill(s)-	
The Haryana Appropriation (No. 2),1969	
(Resumption) (concld)	(13)32

HARYANA VIDHAN SABHA

Wednesday, the 12th February, 1969 (Evening sitting)

The Vidhan Sabha met in the Hall of the Haryana Vidhan Sabha, Vidhan Bhavan, Sector-I, Chandigarh, at 3.00 P. M. of the Clock. Mr. Speaker (Brig. Ran Singh) in the Chair.

CALL ATTENTION NOTICE

Mr. Speaker : Call Attention Motion given notice of by Shrimati Chandravati, M.L.A., regarding disappointment and discouragement to the producers of sugarcane as a result of reduction in the price of sugarcane is admitted.

The Hon. member may please read her motion.

Shrimati Chandravati : Sir, I want to get this matter clarified from the Minister for Agriculture that as a result of reducing the price of sugarcane the mill-owner will no doubt be benefitted but the producer will not even get the price of the seed. In order to save him from disappointment and discouragement the Government have not taken any steps. It has becaused a great loss to the farmers producing sugarcane. If they are not saved from this heavy loss it will cause a great set back to the production of sugar and khand in the State. It will result in a great loss to the producer as well as the consumer and it will also be against the interests of the State.

स्पीकर साहिब, यदि आप इजाजत दें तो मैं इसके ऊपर कुछ बोलना चाहती हूं ।

Mr. Speaker : When you have moved that motion all this is contained in that. Lam afraid no debate is allowed. If you want any clarification that can be allowed.

मुख्य मन्त्री (बंसी लाल): स्पीकर साहिब, जहां तक शुगर केन की प्राईस को फिक्स करने का सम्बन्ध है, इसे सैंट्रल गवर्नमैंट फिक्स करती है । प्रान्तीय सरकार इसमें दखल नहीं दे सकती । लेकिन इसके बावजूद भी हुमने शूगरकेन ग्रोअर्ज की डिफिकल्टीज को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था । इस बार, म्मीकर साहिब, बदकिस्मती यह रही कि शुगरकेन की फसल में बीमारी लग जाने के कारण उसकी यीस्ड बहुत कम रही । परसैटेज में भी काफी फर्क रहा । मैं मानता हूं कि इसमें किसान का कोई कसूर नहीं, कसूर तो कुदरत का है । मगर इससे आगे, स्पीकर साहिब, इन हालात में सरकार भी कुछ नहीं कर सकती थी ।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहिब, आन ए प्वायंट आफ क्लेरिफिकेशन । मैं मुख्य मन्त्री जी से एक बात पुछना चाहता हूं । शूगर कण्ट्रोल बोर्ड हमारे प्रदेश का बना हुआहै । पीछे उसकी मीटिंग भी बुलाई गई थी लेकिन मीटिंग को बाद में मुल्तवी कर दिया गया । उस शुगर कण्ट्रोल बोर्ड की वहिन चन्द्रावती जी भी मैम्बर हैं और मैं भी मैम्बर हूं । गने को कीमत

मुकर्रर करने के बारे में यहां कहने की आवश्यकता नही होती अगर उस बोर्ड की मीटिंग ठीक समय पर होने दी गई होती । तो मैं, आपके द्वारा अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि वह मीर्टिग क्यों नहीं को गई?

मुख्य मंत्री : स्पीकर साहिब, मीटिंग अब बुला दी जाएगी ।

श्री अध्यक्ष : श्रीमती चन्द्रावती जो, आप कुछ कहना चाहती थीं?

मुख्य मंत्री : काल अटैन्शन नोटिस परं तो .जनाब कोई सवाल पुछा नही जा सकता । श्री अध्यक्ष. अगर ये कोई क्लैरिफिकेशन लेना चाहें तों ले सकती हैं ।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहिब, मैं यह तो मानती हूं कि गले में जो परसंटेज निकलती थी वह इस बार उतनी नहीं है जितनी पहले निकलती थी मगर गन्ना तो कम भाव पर खरीदा जा रहा है । जंबकि चीनी को 'महंगे भाव पर बेचा जा रहा है । फिर पिछले साल शुगरकेन की कीमत सरकार ने पानीपत में साढे बारह रुपये क्विंटल दी थी और यमुनानगर में साढे बारह रुपये से पंद्रह रुपये दी थी जब कि अब रोहतक में साढ़े सात रुपये और पानीपत में दस रुपये का भाव कर दियो गया .है । स्पीकर साहिब, इससे मिल मालिकों को जो कि इतने पैसे वाले होते है तो कोई ध्रुमपान नहीं हुआ क्योंकि गन्ने की कीमत उनको कम देनी पड़ती

है और उनकी चीनी महंगे भाव पर बिकती है । कोई भी त्योहार हो, चार–पांच रुपये से लेकर सात– आठ रुपये किलो तक चीनी बिकती है । लेकिन किसान को दोनों तरफ से नुक्सान ही नुक्सान है

Mr. Speaker : Speech is not allowed please. if you want to have any clarification, you can.

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहिब, मैं यह जानना चाहती है कि क्या अपनी सरकार गवर्नमैंट आफ इंडिया को रिकमेड करेगी कि किसान कों जो लौस हुआ है उसको पूरा किया जाए?

मुख्य मन्त्री : शायद आनरेबल मेम्बर ने पहले सुना नही । स्पीकर साहिब, इन सारी बातों का जनाब मै दे चुका हूं । आनरेबल मैम्बर ने यह जे। बात कही कि चीनी के दाम तो बढ़ गए हैं मगर गन्ने की कीमत घट गई है, इसका जवाब भी मैंने क्या दिया था शायद आनरेबल मैम्बर ने यह भी नहीं सुना । पानीपत में एक मिल प्राईवेट सैक्टर में है और दो मिलें कोआप्रेटिव सैक्टर में है शायद इस बात का ध्यान भी आनरेबल मैम्बर को नहीं रहा है ।

चौधरी रणबीर सिंह : अध्यक्ष महोदय, आन ए प्वायट आफ क्लैरिफिकेशन, एक और सवाल मैं मुख्य मन्त्री जी से पूछना चाहता ढूं । केन्द्रीय खाद्य मन्त्री जी ने लोक सभा में यह आश्वासन दिया था कि गन्ने की कीमत 10 रुपए क्विंटल दी

जाएगी । अपनी इस घोषणाके द्वारा एक तरह से उन्होंने सारे देश के किसानों को विश्वास दिलाया था । हमारे मुख्य मन्त्री जी ने भी इसी प्रकार का आश्वासन दिया था । मगर इन आश्वासनों के बावजुद भी रोहतक जिले में गन्ने को कीमत केवल साढे सात रुपए क्विंटल के हिसाब से किसानों को पैसा दिया गया । यह बात मुख्य मन्त्री जी के अपने आश्वासन के भी खिलाफ है । तो मैं मुख्य मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि क्या वे अपने आश्वासन को निभायेंगे '' या नहीं निभायेंगे और' यदि निभायेंगे तो उसके लिए क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

मुख्य मंत्री : स्पीकर साहिब, मेरा ख्याल है कि आनरेबल मैम्बर को पता तो सब बांतो का है और पूछने के लिंए ही इन्होने यह सवाल पूछ लिया हैं । स्पींकर साहिब जो मिले रोहतक और पानीपत में है, उन में गन्ना 10 रुपये क्विंटल के भाव से ही गया है । केन्द्रीय फूड एण्ड एग्रीकल्चेर मिनिस्टर ने पार्लियामेंट में 'जो आश्वासन दिया था उसके बारे में मेरी अर्ज यह है कि उन्होंने आश्वासन के मुताविक भाव भी 10 रुपए फिक्स कर दिया था । मगर, स्पीकर साहिब, इस भाव पर गन्ना लेने के लिए सर्टन परसैटेंज, शायद 9. 5 भी फिक्स होती हूँ । रोहतक में यह परसैटेज इस बार पांच परसैंट से भी नीचे आ चुकी है । तो इन हालात में गवनेंमैटं मजबुर नहीं कर सकती कोआप्रेटिव सैक्टर को मिल को कि उससे ज्यादा कीमत दी जाए । इमसे पहले भी रोहतक की कौआप्रेटिव मिल काफी रुपये का घाटा उठा चुकी है ।

PRESENTATION OF REPORTS

(i) First Report of the Committee on Subordinate Legislation for the year 1968-69

Chaudhry Maru Singh Malik (Chairman, Committee on Subordinate Legislation) : Sir, I present the First Report of the Committee on Subordinate Legislation for the year 1968-69.

Sir, I also want to make an observation.

Mr. Speaker : Yes.

Chaudhry Maru Singh Malik : Due to shortage of time the report of the Committee on Subordinate Legislation could not be got printed. Therefore, a typed copy of the Report is presented to the House. Printed copies will be supplied to the Members in due course.

(ii) First Report of the Committee on Government Assurances for the Year 1968-69

श्रीमती प्रसन्नी देवी (मैम्बर, सरकारी आश्वासन समिति) : अध्यक्ष महोदय, मै वर्ष 1968– 69 की सरकारी आश्वासन समिति का प्रथम प्रतिवेदन' सदन में पेश करती हूं । समय की कमी के कारण सरकारी आश्वासन समिति का प्रतिवेदन छपाया नहीं जा सका । इसलिए प्रतिवेदन की टाईप की हुई प्रति सदन में पेश की जाती है । छपी हुई प्रतियां जब भी गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रैस से प्राप्त होगा, सदस्यों को सप्लाई कर दी जायेंगी ।

MOTION UNDER RULE 16

Chief Minister (Shri Bansi Lal) : Sir, I beg to move—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine die.

Mr. Speaker : Motion moved—.

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine die.

Mr. Speaker : Question is—

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned sine die.

The motion was carried.

BILL

THE HARYANA APPROPRIATION (No. 2), BILL, 1969

Finance Minister (Shrimati Om Prabha Jain) : Sir, I beg to introduce the Haryana Appropriation (No. 2) Bill, 1969.

Finance Minister (Shrimati Om Prabha Jain) : Sir, I beg to move

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill b. taken into consideration at once.

श्री राम सरन चन्द भिसल (नारनौल) : माननीय अध्यक्ष महोदय., आपकी इजाजत से मैं कुछ शब्द अर्ज करना चाहता हूं । अध्यक्ष महोदय, अब बजट एक आखिरी स्टेज पर है । वैसे तो गवर्नर साहिब के एड्रैस पर जनरल डिस्कशन के रूप में और डिमाडंज पर काफी बहस हो चुकी हैं परन्तु फिर भी मैं सदन का अधिक समय न लेता हुआ दो– चार शब्द अवश्य ही कहुंगा ।

अध्यक्ष महोदय, हमारे विरोधी दल के साथी यहां से बाहर चले गये और यह कह कर चले गये कि यहां पर डैमोक्रेई के असूलो का पालन नहीं किया जाता । अध्यक्ष महोदय, मुझे इस बात का अंफसोस है वे इस. प्रकार की बातें यहां पर करते हैं । मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि जो कांस्टीच्यूशनल प्रोसीजर है और जो हमारे रूल में प्रेसकाईब्ड है उनका हर स्टेज पर अमल किया गया हूँ । जहां पीसफुल मैथेड, कांस्टीच्यूशनल मैथेड की वायलैंस होती है वह खुंद करते हैं और फिर इस बात का दावा करते हैं कि हम कांस्टीच्यूशनल डैमोक्रेसी पर अटैक करते है । यह तो, स्पीकर साहिब, एक अजीब ही इनंकी बात है । जब लास्ट इअर मिड–टर्म पोल हुआ तो उस वक्त कांग्रेस के 48 मैम्बर आये थे और कांग्रेस बहुमत में आयी थी । स्पीकर साहिब, जब आपका यहां इलैक्शन हुआ उस वक्त भी हमारे कई एक इण्डीपैण्डेण्ट मैम्बर्ज ने हमारा साथ दिया था । इस प्रकार से ह्मारे 48 मैम्बरों के साथ और भी मैम्बर शामिल हो गये थे । कुछ दिनोंके पश्चात राज्य सभा का इलैक्शन हुआ उसमें भी दोनों सीटें कांग्रेस पार्टी ने ही हासिल

कीं । हो यह बात जरूर है कि कुछ कांग्रेस के मैम्बर इसबात पर नाराह हो गये कि वे जो ओहदा चाहते थे उनको नहीं मिला और कांग्रेस से अलग हो गये । डैमोक्रेसी जो है दरअसल गवर्नमैंट बाई डिस्क्शन है । यहां डिस्कशन करके जब वोटिंग ले ली गयी लेकिन फिर भी यह बँट देना कि मुझे पर्टीकुलर पोस्ट नहीं मिली तो मैं पार्टी छोड़ दूंगा और दूसरी पार्टी में चला जाऊगा यह अच्छी प्रैक्टिस नहीं है । आजकल आम लफ्ज में डिफेक्शन का प्रयोग करते हैं । तमाम हिन्दुस्तान के अन्दर डिफेक्शन को कंडैम किया गया है परन्तु मुझे अफसोस है कि हमारे नौ साथी उधर आपोजीशन कीओर चले गये हैं परन्तु किसी भी महानुभाव ने या विरोधी दल के नेता ने इस प्रैक्टिस को कंडैम नहीं किया । सभी ने उनका वैलकम किया? जैसे उन्होंने बड़ा बहादुरी का और नेक और पाक काम किया है । खैर उन्होंने. जो कुछ भी किया लेंकिन फिर कांग्रेस की स्ट्रैगथ ज्यादा हो गई । हमारे पास कुछ इडीपैडेट सदस्य आ गये । आपोजीशन वालो ने उनको भी चौलेंज किया कि तुम कांग्रेस में नहीं लिए जा सकते । आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हमारी पार्टी के साथ यदि इडीपंडेंट सदस्य वोट देते हैं तो ये चौलेंज करते है कि वोट नहीं दे सकते । अगर पार्टी में आते हैं तो चौलेंज करते है । स्पीकर साहिब, पार्टी में लेना या न लेना हमारा काम है न कि अपोजीशन पार्टी का । जिन मैम्बरान् को कांग्रेस पार्टी में लिया है उनको कायदे कानून के मुताबिक लिया गया । स्पीकर साहिब 28 जनवरी को हमारी वोटिंग स्टैगथ 43 थी ऐज अगेंसट 36 । जब हमारी कलियर मेजोरेटी है तब भी

ये अखबार वालो से यही कहते थे कि 28 जनवरी को हम देंखेगे' । स्पीकर साहिब, 28 जनवरी भी चली गयी परन्तु फिर भी ये कुछ नहीं कर सके । गवर्नर साहिब के पास जा कर मैम्बरों को इकट्ठा करके ले जा कर दिखलाया जाता है कि हरियाणा में उनकी पाटी की मेजोरिटी है । दरअसल इस काम के वास्ते फोरम असैम्बली है जो पाटी मेजोरिटी में है वही यहां रहेगी । यह कहना कि मेजोरेटी में नहीं है यह सब बे–माईने बातें हैं । जब इन्होंने देख लिया कि कांग्रेस पार्टी की स्टैगंथ इतनी है तो बहाने बाजी लगाते हैं कि स्पीकर साहिब स्ट्रेट वोट एवायड करने की कोशिश की गयी है । स्पीकर साहिब, स्ट्रेट वोट तो उन्होंने एवायड करने की कोशिश की है । जब ये फस्ट्रेटिड हो गये तो सदन से उठ कर बाहर चले गये ।

स्पीकर साहिब, मुझे तो इस स्टेज पर यही अर्ज करना है कि भारत एशिया में सव से वड़ी डैमोक्रेसी है । हमारे पड़ोसी मुल्क में डैमोक्रेसी नहीं है । वह्टां पर दूसरी टाईप की गवर्नमैंट हइ । आज वहां की जनता यह मांग कर रही है कि पार्लियामेंटरी डैमोक्रेसी हो । हर व्यक्ति की यही आवाज है कि जिस प्रकार की भारत में डैमोक्रेसी है वैसी ही पाकिस्तान में होनी चाहिए । इसलिए, स्पीकर साहिब, भारतवर्ष को आदर्श होना चाहिए, एक स्टैंर्डड कायम करके दिखाना चाहिए । भारतवर्ष के अन्दर हरियाणा में दोनों बातों का स्टैंडर्ड कायम करके दिख दिया है । यहां पर डिफेक्शन –हुई तो यहां की जनता ने यह दिखला दिया कि डिफेक्शन अच्छी

चीज नहीं है और कंहैम करने लायक है । हमारें लैजिस्लेचर ने भी यह नमूना पेश किया है कि यह कंडम करने लायक है । स्पीकर साद्विब, डैमोक्रेसी के अन्दररू असूल होने चाहिएं । डैमोक्रेसी उन्हीं असूलो से मजबूत होती. है।

स्पीकर साहिब, वे यहां कहते हैं कि हम जनता की सेवा के लिए आए हैं और करेंगे । जनता तो सारी बाते देख रही है । जनता ने इनकी सब करतूतों को देखा है । जब पीछे संयुक्त दल की गवर्ममैट थी तब इन्होंने देख लिया था । इस लिए, स्पीकर साहिब, इन वातों पर मैं अधिक नहीं जाना चाहता, क्योंकि बजट डिस्कशन में इन बातों की काफी चर्चा हो चुकी है । इसलिए मैं यही कहना चाहता हूं कि हमारा सरकार कांस्टीच्युशनल मैथेड के मुताबिक काम कर रही है । अगर डैमोक्रेसी को वायलेट कर रहें हैं तो ये कर रहे है । हाउस में चेयर के आर्डर को जौ नहीं करते हैं तो यें नहीं करते है । हाउस कोई डिसीजन लेता है तो उसके आर्डर को ये ओबे नहीं करते फिर कहते है कि हमारी तरफ से अच्छा जेस्चर नहीं आया ।

स्पीकर साहिब, अब मैं कुछ इलफाज बजट के मुताबिक कहना चाहता हूं । इसमे कोई शक नहीं कि बजट के बारे में जो तारीफ की गई है उसकी हमारी गवर्नमैंट पूरी तरह रिजर्व करती है । पिछले साल जब बजट पेश हुआ जुलाईके महीने में तो 8— 9 करोड़ रुपये का घाटा दिखलाया गया था । उस वक्त मैं सोचता था कि हमारी स्टेट के रिसोर्सिज बहुत कम है इस घाटे को किस

प्रकार से पूरा किया जा सकेगा । फिर कही फैमिन हो गया, कहीं फ्लड आ गया, कहीं कुंछ बातें हो गई तेकिन यह एक अच्छे मैनेजमैंट का ही सबूत है कि इन सब बातों के होते हुए सब काम ठीक प्रकार से चलते रहे । हमारी सरकार ने स्कुलों को भी अपग्रेड किया, फैमिन रिलीफ भी दिया गया, फ्लड के कुछ प्रोटैक्टिव मैयर्ज भी अडोप्ट किये गये । फारमर्ज को अच्छी कीमतों को स्पार्ट दी गयी और काफी बात डिवंल्पमैंट की भी की गई । सून सब बातों के बावजूद भी हमारा ओर्पानग बैलेन्स पिछला पांच करोड और 36 लाख घाटे का आया है । मतलब कहने का यह हे कि स्टेट की फाईनेंशियल पोजीशन हर हालत से साऊंड है । हम आगे अच्छी तरह से बढ़ सकते हैं और जैसा कि बजट स्पीच में कहा गया है कि किफायत से आमदनी बढेगी । गवर्नमैटं सर्वेट्स. यने डी. ए. दिया गया । इन सब बातों को कवर करके हम चल रहे है । याद गवर्नमैट आफ इंडिया ने जैसी कि हमें आशा हूँ, एडिशनल ग्राण्ट दे दी तो हमारी पोजीशन और भी अच्छी हो जायेगी ।

स्पीकर साहिब, यहां बजट पर काफी डिटेल में कहा जा चुका है । मै उन इलाकों को बधाई देता हूं जिन इलाकों में चाहे वह हिसार है, चाहे गुड़गांव है, चाहे करनाल, चाहे रोहतक है डिवैल्पमैट के और प्रोग्रैस के काम हुए हैं । अगर मैं थोड़ा सा अरेस्टव्हाईल पैप्सू के एरिया के मुताल्लिक और कुछ महेन्द्रगढ के मुताल्लिक कहुं तो कुछ वेजा न होगा । मुझे तो पता नहीं था कि जीन्द भी

बैकवर्ड एरिया डिक्लेयर किया हुआ हूँ । दया कृष्ण जी ने यहां कहा तब मुझे पता लगा । यह बैकवर्ड कहलाना भी अच्छा नहीं लगता । क्योंकि यह भी एक हमारे ऊपर स्टेगमा है जैसे कि अनटचेबिलटी का स्टेगमा होता है उसी प्रकार से यह है ।

'जब हमारे यहां डिस्ट्रिक्ट महेन्द्रगढ में मीटिग हुई तो डी.सी. के सामने यह सवाल आया कि वह हमें वैकवर्ड एरिया डिक्लेयर करना चाहते हैं तब भी मैने इस बात को अपोज किया लेकिन फिर भी उस इलाके को बैकवर्ड डिक्लेयर किया गया ।

श्री अध्यक्ष : जानबुझ कर तो डिक्लेयर नहीं करवा लिया? (हंसी)

थी राम सरन चन्द मित्तल : स्पीकर साहिब, वैकवर्ड तो वह एरिया है, लेकिन हमें बराबर बैकवर्ड बने रहना यह अच्छा नहीं लगता, इसलिये मैं बहन ओम प्रभा जैन जी से अक्ष करूंगा जिन के पास खजाना है कि वह अब इस इलाके को बैकवर्डनैस की डिजीज से बचा ले । लेकिन सिर्फ बात करने से ही तो काम नहीं चल सकता, इसके लिये गवनैमैट को एक खास टाइम में कोई विशेष स्कीम बनाकर प्रयत्न करना चाहिए और हमारे इस कलंक को दूर कर देना चाहिए । मैं महेन्द्रगढ को ही, स्पीकर साहिब, कनफाइन करता हूं यों तो जींद का इलाका भी बैकवर्ड एरिया करार दिया गया है, लेकिन वहां फिर भी नहरी इलाका है, परन्तु महेन्द्रगढ तो बिल्कुल बारानी है ।

मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि यह इलाका प्रोडक्शन और जलवायु के आधार पर बैकवर्ड जरूर है पुर हम इन्टैलैक्चूअली वैकवर्ड नहीं है इसका एक उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूं । जब तक पटियाला स्टेट का राज्य था तो तमाम स्टेट में उर्दू जबान थी,

लेकिन हमारे यहां वार टाइम के अन्दर पटियाला स्टेट ने पंजाबी डिक्लेयर कर दी लेकिन हमं ने पैप्सू बनने के पहले प्रोटैस्ट किया और नारनौल महेन्द्रगढ और कडाघाट में, हिन्दी डिक्लेयररू करवा दी । लेकिन फिजिकली महेन्द्रगढ ऐसी जगह है जिसको कि पटियाला स्टेट. मैं एक कालोनी समझा जाता थाक्योंकि यह पहले 1857 के पहले झज्जर की स्टेट थी और वहां का नवाब बिट्रिश गवर्नमैटं के खिलाफ था । इसलिये 1857 मै नारनौल के मैदानो में' लडाई हुई । हम जींत जाते लेकिन फुलकिया स्टेट्स ने अंग्रेजों की मदद की और नवाब हार गया। उन्हें दिल्ली मे ले जाकर चान्दनी चौक में एग्जीक्युट किया गया और वहीं पर उनको फांसी दे दी गई । उस वक्त से ही नारनौल को इनाम के तौर पर पटियाला को दे दिया गया । हमारे बैकवर्ड होने का यह कारण था कि हम बिट्रिश गवर्नमैंट की गुलामी नहीं करना चाहते थे और. न की है ।

चौधरी रणबीर सिंह : महेन्द्रगढ पटियाला को कब दिया गया था?

श्री अध्यक्ष : यह पूछने की बात नहीं, यह सब जानते हैं ।

श्री राम सरन चन्द मित्तल : यह तो चोधरी साहिब भोले बनते है । स्पीकर साहिब मेरे कहने का मतलब यह है कि यह एरिया बैकवर्ड नहीं रखा जाना चाहिए क्योंकि यही के लोगो में आजादी का मादा है और वह दासता से समझौता नहीं करते । इसलिये आज हमारा देश आजाद है औंर उस वक्त ऐसे क्षेत्र की कदर करनी चाहिए, लेकिन यह सब जानते हैं कि वही पर सिवाये इसके कि कुछ सडकें बनाई गई या थोडी–बहुत बिजली दे दी गई ? और एक कालेज भी बन गया, और कुछ नहीँ है ।

जनाब, पटियाला स्टेट के जमाने में इस इलाके को इतना नगलैक्ट किया गया था कि कोई भी आफिसर वहां जाना पसन्द नहीं करता था और उसे कोई अंडेमान के तौर? पर समझाजाता था ' । जब किसी आफिसर को पनिश करना होता था तो उसको नारनौल भेज दो पैप्सू में भी यही पालिसी रही, लेकिन सरदार प्रताप सिंह कैरों के जमाने में यह पालिसी –. चेज हुई और उन्होंने एक सरकुलर जारी किया कि महेन्द्रगढ में और नारनौल में जाने–वाले – अफसरो को 10 परसैटं स्पेशल अलाऊस दिया जायेगा और उसकी मैं क्सिमम लिमिट 50 रु० रखी गई । लोकल आदमी को 5 परसेंट दिया गया । लेकिन अब मालुम होता है कि वह पालिसी चेंज हो गई हूँ । अध्यक्ष महोदय, जब मै प्रताप सिंह के जमाने में एक डिपार्टमेंट का मिनिस्टर था तब मुझे याद है कि मैने आफिसरों की मीटिंग मे पूछा कि आपको कोई तकलीफ. तो नहीं है? तो एक कहने लगा कि जनाब जो आफिसर खराब था उसको तो गुड़गांव

महेन्द्रगढ भेजा जाना चाहिए था लेकिन मुझे सजा पाने के लिये महेन्द्रगढ भेज रहे है' तो मैंने उससे कहा कि अब तो पहले वाली पालिसी चेंज हो गई है और महेन्द्रगढ जाने के लिये बैस्ट हैंड भेजा जाएगा तो उसने कहा–आई एम सौरी । मैं सरकार से कहूंगा कि यह जो पालिसी थी इसको बरकरार रखना चाहिए ।

श्री अध्यक्षय : बस एक या दो मिनट में आप खत्म करें, आपने तो बड़ा टाइम ले लिया ।

श्री राम सरन चन्द मित्तल : जनाब आप तो बैकवर्ड न समझे मै एक या दो मिनट में ही समाप्त करता हूं । स्पीकर साहिब हमारे साथ बड़ा इन्जस्टिस हुआ है । भाखडा बना और इससे नहंरें निंकाली गई । उन के पानी से लोगों को बड़ा फायदा हुआ । मेरे पास यह जो मैमोरेडम है, इसके एक्सप्लेनेटरी नोट में 18 पेज पर यह लिखा है कि –

The repayments on account of Bhakra loans are the heaviest (Rs 12.87 crores during 1969-70. 'The Budget takes care of this liability in full."

लेकिन भाखड़ा बनने को वजह से बैटरमैट लंबी वगैरा चार्ज की जाती है । और हमे उसमे भी कन्ट्रिब्यूट करना पड़ता है जबकि हमें उससे फायदा कुछ नही होता और जो जनरल रैवेन्यू में हम बैकवर्ड इलाके के लिये कन्ट्रीब्यूट करते है उसके एवेज में हमे मिलता है फैमिन और बैकर्वडनैस ।

चौधरी रणखीर सिंह : बिजली तो आ गई ।

श्री राम सरन चन्द मित्तल : जी हां, वहां पर बिजली इस लिये आई कि हमारी पिछली पैप्सू की असैम्बली में रैजोल्यूशन पास हुआ. था और यह ठीक है कि नारनौल के लिये टाउन में बिजली देने की योजना बनी थी मगर इम बात को मैं कंसीड करता हूं कि बिजली बोर्ड मे' जो पहले कनैवशान नहीं मिले थे, वह अब कुछ मिलने लग गए । बल्कि मैं उन की तारीफ मे एडीशन भी कर सकता हूं क्योंकि नारनौल से नंगल चौधरी तक की दस बारह मीलकी लाईन उन्होंने 15 रोज के अन्दर बना दी थी । मैंने उन को मुबारिकबाद दी थी कि आप ने डे एण्ड नाईट काम किया है । यह तो माना जा सकता है कि अगर वे चाहे तो बहुत काम कर सकते हैलेकिन उनकी तारीफ कुछ ज्यादा कर दी गई है । पिछले बजट में मेरी कस्टीचूएसी के लिये 15 लाख रुपया रखा गया था लेकिन उस मै से एक पैसा भी खर्च नहीं किया गया । इस लिये जितनी तारीफ उनकी 'की गई है उस में से इतनी माईनस कर दी जाए । बहन जी ने कहा कि महेन्द्रगढ के जिले में वोलटेज की कमी नहीं है र मगर मेंउनको बताना चाहता बू कि वहां पर वोल्टेज बहुत कभ' हूँ जिस की वजह से कई लोगों की मोटरें जल गई है' । लेकिन मै समझता हूं कि नया काम सम्भाला है आखिर लिमिटेशन्ज भी होती है, मगर मै इतना जरूर कहूंगा कि उनकी रिपोर्ट को डिसकस करने का हमें मौका देना चाहिए ताकि जो रिकूटमैंट वगैरा की जो बाते' है' वह डिसकस कर सकै ।

अब मैं गर्ल्ज ऐजूकेशन और टैक्नीकल एजूकेशन की तरफ आता हूं । गर्ल्ज एजूकेशन बड़ी अच्छी चीज है मैइस के हक में हूं कि हाईएस्ट एजूकेशन लड़कियों को मिलनी चाहिए लेकिन डिफीकल्टी यह है कि लेडी टीचर्ज नहीं मिलतीं । वह तब मिल सकती हैं अगर हर जिला के हैडक्वार्टर मे एक गर्ल्ज कालेज होगा । जहां । तक नारनौल तहसील का सम्बन्ध है वहां पर न तो लड़कियों का मिडल स्कूल है और न ही कोई उन के लिये हाई स्कूल ही हूँ सिवाए एक हायर सैकण्डरी स्कूलके । इस में भी लड़कियों के लिए होस्टल नहीं हूँ जो कि होना चाहिए सरकार को इन बातों की तरफ खयाल करना चाहिए । हमारे महेन्द्रगढ के अन्दर मिनरल वैल्थ बहुत ज्यादा है मैं अपनी गवर्नमैटं से निवेदन करूंगा कि वहां पर आप एक ज्योलोजी का सबजैक्ट नारनौल मे पढ़ाना शुरू कर दें तो आप को मुफ्त में आदमी मिल सकते हैं । करैक्टर बिल्डिग के लिये लडकों के कैम्पस अच्छी चीज है, वर्क्स एक्सपीरिएंस के लिये जो 50 के करीब कैंम्प लगाए जा रहे हूँ यह अच्छी बात है । हाई स्कूलों में जो देहातों में हैं वही अगर एग्रीकल्चर का सबजैक्ट इण्ट्रोड्यूस कर दिया जाए तो बेरोजगारी काफी खस्म हो सकती है 1 स्पीकर साहिब, नारनौल के गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल के वास्ते बिडिंल्ग की जरुरत है । वहां पटियाला स्टेट के वक्त का एक प्राईमरी स्कूल होता था, उस मे हायर सैकण्डरी ओर जै.बी.टी. की क्लासिज भी बार चुकीं है. लेकिन बिंल्डिंग को नहीं बढ़ाया गया । आप अदाजा बताए कि उस ये' कहां तक अकायोडेशनं हो सकती है । इमी तरह हमारे यहां तो हस्पताल हैं उन में भी

इम्प्रूवमैटं होनी चाहिए, माईनर इरिगेशन वर्क्स और बोरिंग के लिये ड्रिलिंग मशीनें चाहिएं क्योंकि बगैर हाई पावर रिग के वहां पर बोर नहीं हो सकता । लोग जो है वह खुद इतना खर्चा नहीं कर सकते । वस मैं ज्यादा समय न त्रेता हुआ आप का धन्यवाद करता हूं कि आप ने मुझे समय दिया ।

चौधरी रणबीर सिंह : स्पीकर साहिब मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि विरोधी दल के सदस्य तो यहां से चले गए हैं । इसलिये कंस्टूक्टिव नुक्ताचीनी अगर कोई करना चाहे, चाहे वह कांग्रेस का ही मैम्बर हो तो उस को टाईम देने में प्रेफैसं दी जानी चाहिए । मित्तल साहिब ने तो और तरह की बातें की हैं ।

Mr. Speaker : Hon. Members, I would like to know how many more Members would like to speak today.

(At this stage 10 hon. Members rose in their seats.)

As there are 10 more hon. Members who want to participate in the discussion. I think that we will have to extend the sitting. And 10 minutes would be given to each hon. Member and no more. Of course, it can be less. Now, I would request only those Members to speak who will abide by this decision.

Khan Sahib, being the eldest Member, should speak now.

खान अब्दुल गफ्फार खां : स्पीकर साहिब, मुझे एलडैस्ट होने की वजह से कुछ सहूलत मिलनी चाहिए क्योंकि मैं बहुत आहिस्ता बोलता हूं, इसलिये ज्यादा वक्त मिलना चाहिए ।

श्रीमती चन्द्रावती (लोहारू) : स्पीकर साहिब, मैं पहले तो सोचती थी कि आप मुझे काल अटैन्शन पर बोलने देंगे तो मैअपने विचार पेश कर सकूंगी लेकिन मैं पहले नहीं बोल सकी । आज एप्रोप्रिएशन बिल पर बहस हो रही है जिन्होंने इस की तारीफ की है मैं उन सब साथियों के साथ शामिल होती हूं । लेकिन इसके बावजूद भी मैं कुछ चीजें आपके द्वारा सरकार के ध्यान में लाना चाहती हूं । मुझ से पहले भी कई मैम्बर साहिबान कह चुके है' और मै भी यह बताना चाहती हूं कि बी.डी.ओज. के बारे में जो कुठाराघात चल रहा है वह मुनासिब नहीं है । उन्होंने बहुत सेवाएं की हैलेकिन ऐसा मालूम होता है कि सरकार उन की सेवाओं को भुल गई है । मुझे याद है कि पैप्सू में जब सब से पहले ग्राम सेविकाएं गई तो इन को कितनी कठिनाइयां पेश आईं । हमारे गांवों में तो कोई भी लड़की मशीन चलाना नहीं जानती थी लेकिन उन ग्राम सेविकाओं ने गांव गांव में जा कर बड़ा अच्छा काम किया । स्पीकर साहिब, जिन की बीस बीस साल की सर्विस है उन को अगर आज. कहा जाए कि नर्स और दाई का काम करो तो यह अच्छा नहीं लगता । जिन लड़कियों ने गांवों की लाईफ में क्रांति पैदा की थी उन को हम इस तरह से खराब होने के लिये नहीं भेज सकते । इसलिये मैं सरकार को निवेदन करूंगी कि अगर किसी ऐसी लड़की की सर्विस हट गई हो तो उस को फिर सर्विस में रखा जाए । स्पीकर साहिब बी.डी.ओज. के खिलाफ सब से ज्यादा तहसीलदार और नायब तहसीलदार हैं क्यों कि बी.डी. ओज. के रहने से उन के स्टेटस में कुछ कमी आई है । लेकिन मैं

चाहती हूं कि सरकार को इस महकमें को रखना चाहिए क्योंकि एग्रीकल्चर के बारे में भी इन्होंने बहुत काम किया है ।

स्पीकर साहिब, मेरी कास्टीच्युएंसी में तो आज भी अकाल पड़ा हुआ है लेकिन चूंकि मैं शुगर कंट्रोल बोर्ड की मैम्बर बनाई गई थी इसलिये मैं अपना फर्ज समझती हूं कि गन्ने के बारे में कुछ बातें कहूं । यह ठीक है कि इन मिलों की कुलैक्टिव पूंजी होगी और उन से कुछ घरों को फायदा होगा....

मुख्य मन्त्री : कुछ को नहीं सब को होगा । प्रोड्यूसर जो हैं वही इनके शेयर होल्डर्ज है' ।

श्रीमती चन्द्रावती : प्रोड्यूसर को दोनों तरफ से मार पड़ती है इधर से भी और उधर से भी । इसलिये उन के राइट्स को सेफगार्ड किया जाए । उसके गन्ने की मनमानी कीमत लगाई जाती है औंर दूसरी तरफ यह किया जाता है कि कहते हैं कि मिल के दस मील के एरिया में खडसारी का पावर का कोहलू नहीं लगेगा यह बात जचती नहीं है कि क्रशर लगे तो मिल बन्द हो जाएगी । इसलिये चाहे यह गवर्नमैटं आफ इण्डिया का कानुन है इसे तबदील करना चाहिए और अगर कोई मिल के दस मील के एरिया में क्रशर लगता है तो लगने देना चाहिए । उसे दोहरी मार नहीं पडनी चाहिए कि एक तरफ उसे पूरी कीमत उसके गन्ने की न दी जाए और दूसरी तरफ उसे अपना कोहलू लगाने से रोका जाए । मैं जगाधरी गई थी और वहां मुझे प्रोड्यूसर्ज ने कहा था कि उनकी

सब से बड़ी मुश्किल यह है कि कई बार उनका गन्ना कई दिनों तक वहां रखा रहता है और उनको गड्डे वापस लाने पड़ते हैं और उनको कीमत पूरी न देने की कोशिश की जाती है । अफसर जो हैं वह मिल मालिकों के घरों पर ठहरते हैं और किसानों की बात नहीं सुनते । एग्रीकल्चर के बारे में एक बात और कहना चाहती हूं । महेन्द्रगढ के पास बौंद में एक फार्म है । उस फार्म से ज्यादा मजाक करने वाला फार्म मैंने आज तक नहीं देखा । उस पर जो फट्टा लगा हुआ है उससे तो समझ सकते हैं कि कोई फार्म होगा लेकिन उस में कोई खास बात फर्म बाली नजर नही आती । किसान सव से अच्छा डिमांसट्रेशन से सीख सकता है लेकिन इस नाम की हूकोई बात उस में नहीं है । कहते हैंकि हमारे आबादी बढ़ गई है इसलिये जमीन की कमी हो गई है । मैं मानती हूं कि कमी .है लेकिन हमारी जमीन योरूप की जमीन से ज्यादा उपजाऊ है और वहां डैनसिटी आफ पापुलेशन भी जमीन पर हमारे से ज्यादा है । तो ऐसी कोई बात नहीं है । हमें सही मायनों में किसान को डिमासट्रेशन चाहिए थी लेकिन नहीं दी गई है । अगर किसान को माडल फार्मिंग के बारे में डिमांस्ट्रेशन से बताया जाए ऐसा करने से किसान उपज को और बढ़ा सकता है । यह ठीक है कि अब की दफा गन्ने को जो बीमारी लगी उसके लिये सरकार ने अपने खर्च पर सप्रे करवाया और दूसरी दवाइयां भेजीं और इसके लिये मैं सरकार की मशकूर हूं । फिर भी मैं चाहती हूं कि इस तरफ ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है । माडल फार्म बनाए गए हैं

लेकिन कम से कम जो मैने देखे हैं अपने जिला में उन माडल नाम की कोई चीज मुझे नजर नहीं आई । मैं चाहती हूं कि....

मुख्य मन्त्री : आपके दो जिले हैं कौन से की बात कर रही हैं? (हंसी)

श्रीमती चन्द्रावती : दोनों जिलों की । मैं चाहती हूं कि उनको देखा जाए और उनको माडल बनाया जाए । इसके साथ साथ कहना चाहती हूं कि मैने एक सवाल पूछा था लेकिन उसका मुझे कोई तसल्ली बख्श जवाब नहीं मिला है । मैने पूछा था कि पांच एकड़ तक जमीन बाले कितने किसान हैं और उससे कम वाले ।कितने हैं? उसका खेती करने पर कितना समय लगता है और बाकी समय में वह क्या करता है और किस तरह से वह रोजगार चलाता है क्योंकि खेती से ही तो उसका गुजारा नहीं चलता? उसके जवाव में मुझे किसानों की गिनती ही दी गई बाकी कुछ नहीं बताया गया कि बेरोजगार कितने किसान है' और खेती– हर मजदूर जो है उनको कितने समय तक मजदूरी का काम मिलता है । इन के बारे मे सरकार के पास अगर कोई फिग्गर्ज नहीं हैं तो यह बेकारी कैसे दूर करेंगे । बजट में इन बातों का कोई ध्यान नहीं रखा गया कि किस तरह रूरल एरियाज की बेरोजगारी को दूर करना है, छोटे किसान और मजदूर को काम देने के लिये सरकार कितने उपाय और उद्योग करेगी, किस तरह जमीन से प्रैशर कम करने के लिये लोगों को रोजगार देना चाहेगी वगैरा–वगैरा यह सारी' बातें आनी चाहिए थीं।

मै अकाल के बारे में कुछ कहना चाहती हूं । यह ठीक है कि रुपया दिया गया है, लोगों को काम दिया गया है कुओं और जोहड़ों के लिये पैसे दिए गये हैं लेकिन मैं कहना चाहती' हूं कि फाडर के लिये कोई इन्तजाम नहीं किया गया है । हिसार, महेन्द्रगढ, बाधडा, लोहारू और तोशाम के इलाकों मे अकाल रयादा पड़ा है । दूध देने वाले पशु–पालन का उनका धंधा है, बछड़े पाल कर बेचना और घी बेचना ही उनका ज्यादातर धंधा है और उस.से आमदनी होती है और धंधा उनका खत्म हो गया है । फाडर की इतनी कमी है कि लोगों ने झाडु तक काट कर पशुओं को खिला दिए हैं । फिनांस मिनिस्टर साहिबा यहां बैठी हैं मैंने उनको लोगों की दरख्वासते दी थीं कि लोगों को पता नहीं कि वह क्या करें और बताएं कि फाडर वहां ले जाने के लिये क्या क्या किया है । उन्होंने कहा कि पता नहीं कि किस तरह से यह इन्तजारय करना होगा । फाडर ले जाने का.... ?

वित्त मन्त्री : मैने ऐसा नहीं कहा आपने गल्त समझा । (विध्न)

श्रीमती चन्द्रावती : आपने ऐसा ही कहा था । मै' कहना चाहती हूं कि फाडर की अकाल की वजह से पशु मर रहे हैं उनका बचाना जरूरी है । मैं सरकार से कहना चाहती हूं कि फाडर का इन्तजाम बहुत जल्दी होना चाहिए । यह जो महीने आएंगे इनमें ज्यादा कमी होगी । अगर किसान का पशु. धन मर जाता है तो उसकी आधी मौत तो उसी वक्त हो जाती है ।

श्रीमती प्रसन्नी देवी : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर । स्पीकर साहिब, मै आपका रूलिंग चाहती हूं कि जो सदस्य बाहर से ही दस्तखत करके जाते रहे हैं और हाउस में हाजिर नहीं रहे क्या उनको हाजिर माना जाएगा और उनकी हाजिरी मानेंगे?

Mr. Speakar : That you have to me. That is ofr me to see.

श्रीमती चन्द्रावती : मैं अभी दो मिनट मे खत्म कर देती हूं । पानी की, मैं मानती हूं कि, बड़ी कमी है इस तरफ और ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है । एक बात में' एडमिनिस्ट्रेशन के बारे मे कहना चाहती हू । अब अप्रैल आने वाला है .और लोग ट्रांस्फर्ज के लिये हमारी जान खायेंगे । इसके अलावा कुछ अफसर जो लग गए हैं उन के बारे में कहा जाएगा कि ट्रास्फर करो । हम भी यही चाहेंगे कि गल्त किस्म के अफसरों के बारे में सोचना चाहिए लेकिन, स्पीकर साहिब, मै' आपके द्वारा सरकार से कहना चाहती हूं कि जो कृररप्ट अफसर हैं ट्रांस्फर उनका कोई इलाज नहीं है

श्री अध्यक्ष : इन ट्रांस्फर्ज की बातों में आपको नहीं पड़ना चाहिए ।

श्रीमती चन्द्रावती : हम नहीं पड़ना चाहते इसीलिये हम चाहते हैं कि ब्रूस काम के लिये या तो जिला के डी.सी. की जिम्मेदारी लगायें नीचे जो तहसीलदार, नायब–तहसीलदार और थानेदार वगैरा है' आम लोगों को उन तक ही सारा काम पड़ता है और उन्होंने लोगों की जान खा रखी है तो डी.सी. उनकी जिम्मेदारी

ले और उसकी होनी चाहिए । या फिर ऐस. पी. की पुलिस केबारे में जिम्मेदारी होनी चाहिए । मैंयह कहना चाहती हूं कि जो कुरप्ट अफसर हैं उसका ट्रांस्फर इलाज नहीं हूँ । जो रिश्वत लेता है अगर उन को इस बात का पता है तो ऐसे कर्मचारी को कम्पलसरीली रिटायर कर देना चाहिए । आम लोगों का काम इन नीचे के अफसरों तक ही पड़ता है । वहू डी.सी. के पास नहीं जा सकते, चंडीगढ़ तक पहुंचना तो उनके लिये मुश्किल बात है । इसलिये हम चाहते हैंकि ऐसे कुरपट अफसरों को रिटायर ही करदेना चाहिए ताकि लोगों की जान छूटे । डी.सी. जिला का पूरा मालिक होता है वह अगर जिम्मेदारी नहीं ओंर लेता है तो लोगों की तकलीफे' दूर नहीं हो सकतीं । मेरे कहने का मतलब यह है कि डी.सीज. के ऊपर यह जिम्मेदारी डाली जाए कि वह इस चीज को देखें । (विध्न) ठीक बात है पोलिटीशीयन्ज गलती करते कराते होंगे लेकिन मै कहना चाहती हूं कि सब से ज्यादा प्रिविलेजड क्लास सिविल सर्वेंट हैं जिनके लिये सिक्योरिटी आफ सर्विस है अगर वह अपनी जिम्मेदारी नहीं समझेंगे .तो जनता उनको माफ नहीं करेगी और हमें भी नहीं करेगी । एडमिनिस्ट्रेशन से कुरप्शन दूर करना सब से ज्यादा जरूरी है । आम लोगों को जो दु:ख है तकलीफें है वह इन नीचे के कुरप्ट कर्मचारियों की पैदा की हुई है' । मिसाल के तौर पर एक पटवारी की खराबी से खानदान तबाह हो जाते हैं । खेत किसी का है और वह गिरदावरी किसी के नाम कर देता है और इस वजह से ' हाई

कोर्ट तक केस चलते हैं । आपदेखे एक मामूली मुलाजिम की गल्ती से कई सारे परिवार खराब हो जाते हैं ।

श्रीमती लेखवती जैन (अम्बाला सिटी) : स्पीकर साहिब, आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे बोलने के लिये टाइम दिया, इसके लिये मैं आपका धन्यवाद करती हूं । बजट पर डिस्कशन हो रही है, मै समझती हूं कि बजट को बहुत ज्यादा कम्पलीमेट्स मिल गये हैं और साथ ही साथ हमारे फाईनेंस मिनिस्टर साहिबा को भी हाउस की तरफ से खास तौर पर कम्पलीमेंट्स दिये गये हैं । अगर आपोजीशन होती तो वह भी क्रिटिसाईज तो करती मगर शायद वह भी कुछ न कुछ कम्पलीमेंट्स देती । हमारे फाइनेंस मिनिस्टर एक लेडी है, जब फाईनेंस एक लेडी के हाथ मे आयेगा तो वह उसे अच्छी तरह से सोच–विचार कर ही खर्च करेगी । जिस घर मे औरत के हाथ फाइनेंस होता है, उस घर में बड़ी बरकत होती है....

सूबेदार प्रभु सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर । स्पीकर साहिब, मैं आपके जरिए बहन जी से कहना चाहता हूं कि वे सब मर्दों को नाकारा कह रही हैं, ऐसा न कहें ।

श्री अध्यक्ष : आपका प्वायंट आफ आर्डर रूल्ड आउट किया जाता है ।

श्रीमती लेखवती जैन : जनाब, स्पीकर साहिब, यह हमारी खुशकिस्मती है कि इस सारे हरियाणा का फाईनेंस आज हमारी

एक महिला के हाथ में है । इस बजट में बहुत सी चीजें ऐसी हैजिनका जनता को बहुत ज्यादा फायदा है जैसे शराब बन्दी और हिन्दी का सरकारी कार्यालयों मे जारी करना । लेकिन संयुक्त दल की सरकार ने ऐसे काम किये थे जिससे जनता को कोई फायदा नहीं था, दो काम तो बहुत ही खराब किये थे एक बढ़ों की पैन्शन को बन्द करना और दूसरे हरिजन लड़कों पर फीसे लगाना । इन दोनों खराबियों को दूर करने के लिये हमने जनता से वायदा किया था कि अगर हमारी सरकार बन गई तो अपनी गवर्नमैटं कौ जरूर इस चीज के लिये मनायेंगे कि सेन्शन जारी हो जाये और हरिजन बच्चों की फीसें माकु हो जाएं । चुनाचे हमारी गवर्नमेंट बनी और हमारे इन वायदों को पूरा किया । मैं गवर्नमेंट को इस बात के लिये मुबारिकबाद देती हूं कि उन्होंने हमारी बात को माना और आज हम अपने वोटरों के सामने अपना सर ऊंचा कर सकेंगे और यह कह सकेंगे कि जो हमने वायदे किये थे उनको अपनी गवर्नमेंट से पूरा करा दिया । इनके अलावा हमारी गवर्नमेंट ने और भी बहुत सी चीजे कीं लेकिन मै' उन चीजों को दोबारा दोहराना नहीं चाहती जो पहले ही हाउस में आ चुकी अतई और बहस हो चुकी है ।

इस बजट मे ऐसी स्कीमे रखी गई हैजिनके आधार पर हरियाणा दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करेगा । स्पीकर साहिब, हर मैम्बर यदु चाहता है कि वह अपनी कस्टिच्युएंस के लिये कुछ न कुछ कहे, मै भी अपनी कांस्टीच्युएंसी के साथ सरकार से यह जरूर

रिक्वैस्ट करूंगी कि जो हरियाणा के मुफाद की चीजें है, तरक्की की चीजें है उन पर जरूर गौर करें । स्पीकर साहिब, हम यह नहीं चाहते कि इन्कलाब लाओ, हम यह भी नहीं चाहते कि पिछले साल फलां मद पर दो लाख रुपया रखा था और अब इससे ज्यादा रख दो या पैन्शन लगा दो वगैरा वगैरा । मैतो चाहती हूं कि कोई नई चीज होनी चाहिए जिससे कि हम यह कह सकें कि हमने कोई ठोस काम किया है । ये बड़े बड़े डैम बनाने का कोई फायदा नहीं जबकि जनता के लिये लैटरिन का इन्तजाम नहीं है । मै 1933 का जिक्र करना चाहती हूं कि जबकि में पंजाब प्रान्त में कौंसिल मे एक मैम्बर की हैसियत से थी, उस वक्त मैंने एक बैगरी–बिल पेश किया था कि देश मे जगह जगह पररू मांगने वाले बैगर्ज का सुधार किया जाए । उस बिल को अगर मौजूदा गवर्नमेंट लाये तो बहुत अच्छा होगा लेकिन इस बिल को लाने में गवर्नमट का बहुत खर्चा होगा, बहुत पुलिस रखनी पडेगी । हरियाणा में बहुत तादाद मे लैपर्ज पाये जाते है' । आप बसों मे जायें, बाजारों मै जाये, सब जगह लैपर्ज मिलते है । इनको बहुत बुरा बीमारी लगी होती है, उनकी हालत को देखकर हमे उन पर रहम भी आता है और नाफरत भी पैदा होती है । भयानक बीमारी के कारण पाब्लिक भी नफरत करती है । हरियाणा में तो है ही लेकिन बातर से भी लैपर्ज आते हैं । मैं गवर्नमेंट से दरख्वास्त करूंगी कि जो बाहर से आने वाले लैपर्ज हैं उन के ऊपर पाबन्दी लगाने का बन्दोबस्त करे ।

श्री अध्यक्ष : जो बाहर से आयेंगे उनका रजिस्ट्रेशन करवा देंगे ।

श्रीमती लेखवती जैन : कुछ भी हो, बाहर से आने वाले लैपर्ज को रोका जाना चाहिए । मैगवर्नमैट से कहना चाहती हूं कि वह हर आदमी को इस लायक बना दे ताकि वे अपने हाथ से काम करके अपनी रोजी कमा कर खा सके । हमारे यहां कितने ही हिजड़े हैं जो कमा कर नहीं खाते । उनका काम यह है कि घरों में जाते है और नाचते है । इस तरह वे मांग कर खाते हैं । ये भी भिखारी बने हुए हैं । इसलिये हमारी गवर्नमेंट का ध्यान इन की तरफ जरूर जाना चाहिए, या तो इन्हें जमीन देनी चाहिए या कोई और दस्तकारी का काम सिखाएं । लैपर्ज भी और कई काम कर सकते हैं । हिजड़े गाने बजाने का काम जानते है, उनके हाथ भी मजबूत होते हैं इसलिये उनको गाने बजाने के महकमे मे लगा दें या उनको जमीन दे दें । इस तरह से इनका सुधार हो सकता है ।

स्पीकर साहिब, सरकार ने हरिजनों को कर्जा देने के लिये बज.रू में बहुत रुपया रखा है यह काम गवर्नमेंट ने बहुत अच्छा किया है । वाकई जब तक हम हरिजनों को ऊपर नहीं उठायेगे तब तक हमारे देश की तरक्की नहीं हो. सकती । यह उनकी बदकिस्मती है कि अब तक वे गरीब ही रहे । वे हमारी टट्टी साफ करते हैं, और दूसरी किस्म का गन्द उठाते हैं। एक चीज मैं जरूर कहूंगी वह यह है कि हरिजनों को जितना कर्जा दिया जाता हैं उसका 50 फीसदी वेस्ट जाता है, हरिजन उससे फायदा नहीं उठाते । किसी को पांच हजार रुपया कर्जा मिलता है, किसी को दो हजार मिलता

है लेकिन ये त्रोग इस रुपये को कभी अपने लड़के की शादी करने में खर्च कर देते है' और कभी जेवर वगैरा बनवा लेते है । अगर कोई ज्यादा अकल वाला हो तो मकान बनवा लेता है । जब यह रुपया खर्च हो जाता है और कर्जा सूद समेत अदा करना पड़ता है तो इन्हें तकलीफ होती है । मेरें पास कई लोग ऐसे आते हैं जो बाद में चीखते हैं । इसलिये कर्जा देने का तरीका सुधारा जाये, अगर इनको 50 लाख रुपया कर्जा देना है तो दे दो, तेकिन इसे तरह से दो जिससे उसका सही इस्तेमाल हो । चौधरी जगदीश चन्द्र ने सुझाव दिया था कि गांवों में ऐसे कारखाने लगाने चाहिये जिनमें महज हरिजन ही काम करे । उन कारखानों में हरिजनों के शेयर रखें और उन्हीं को नौकर रखें । हस तरह से जो कर्जा हरिजनों को दिया जाता है उसका सही युटिलाइजेशन हो सकता है ।

श्री अध्यक्ष : आपका टाइम हो गया है ।

4.00 P.M.

श्रीमती लेखवती जैन : अभी खत्म करती हूं जी । मै एक बात और कहना चाहती हूं, गवर्नमेंट ने नशा–बन्दी करने के लिये जो कदम उठाने का निश्चय किया है, इसके लिये मैं सरकार का शुक्रिया अदा करती हूं । लेकिन कई लोग कहते है कि इसे आहिस्ता आहिस्ता बन्द करना चाहिए अगर एकदम बन्द करेंगे तो हमें कुछ घाटा हो जायेगा । मगर उसके मुकाबिले में जो हमारा देश बरबाद हो रहा हूँ इनको उसके बारे में भी सोचना चाहिए । जिस

वक्त हमने देश को आजाद कराया था उस वक्त हमारा सबसे बड़ा नारा यही था कि हम शराब–बन्दी करेंगे । नस वक्त सबसे बड़ा काम हमारा शराब की दुकानों पर पिकटिंग करना होता था । तो, जनाब, आज समझ में नहीं आता' है कि हम इस बात का लालच क्यों करते है कि इससे हमें इतने रुपये की आमदनी होती है । ऐसी आमदनी को, स्पीकर साहिब, हमें छोड़ ही देना चाहिए क्योंकि इससे किसी का भला होने वाला नहीं है । हमें शराब की दुकानें बन्द कर देनी चाहिएं क्योंकि स्पीकर साहिब, आपको मालूम है कि देहात के अन्दर आज किस कदर शराब चल रही है, किस तरह लोगों के घर बरबाद होते हैं और उनकी औरतों की हालत क्या होती है जव उनके आदमी शराब पीकर घरों में घुसते हैं । आज इतना रुपया खर्च करने के बाद भी क्यों उन्नति नहीं हो रही है, इसका कारण, स्पीकर साहिब, शराब ही है । अगर आज शराब बन्द हो जाए, तो मै कहती हूं कि जितना पैसा आज खर्च हो रहा सै उसका एक चौथाई खर्च होने पर भी देहात काफी उन्नति कर सकते है, लोग मालोमाल हो जाएंगे और आज जो गरीबी हे वह एक दम दूर हो जाएगी । इसके बारे मे, स्पीकर साहिब, और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है लेकिन मे ज्यादा वक्त न लेती हुई उम्मीद करती हूं कि हमारी फाईनेन्स मिनिस्टर साहिवा मेरी इस बात की ओर ही विशेष ध्यान देंगी ।

स्पीकर साहिद, आज आपोजीशन वारे, जिन्होने कुछ दिन पहले हरियाणा में हकूमत भी की थी, यहां नहीं हैं । यदि वे यहां होते

तो मैं उस दौरान उन द्वारा किए गए कामों की ओर उनका ध्यान दिलाती मगर चूंकि वे यहां हैं नहीं इसलिये मैं ज्यादा न कहती हुई उनके एक काम का हाउस के सामने जिक्र करती हूं । उन्होंने कुछ स्कूल अप–ग्रेड किए थे, मगर, जनाब, अपग्रेड करते समय वे यह देखते थे कि जहां से कांग्रेसी उम्मीदवार कामयाब होकर आया है उसके हल्के का कोई स्कुल अपग्रेड नहींकिया जाए । मेरे हल्के में भी खुड्डा नाम का एक स्कूल है । वहां के जैलदार ने स्कूल की इस कदर अच्छी बिल्डिग बनाई है कि शायद ही वैसी किसी हाई स्कूल की भी हो । मैने उन लोगों की उस वक्त बड़ी खुशामद की कि खुड्डा को मिडल स्कूल बना दो, मगर उन्हेंने नहीं बनाया । तो मेरी अब अपनी सरकार से रिक्वैस्ट है, खान साहिब भी मेरे से सहमत होंगे कि वह स्कूल अब जरूर अपग्रेड होना चाहिए ।

Khan Abdul Ghaffar Khan : Mr. Speaker, I want to tell the hon. Deputy Speaker, through you, that the said school has already been upgraded to middle standard for the last four months.

श्री अध्यक्ष : आपके दो–तीन मिनट तो हो चुके ।

श्रीमती लेखवती जैन : स्पीकर साहिब, चार रोज पहले वे लोग मेरे पास आए थे क्योंकि वे लोग मेरे से बड़ा स्नेह रखते हैं । कहा तो उन्होंने भी मुझसे यही था कि वह स्कूल अपग्रेड होचुका हैलेकिन वह अभी तक फाइनल शक्ल में नही आया है इसलिये मैने इस चीज का जिक्र किया । अगर हो गया है, जैसा खान साहिब ने

कहा, तब तो अच्छी बात है, मगर यदि न हुआ हो तो वह हो जाना चाहिए ऐसी मेरी सरकार से आपके द्वारा दरख्वास्त है ।

श्री अध्यक्ष : आपका बहिन जी, टाइम हो गया है । आपने पांच मिनट फालतू ले लिये हैं । अब मै आपको केवल एक मिनट. और दूंगा ।

श्रीमती लेखवती जैन : जनाब, अभी तो मेरे हल्के की कोई बात हुई नहीं । कृपा करके मुझे पांच मिनट और दे. दीजिए ।

Mr. Speaker : All right I give you one minute more.

श्रीमती लेखवती जैन : स्पीकर साहिब, अभी कहने को तो बहुत कुछ था मगर चूंकि टाइम थोड़ा है इसलिये मैंडिटेल में न कहती हुई कुछ प्वायंट्स ही अर्ज कर देती. हूं और सरकार से, खास तौर पर, फाइनैन्स मिनिस्टर साहिबा, से रिक्वैस्ट करती हूं कि वे इन्हें नोट कर लें । स्पीकर साहिब, अम्बाला जिले से, सेल्ज टैक्स और एक्साइज टैक्स आदि से सरकार को सबसे ज्यादा आमदनी होती है । किसी और जिले से इनको इतनी आमदनी नहीं होती । मगर मै सरकार से पूछना चाहती हूं कि इसके बावजुद भी वे अम्बाला जिले के लिये क्या कर रहे हैं? आप देखिए, गवर्नर एड्रैस में, जिसमें यह कहा जाता है कि आगे को क्या किया जाएगा, अम्बाला के लिये किसी चीज का जिक्र नहीं किया गया है । फिर यहां बजट भी आया, मगर उसमें भी अम्बाला जिले के लिये कोई एनकरेजिंग चीज नही है जिससे हमें उत्साह हो । इसलिये,

मैंचाहती हूं कि अपनी गवर्नमेंट से कि वह कम से कम अम्बाला जिते में एक गवर्नमेटं कालेज तो खोल दें । पीछे जैसे, स्पीकर साहिब, सुना जाता था कि हरियाणा में एक मैडिकल कालेज खोला जाएगा । उस वक्त मैने कहा था कि यह मैडिकल कालेज अम्बाला के अन्दर खोला जाए, मगर उसका भी कुछ नहीं हुआ । स्पीकर साहिब, शुरू से ही अम्वाला की कुछ बदकिस्मती रही है, पता नही क्या बात है । जिस वक्त ज्वायंट पंजाब होता था उस वक्त भी अगर कभी हरियाणा साइड से मिनिस्टर लिया गया तो रोहतक का लिया गया । आज रोहतक के अन्दर चार कात्रेज हैं ।

चौधरी जगदीश चन्द्र : स्पीकर साहिब, मैं बीबी जी की जानकारी के लिये थोड़ा सा पढ़कर सुनाना चाहता हूं । यहां लिखा है कि अम्बाला के सूअर फार्म को बढ़ाया जाएगा और सूअर खाने के विकास के लिये दो नए व्त्राकों की स्थापना की जाएगी । वर्ष 1969– 70 के दौरान तीन मुर्गी पालन केन्द्र शी स्थापित किए जाएंगे ।

श्रीमती लेखवती जैन : स्पीकर साहिब, चौधरी जगदीश जी का मैं बहुत बहुत शुक्रिया अदा करती हूं क्योंकि उन्होंने यह बता कर कि अम्बाला के लिये क्या कुछ हो रहा है बड़ी मेहरबानी की है । मगर, खैर, स्पीकर साहिब, आज लोग तो गांव में पीने के पानी के लिये रोते है' परन्तु यहां अभी तक अम्बाला शहर भी ऐसा है जहां पीने का पानी नहीं है । आप देखिए 22 सात हो गए आजादी को मिले हुए मगर पीछे जब मैं वोट मांगने के लिये बलदेवनगर कैम्प

गई तो एक मांग लोगों की मेरे सामने आई कि हम कुछ नहीं चाहते यदि हमें पीने का पानी मिल जाए । बताइए, अगर इस वक्त भी अम्बाला के अन्दर पानी न हो तो कितने अफसोस की बात है । स्पीकर साहिब, जिस लिये से सरकार को सबसे ज्यादा टैक्स मिलता हो, उसका यह हाल है ।

श्रीमती लेखवती जैन : जनाब, एक मिनट और मेरे कहने से दे दें । स्पीकर साहिब, गवर्नमेंट का अब एक ट्रांसफार्मर का कारखाना लगाने का ख्याल है । तो मैं रिक्वैस्ट करूंगी कि इस कारखाने को तो कम से कम अम्बाला में लगा दिया जाए । इसके अलावा, वहां पानी, सड़क और कालेज के लिये जरूर गवर्नमेंट का ध्यान जाना चाहिए । सिवरेज सिस्टम जो अम्बाला के अन्दर शुरू किया गया है उसके लिये, स्पीकर साहिब, मैं सरकार का शुक्रिया अदा करती हूं और उम्मीद करती हूं कि जो जो चीजें मैंने अब अर्ज की है उन्हे भी हमारी यह सरकार अम्बाला के अन्दर जल्दी से जल्दी करने की कोशिश करेगी ।

चौधरी राम प्रकाश : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर । स्पीकर साहिब, मैइस बात पर आपका डिसिजन चाहता हूं कि जो मैम्बर साहिबान इस हाउस के अन्दर नहीं आए और बाहर से ही दस्तखत करके चले गए वे हाजिर होंगे या गैर–हाजिर?

श्री अध्यक्ष : इस तरह का सवाल पहले भी पूछ लिया गया है । आपका इस से कोई ताल्लुक नहीं ।

सूबेदार प्रभु सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर । स्पीकर साहिब, हिजड़ों के बारे में एक नई बात यहां आई है । तो मैं जानना चाहता हूं कि क्या एक हिजडा कमेटी नौमिनेट की जाएगी क्योंकि कि उससे उनका बड़ा भला होगा?

Mr. Speaker : If you again raise a wrong point of Order, I shall name you. Let us keep our standards of debate high. Let us maintair the decorum of the House. lain rather sorry to hear it. Subedar Parbhu Singh should rather withdraw these words.

सूबेदार प्रभु सिंह : माफ करना, जनाब ।

खान अब्दुल गफ्फार खां (नग्गल) : जनाब, मोहतरिम स्पीकर साहिब, आपकी इजाजत से में कुछ अर्ज करना चाहता हूं अपनी मिनिस्ट्री के सामने, अपनी गवर्नमेंट के सामने ।

(उपाध्यक्षा विराजमान हुई)

डिप्टी स्पीकर साहिबा, यहां बजट पेश हुआ, बड़ी तारीफें हुई, बड़ी मुकारिकबाद दी गई । मुझके तो अपनी फाइनेन्स मिनिस्टर साहिबा की खिदमत में उनकी बेहतरीन तकरीर के लिये दिली मुबारिकबाद पेश करनी है । निहायत अच्छी तकरीर थी और उसके लिये अब फिर उनको मुबारिकबाद पेश करता हूं । मैं कभी क्रिकट खेला करता था । उस वक्त यह कहा करते थे कि यदि कोई प्लेयर बगैर इस बात के देखे कि किधर को हिट लगानी है, आया– कट करना है या लैग की तरफ हिट लगाना है या स्लिप करना है, खेले तो उसे आल– राऊडर कहा जाता था । मुझे भी आल राउंडर कहते

थे । हमारे वजीरे खजाना भी आल राउंडर वजीरे खजाना से सब बातें हुई इधर उधर की, ये सब ठीक है । डिप्टी स्पीकर साहिवा, अगर मुझे कोई बात अपनी करनी होगी, तो मैं अपनी तारीफ बहुत ज्यादा कर दूंगा' हालांकि मुझ में तारीक की कोई बात न हो । बजट में आपने जो कुछ लिखा है वह बहुत कुछ है लेकिन उस शख्स को क्या हालत होगी अगर मुल्क में बहुत ज्यादा गल्ला पैदा हो, मुल्क मे बहुत ज्यादा पैदावार हो लेकिन एक शख्स को खाने को रोटी तक न मिलती हो, तो उस गल्ले के पैदा होने का उस गरीब को क्या फायदा? उस गरीब को तो रोटी तक नहीं मिलती हो और यहां कहा जाय कि गल्ला बहुत पैदा हुआ । आप बेशक कहते रहे कि मुल्क में वड़ा गल्ला पैदा हुआ है लेकिन जब तक उसके पेट की ज्वाला नहीं मिटेगी तब तक उसके लिए तो बहुत जबर्दस्त कहत है । उसके लिये तो देश में कुछ भी पैदा नहीं हुआ । मै तो अपनी कांस्टीच्यून्सी के मुताल्लिक, अपने जिले के मुताल्लिक मजबूर हो कर कुछ कहने लगा हूं । अभी यहां पर मजाक पैदा करने के लिये और तन्जन, जब डिप्टी स्पीकर साहिबा बोल रही थीं कहा गया कि फाइनेन्स मिनिस्टर साहिबा की स्पीच उठा कर देख लें कि वहां पर पिगरी के दो नये ब्लाक खोले जायेंगे । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जिन्होंने इस बात को प्वायंट आउट किया है, गवर्नमेंट के लिये इससे ज्यादा अफसोस की बात नहीं हो सकती । मैने तो अम्बाला जिले के लिये असैम्बली के पिछले सैशन में भी कहा था कि खुदा के वास्ते अम्बाला जिले पर रहम करो और हमारे जिले को बफर डिस्ट्रिक्ट या बफर स्टेट बना

दो । हम चाहे भूखे रहें, चाहे नंगे रहे, जिस तरह से भी रहे । जो .कुछ हमारे पास होगा, उसको तो हम अगने पर खर्च कर लेंगे कुछ तो हमें मिलेगा और कुछ हम अपने लिये कोशिश करेंगे । लेकिन बजट में दिखाया जाता है और यह कोशिश दिखायी जाती है कि पिगरी फार्म खोल रहे हैं । इस पर सरकार फख करती है । अम्बाला जिले के हिस्से में कोई दूसरी चीज ही नहीं आयी । उसके हिस्से में पिगरी फार्म आया । यह इनके लिने नाज की बात है, इस पर ये फख करते हैं । यह सब मजाक उड़ाने के लिये, तमस्खर उड़ाने के लिये किया गया है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस बजट को पढ़ कर मुझे बड़ा अफसोस हुअ। । मेरे तो दिल में पहले ही दु:ख था, क्योंकि पहले हमारे पर मुसीबत मुस्तरका पंजाब की थी और अब यह हरियाणा हमें खाये जा रहा है । जब से हरियाणा बना है हम को खाये जा रहा है ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप मुलाहजा फरमायें, विजली, पानी, सड़कों का महकमा हरिशणा के लोगों के पास शुरू से रहा है । अंग्रेजों के जमाने से ये मिनिस्टर चले आ रहे हैं । इन से पूछा जाये कि हमारे जिते के साथ इन लोगों ने क्या सलूक किया है? कुछ दिनों पहले मैं 'चौधरी रणबीर सिंह जो के साथ' उनके इलाके में जा रहा था तो वहां देखता हूं तमाम जगह .बिजली ही बिजली है, सड़कें ही सड़कें है, जिधर देखता हूं ट्यूबवैल ही ट्यूबवैल लगे हुए हैं । मैंने' कहा चौधरी रणबीर सिंह जी, मेरा जी करता है कि आपकी गर्दन पकड़ लूं और आपका गला घोंट दूं ।

इसलिये कि आपने हमारे जिले के साथ जुल्म किया है कोई भी चीज आप लोगों ने हमारे जिले को नहीं दी (हंसी)

उपाध्यक्षा : चौधरी रणबीर सिंह जी आप खा साहिब से जरा दूर बैठिए कभी कोई वाक्या न हो जाये । (हंसी)

खान अब्दुल गफ्फार खां : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आप शुख्से देख लीजिए इलैक्ट्रीसिटी, पानी–नहर और रोड्ज एन्ड बिल्डिग के डिपार्टमेंट के मिनिस्टर ये हरियाणा के रहे हैं । कभी चौधरी रणबीर सिंह जी रहे कभी चौधरी रिजक राम जी रहे और उनके पहले चौधरी लहरी सिंह जो रहे और कुछ समय राव बीरेन्द्र सिंह जी रहे । ये जितने के जितने हैं सब हरियाणा के रहे । इन्होंने इतनी खुदगर्जी दिखलायी कि सारे का सारा जो कुछ भी किया अपने इलाके के लिये किया । मै चौधरी रणबीर सिंह जी के गांव गया. सांघी, वहां देखता हूं तो वहां गांव तक सड़क बनी हुई है । इधर चौधरी रिजक राम जी– का गांव बडखालसा है वह जी.टी. रोड से कोई आधा गिल के फासले पर है वहां पर भी सड़क बनी हुई है । लेकिन हमारे इलाके मे कोई इस तरह की सड़कें वगैरह नहीं हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपके जरिये वजीरे खजाना से यह कहना चाहता हूं कि उन्होंने हमारे साथ बिल्कुल बे–इंन्साफ किया है । हमको कुछ भी नहीं दिया है । हमारे से कहा जाता है कि वहां यह लगेगा, वह लगेगा । ये सब वायदे झूठे हैं । जैसा कि कहा गया है कि. ''वह वायदा ही क्या जो वफा हो गया '' मैं बरहना चाहता हूं कि अम्बाला को हर तरह से इग्नोर किया गया है

। मैं एक बात आपको और बतला देना चाहता हूं कि यहां हरियाणा में बड़े बड़े आदमी हैं, बड़े मजबूत आदमी है' । हरियाणा के जिले भी बड़े मजबूत और बलवान हैलेकिन अगर किसी पहलवान की एक उंगली कमजोर हो या एक हाथ कमजोर हो जाये तो उसके तमाम जिस्म को वह तक– लीफ दैती है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर हमारा जिला कमजोर होगा तो हरियाणा के और जिले भी मजबूत नहीं हो सकते', बत्रवान नहीं हो सकते । इसलिये वजीरे खजाना को यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि सब को ताकतवर और बलवान बनाये ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने जब यह बात सुनी कि आपको क्या कुछ नहीं दिया तो मुझे बडा अफसोस हुआ । हमें दिया है पिगरी के दो नये ब्लाक ।

चौधरी रणबीर सिंह : आपको चण्डीगढ दिया है ।

खान अब्दुल गफ्फार खां : हमें चण्डीगढ़ का क्या मिला है, वह भी तुम्हे ही मिला है ।

चौधरी हरकिशन लाल कम्बोज : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी विनती यह है कि मैंम्बर साहिबान को एक दूसरे को एड्रेस नहीं करना चाहिए, बल्कि चेयर को करना चाहिए ।

Deputy Speaker : This is my duty.

खान अब्दुल गफ्फार खां : आनरेबल मैम्बर को ये मालूम होना चाहिए कि जब किसी । मैम्बर की तरफ से कोई बात बोलने वाले को कही जाए तो वह बराहे रास्ते जवाब भी दे सकता हूं । यह शायद नए आए हैं इसलिये इनको मालूम नहीं है । जनाब, मेरे जिला में न सड़क है, नबिजली है और मेरी कांस्टीच्यूएंसी में तो कतअन नही है । मैं चौलेंज करताहै कियह बताए कि आया मेरी कांस्टीच्युएसी में कौनसी. बिजली, कौनसी सड़क और कौनसा ट्यूबवैल्ज इन्होने दे दिए ।

उपाध्यक्षा : आपके जिला से खान साहिब नहर जाती है मगर पानी नहीं मिलता ।

खान अब्दुल गफ्फार खां : जी हां, एक नहीं तीन तीन, मसलन सरहद कैनाल, वैस्टर्न जमुना कैनाल, भाखड़ा–नरवाना ब्रांच यह तीनों नहरें उस जिले से गुजरती हैं मगर डिप्टी स्पीकर साहिबा क्या यह अफसोस नहीं है कि कोई भूखा हो और उसके सामने रोटी हो और फिर उसे खाने न दी जाए । जब कि चौधरी रणबीर सिंह की तरह दोनों हाथों से– खा रहा हो और अब्दुल गफ्फार खां जैसा ऐसी हालत में रख छोड़ा हो कि जिस के पेट में ज्वाला हो और फिर रोटी भी नसीब न हो । मैं तो यह चाहताहूं कि दूसरी को सबकुछ मिले । कह रसोबसो तरक्की करो लेकिन खुदा के वास्ते कोई मौका हमें भी दो । हार तुम्हारे रास्ते में रुकावट नहीं बनते लेकिन तुम हमारे रास्ते में रुकावट क्यों डालते हो? (घंटी) जनाव, यह ठीक हूँ कि आपकी घंटी बजने लगी । मगर

मैंने स्पीकर साहिब' से इजाजत ले ली थी कि मैं बूढा आदमी हूं इसलिये टाइम ज्यादा लगेगा । कुछ एजीटेशन की वजह से कुछ घबरा सा गया हूं । चन्द बातें तो ऐसी हैं जनाब डिप्टी स्पीकर साहिबा, जौ जनरल हैं' सारे सन्ने के लिये । सूबा क्या कहूं इस सूबी के लिये मसलन उस्तादों का मामला है, हएइ(एर्जेनें ॅ का मामला है, ट्यूबवेल्ज का मामला है, फ्लड्ज का मामला है, इलैक्ट्रसिटी का मामला है, ड्रेन्ज वाटर का मामला है और एडमिनिस्ट्रेशन का मामला है । यह दीगर वात है कि कहीं कम. प्राब्लम हें और कहीं ज्यादा है । मेरे जिले में तो सबसे ज्यादा समस्या है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मजहबी तौर पर हमारे यहां उस्ताद का सबसें बड़ा दर्जा है । और तीन किस्म के बाप होते है, एक वह जो पुश्ती होता है और दूसरा वह जो बेटी देता है और तीसरा बाप वह जो इल्म' देता नुँर लेकिन जो इल्म सिखाने वाला होता है वह दोनों बापों से बेहतर हूँ । उस्तादों की कीमत आप भी जानते हैं और यह भी जानते हैं । यहां बैठे हुए मिनिस्टर साहिबान भी जानते है' लेकिन कितनी कदर उस्तादों की होती है । मुझे अफसोस होता है यह कहते हुए कि उस्ताद इतना मासूम है कि उसका कोई दर्जा नहीं है । एक पुलिस का कांस्टेबल भी होता है उसका भी कोई दर्जा है और वह उस्ताद से ज्यादा है यहां तक कि किसी हेडमास्टर से भी ज्यादा है । मगर उस्ताद की बदनसीबी है कि उसका कोई स्टेट्स नहीं । इसलिये मेरी बाप से दरखास्त है कि उस्ताद के स्टेटस को हटाया जाए । उनके लिये इज्जत और सम्मान लोगों के दिल में पैदा करने की कोशिश की जाए ।

अब रह गया हरिजनों का मामला । तो मैं हरिजनों की बाबत कहना चाहता हुं । तमाम हिन्दुस्तान के हरिजन भाइयों कौ कहना चाहता हूं कि अगर आप मांग मांग कर कोई– चीज लेना चाहते हैं तो तुमको नहीं मिलेगी । अगर तुम्हारी आवाज में ताकत है तो तुम्हारा हक तुमको बुला के दिया जाएगा । हाथ बांध कर दे दिया जाएगा । इसलिए आप अपने

में ताकत पैदा कीजिए । आज आप गांवों में जाकर देखें, डिप्टी स्पीकर साहिबा, तो पता. चले– गा कि उनकी पोजीशन क्या है । उनसे पूछिए कि उन के साथ क्या गुजरती है । क्या इसी का नाम तरक्की है और खिदमत है कि दो लडको को वजीफा दे दिया और दो लड़कों की फीस माफ कर दी? मैं बतला देना चाहता हूं कि जब तक आप उनको इकानामीकली मजबूत नहीं करेंगे तब तक उनका कोई स्टेटस नहीं होगा ।

अब मैं सड़कों की बावत अपनी कांस्टीच्यूएंसी के मुताल्लिक कुछ अर्ज करना चाहता हूं । जनाब, लतीफा यह है कि जब हमने

विजली के लिये सरकार को कहा और अर्ज की तो पी. डब्ल्यू. डी. के इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट से मेरे पास खबर आई कि हुमने दुखेडी से मुठेडीशेखां तक और मुठेडीशेखां से लेकर मडौड तक सड़क बना दी है । लेकिन मै' यह भी चौलेंज करता हूं कि अगर यह पी.डब्ल्यू.डी. ने बनाई हो । बड़ी मुश्किल से डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से खुशामद करके वह सड़क बनवाई गई । और दूसरी सड़क भी जो बनी वह भी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के जरिए । फिर यह कहते हैं कि हमने तीन मील मडौड से आगे बना दी है । मै उसको भी चौलेंज करता हूं कि अगर वह पी.डब्ल्यू डी. ने बनाई हो । डिप्टी स्पीकर साहिबा मिलिटरी वालों ने एयरोड्रोम बनाया तो एक सड़क उन्होंने बना दी । जो तीन–चार मील का फासला रहता है उसके लिये मेरे रोने पीटने पर इन्हें रहम आ गया कि अब बन जाएगा । बाकी कोई सड़क इन्हेंने नहीं बनाई और न ही कोई लिंक रोड ही बनाई गई । (घंटी) जनाब, मुहतरिमा डिप्टी स्पीकर साहिबा, मुझे खुद ख्याल है आपकी घंटी का । मैं एक बात कह के खुद ही बैठ जाऊंगा । आपको हाथ उठाने की भी तकलीफ न होगी । फलड्ज आते हैं । ठीक है करनाल का और जगह का रोना रो लो मगर मेरे यहां कलेरा गांव सालिम का सालिम फलड्ज की बजह से तवाह हो गया । और पूछो इनसे क्या दे दिया टून्होंने कौन सी मदद दे दी? इन्हे अम्बाला के साथ इतनी दुश्मनी है ।

उपाध्यक्षा. वह जो बंध लगा रहे थे, वह भी नहीं लगा रहे ।

खान अब्दुल गफ्फार खां रू जनाबे आला, यह बंध क्या लगाएंगे यह तो हम पर बंध लगा देंगे । क्या क्या कहूं । इलैक्ट्रिसिटी के बारे में पूछ लीजिए कि कहां कहा दी । अफसरान से पूछ लीजिए । और नहर वालों से पूछ लीजिए कि कहां कहा पानी दिया । हमारे यहां पीने का पानी भी इतना गहरा है कि जिसकी कोई हद नहीं । जमीदार ट्यूबवैल्ज लगा भी लेता है तो उसे बिजली नहीं देते । वह बेचारा क्या करे । और बहुत से लोग तैयार हैं कि ट्यूबवैल्ज लगाएं लेकिन जैसा कि मैंने बतलाया कि पानी वहुत गहरा है और जमीदार की कपैसिटी नहीं है कि वह ट्यृबवैल्ज लगा सके । जनाब, मेरी कांस्टीच्युएंसी बताना में ऐसे गांव हैं जहां तमाम कुओं का पानी कडुवा हो जाता है, उनके पानी में न सब्जी गल्ती है है न दाल गलती है । दूर जा कर एक अच्छा कुआं था लेकिन अब वह भी खराब होने लग गया है । करबला में तो आप जानते हैं कि पानी न मिलने की वजह से शहीद हो गए थे, ताजिए निकलते हैं आप ने देखें होंगे, लेकिन आप ने हमें भी वैसा ही बना रखा है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, कितना ही बेहतरीन से बेहतरीन बजट बना लें, जिन हाथों से वह बजट का रुपया खर्च होना हे अगर वह हाथ निकम्मे, गंदे और नापाक हैं तो उस बजट से लोगों को फायदा नहीं हो सकता ।

उपाध्याक्षा हाथ तो बहुत अच्छे है आप यह शब्द न इस्तेमाल करे ।

खान अब्दुल गश्फार खां मैन किसी का. नाम नहीं लिया । आज तो डिप्टी स्पीकर साहिबा इनहियरेट पावर है, हम सब कुछ कह सकते हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा, जेल मैनुअल जो बना हुआ है उसमें यह लिखा हुआ है इतना आटा दिया जाएगा और इतनी फलां चीज दी जाएगी, अगर सुप्रिटेंडेंट या उस का डिप्टी कैदियों के साथ हमदर्दी रखता हो तो उस का स्टिंग मालुम नहीं होता लेकिन अगर वह दोनों के दोनों जालिम हों तो वह जेल मैनुअल मुसीबत वन जाता है । इसलिये खुदा के वास्ते उन को भी ठीक कर लीजिए ।

चौधरी सरुप सिंह (मुंढाल खुर्द) रू डिप्टी स्पीकर साहिबा, बजट पर काफी बहस हो चुकी है और आम बजट पर बहस का आखरी दिन है । आपने अपनी स्पीच में फर्माया है कि आप इन्कलाब लाना चहती हैं और हमारी बहन ओम प्रभा जैन जी ने कहा कि हमने इन्कलाब ला दिया है । इस वजट की मार्फत । मैंने भी सारा बजट देखा है और स्पीचिज सुनी हैं ।

इस से ज्यादा और खुशी की क्या बात हो सकती हूँ कि हरियाणा में यह पहल भी हमारी बहनों को ही नसीब ई है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आज मैने अखबार में एक सुरखी पढ़ी कि हमारी सारी आपोजीशन जो आज यहां नहीं है और जिस का हमें बेहद अफसोस है उन्होने इस सैशन का परमानैटली बाईकाट कर दिया

। भुझे समझ नहीं आई कि आज सैशन के आखरी दिन इस का पर्मानेटली बाईकाट करने का क्या मतलब है? कहीं उन्होंने ने पांच साल के लिये तो नहीं बाईकाट कर दिया । डिंप्टी स्पीकररू साहिबा, बजट में वैसे तो बहुत सी अच्छी बातें है । खास तौर से जो लो पेड इमग्लाइज हैं उन का बहुत देर से शोर था और बात भी ठीक थी, तन्खाह बहुत कम थो, महगाई बहुत बढ़ गई है । इस बजट में जो इनका मुतालबा मंजूर कर लिया गया है यह बहुत अच्छी बात है क्योंकि सरकारी कर्मचारियों को जब तक तसल्लबिख्श तन्खाह न मिले तब तुक वह काम करने के काबिल नहीं रहते । अगर उन का पेट न भरे तो उनको कोई और रास्ता निकालना पड़ता है । इसके अलावा वहुत से स्कूल खोले गए हैं, सड़कें वनाई गई है' बिजली पहुंचाई गर्व है और ट्यूबवैल लगाए गए हैं, यह सारे तरक्की के काम है और इस वजट के अन्दर शामिल है' । इसलिये हम इसको एक डिवैल्पमैंट का बजट कहू सकते है' । लेकिन मैं यह बात जरूर अर्ज करूंगा कि बहन जी ने जब यह बजट बनाया था तो उस वक्त कम से कम यह जरूर देखना था कि हरियाणा के रक्बे और आबादी की कैसी हालत है । हरियाणा का रकबा आते के करीब ऐसा है जो कि फलड्ज से खराब रहता है और कुछ ऐसा इलाका है जो बिलकुल है जहां पानी पीने के लिये भी नहीं मिलता और कुछ थोड़ा– सा रकबा ऐसा भी हूँ जहां से पानी आता है और बह बह कर नीचे चला जाता है । इन बातों का ध्यान रखना चाहिए था ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, जैसा कि आप जानते हैं कि हरियाणा में बड़े बड़े शहर नहीं हैं, यह तो छोटे छोटे शहरों का एक नया सूबा हूँ और आम तौर पर एक देहाती सूबा है । यहां के लोग ज्यादातर जमीन पर गुजारा करते है और जैसा आप ने कहा कि आप एग्रीकल्चर के मैदान में भी इन्कलाब पैदा करना चाहते हैं यह वहुत काबले तारीफ बात है । मैं इस के लिये आप को मुबारिकवाद देता हूं क्योंकि बगैर एग्रीकल्चर में तरक्की किए और वगैर किसान की हालत को बदले ये छोटा सा सूबा आगे नहीं बढ़ सकता । यहां का किसान एक छोटा किसान है और यहां बहुत बड़े व्यापारी भी नही रहते । यहां का दुकानदार भी एक छोटा दुकानदार है, 'तो इन के बहुत बड़े' बड़े मसले है' । जब हरियाणा पंजाव का हिस्सा था तो उस वक्त हम कहते थे कि हरियाणा एक बैकवर्ड एरिया है और आज हरियाणा जब अलहदा स्टेट की शक्ल में है तो मित्तल साहिब ने फर्माया कि उनका इलाका बैकवर्ड है, कल को जब मुख्य मंवी साहिब जवाब देंगे तो शायद वह भी कह दें कि वह बैकवर्ड हैं । तो मुझे समझ नहीं आती कि अगर चीफ मिनिस्टर और कांग्रेस प्रैजीडेट ही बैकवर्ड हों तो फिर फारवर्ड कौन होगा । जब ज्वायंट पंजाब था तो उस वक्त तो बैकवर्ड होने की बात मानी जा सकती थी लेकिन अब जब हरियाणा की अलहदा स्टेट बन गई है तो इस तरह की बात अच्छी नहीं लगती । हमें चाहिए कि सारे हरियाणा की तरक्की की स्कीमें बनाएं ताकि हरियाणा की एक छोटी सी स्टेट नमूना की स्टेट दिखाई दे ।

मैं वजीर खजाना साहिबा का ध्यान खास तौर पर इस बात की तरफ दिलाना चाहता हूं कि आपने जमींदारों के लिये ट्रै.क्टर्ज कर्ज और बीज खाद वगैरह का बंदोबस्त किया है और यह बहुत अच्छी बात की है लेकिन आप देखें कि अगर उस किसान को जो स्टेट की रीढ़ की हड्डी है और जिसकी हालत को आरा बेहतर बनाना चाहते हैं अगर आप बीज और खाद वगैरह नो– प्राफिट नो–लास पर नहीं देना चाहते तो यह जरायत कैसे तरक्की करेगी जब कि आप यह मानते हैं कि यह जरायती सूबा है? फिर जो आप उसे कर्ज देते हैं उसका भी अंदाजा लगा लें कि आप उसका सूद कितना लेते हैं? आप इंडस्ट्रियलिस्ट्स से कर्ज पर तीन फीसदी सूद लेते हैं, ठीक है अच्छा करते हैं हमें कोई एतराज. नहीं लेकिन किसान को जो कर्ज दिया जाता है और उसकी जमीन रहन रख कर जो कर्ज दिया जाता है उसकी सूद की तरह अगर मैं गल्ती नही करता तो 9 फीसदी है । यह बहुत ज्यादा है और इसे कम करने की जरूरत है । वजट में बताया गया है कि किसान को बिजली दी गई है औंर ट्यूबवैल्ज लगाए गए है' । यह बड़ा शानदार कारनामा है । लेकिन मैं वजीर खजाना साहिबा से कहना चाहता हूं कि यह बात भी देखें कि बिजली किसानों को किस रेट पर दी जाती है? गरीब किसान को चार आने युनिट पर बिजली दे कर क्या आप और हम वह समझ सकते हैं कि उस की पैदावार बढ़ेगी और क्या उसके तमाम खर्च निकाल कर उसकी जेब में कुछ बचेगा? जब उसकी जेब में बचता ही नहीं तो उसे पैदा–वार बढ़ाने का इन्सैंटिव क्या होगा इस बात की तरफ आपको

ध्यान देना चाहिए । इस लिये मैं अर्ज करता हूं' कि अगर आप बिजली का रेट इन्डस्ट्री के लिये कम कर सकते हैं तो क्या वजह है कि आप गरीब किसान के टयूबवैल्ज के लिये क्यों नहीं घटा सकते हैं? इसके साथ साथ मैं अर्ज करना चाहता हूं कि गरीब किसान जो आमतौर पर अनपढ़ हैं उन के दो बड़े दुश्मन हैं एक इलेक्शन्ज और दूसरे शराब । आप सब ने देखा होगा कि इलैक्शन के दिनों में शराब का कितना नजायज इस्तेमाल–हुआ और उस अनपढ़ तबके की समझ में शराब पी कर न कोई बात आए और न उनसे कोई बात कर सकता है उस मौका पर । मैं वजीर खजाना साहिबा को इस बात के लिये मुबारिकबाद पेश करता हूं जो उन्होंने कहा है कि शराबबन्दी का फेज्डु प्रोग्राम शुरू करना चाहते है' । इस बार में मैं यह कहना चाहता हूं कि इस काम की पहल उस इलाके से की जाए जो हरियाणा म बीच का इलाका हो ताकि स्टेट के बाहर से इसकी समग्लिग के चासिज थोड़े हों । तो उसके लिए सब से पहली मेरी तहसील हांसी से पहल की जाए क्योंकि उसका कहीं किसी से बार्डर नहीं लगता है । इस वक्त यह बीमारी बहुत ज्यादा बढ़ी हुई है । इसलिये यह जो दुश्मन है किसान का इसको आहिस्ता आहिस्ता काबू करके दूर हटाया जाए ताकि किसान की बहबुदी और तरक्की हो सके । दूसरा दुश्मन है उसका इलैक्शन । बहुत से भाई कहेंगे कि यह क्या बात कर रहा है इलैक्शन तो डैमोक्रेसी की बुनियाद है । यह ठीक है लेकिन अगर इस अनपढ़ तबका दो लिये आए दिन इलैक्शन कराए जायें तो उनके अंदर पार्टिबाजी की ऐसी दीवार

खड़ी हो जाती है कि वह अपनी भलाई की तरफ से ध्यान छोड़ कर सारा वक्त बुराई की तरफ लगा देते है' । यह जो पंचायत के इलैक्शन हैं मैं इनकी तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । आपने जो अब सरपंच का चुनाव सीधा कर दिया. है यह गांव में पार्टीबाजी की बुनियाद खड़ी कर दी है इसे आप जल्दी से जल्दी हटायें । इसके साथ साथ आपने यह जो समितियां और जिला परिषद बनाएं हैं यह कागजपर तो बहुत अच्छे लगते हैं और सुनने में भी बड़े खूबसूरत लगते हैं लेकिन यह जो आपने तीन टायर सिस्टम बनाया है यह पढ़े लिखे तबके की समझ में तो आ सकता है लेकिन अनपढ़ किसान को आप इन तीन टायरों के नीचे न रौंदे । अगर उसे अख्तियार देना है तो सीधे तौर पर दो और जितन अख्तियार देना चाहते हो वह पंचायतो को दो या जिला लैवल पर या तहसील लैवल पर ऐसी इंस्टीच्यूशन कायम करें जिसमें इलैक्शन का हिस्सा बहुत थोड़ा हो । यह तो आपने अच्छा किया कि मयाद तीन साल से बढ़ा कर पांच साल कर दी है । यह दो बातें ऐसी थीं जिनका इलाज किया जाना बहुत जरूरी है और...

उपाध्यक्षा : आपका टाइम हो गया है । दो मिनट आपको और दे देती हुं जल्दी खत्म करें ।

चौधरी सरूप सिंह : एक और बात है जिसकी तरफ मै ध्यान दिलाना जरूरी समझता हूं और वह बैटरमेंट लैवी के बारे में है । यह लैवी आज से कोई 13/14 साल पहले की लगी हुई है और मैं समझता हूं और जैसा मेरे साथी भी जानते है कि उस वक्त यह

सिर्फ थोडे अर्से के लिये लगाई गई थी । हमारे साथ वाली पंजाब स्टेट ने इसे खत्म कर दिया है । इसलिये मै कहना चाहता हूं कि अब हरियाणा के किसानों से भी यह वसूल न की जाए । अगर हम जमींदार की हालत को बेहतर बनाते हैं और उसकी जमीन के लिये पानी देते हैं तो उससे आप इतना, पैसा तो वसूल कर लें जितना आप खर्च कर चुके है लेकिन अगर आप उसे उस अर्से तक ही वसूल करते जाएं कि किसान की जमीन की कीमत भी उससे वसूल हो जाए तो ऐसी बैटरमेट का क्या फायदा? अगर इससे आप के बजट में कोई कमी होती हो तो इसके लिये कोई और आलटरनेटिव तलाश करें लेकिन अब गरीब किसान से यह वसूली बन्द की जाए । (घंटी) बजट में यह कहा गया है कि हरियाणा में जो भाई नई इन्डस्ट्री लगायेंगे उन पर पांच साल के लिये प्रापर्टी टैक्स नहीं लगाया जाएगा । यह अच्छी बात है और इन्डस्ट्री को प्रोत्साहन देने के लिये ऐसा करना चाहिए और सहूलते देनी चाहिएं । बहुत से भाई जो बाहर पैसा लगाते हैं और यहां नहीं लगाना चाहते इनको यहां बुलाने के लिये और उन से इनवैस्ट कराने के लिये यह अच्छा कदम है । इसी तरह मैं कहना चाहता हूं कि जो छोटे किसान हैं और खास तौर पर जिन के पास पांच दस एकड़ जमीन है उनको भी कुछ छूट देनी चाहिए जिससे उनके दिल में यह ख्याल पैदा हो कि सरकार उनकी भी मदद करना चाहती है और तरक्की के रास्ता पर ले जाना चाहती है ।

उपाध्यक्षा : अब आप बैठ जायें आपका टाइम खत्म हो गया है ।

चौधरी हरकिशन लाल कम्बोज (रोड़ी) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, सदन मे डिग्गड पर, बिल पर अलग अलग बहस हुई है, मैं ' समझता हूं कि ये दोनों बजट की ही कड़िया हैं । बजट सदन मे प्रस्तुत किया गया है, यह निहायत ही काबले तारीफ है । यह बजट छोटे छोटे फूलों का गुलदस्ता है, जो कुछ हमारी स्टेट के जराये है' उन्हीं के मुताबिक हमारी फाईनेंन्स मिनिस्टर साहिबा ने बड़े अच्छे ढंग से और तरक्की पसन्द तरीके से बजट को तैयार किया है । इसके साथ ही साथ फूलों के साथ कुछ कांटे भी होते हैं, इनकी तरफ ध्यान देने की जरूरत है । हो सकता है कि वे कांटे ज्यादा बढ़ जायें और फुल बेचारे. किसी काम के न रहें । मै इन कांटों रूपी महकमों की तरफ आपकी तवज्जोह दिलाना चाहता हूं जहां पर कुरप्शन बहुत होती है और देहाती लोगों का इन महकमों के साथ हर वक्त ताल्लुक पड़ता रहता है । ये महकमें अंग्रेजों के वक्त से कायम हुए थे और आजादी मिलने के बाद अब तक भी उसी तरह काम कर रहे हैं । जैसे पहले करते थे । ये हैं पुलिस का महकमा, माल महकमा, एक और नया महकमा आ गया वह है बिजली का महकमा । इन महकमों का ताल्लुक किसान से पड़ता, देहातियों से पड़ता है । सरकार का रिफलैक्शन इन महकमों की म फि त ही लोगों पर पड़ता है जै से इनकी कारगुजारिया होगी, उस 'के मुताबिक ही ये सरकार के अच्छा या बुरा होने का इम्प्रैशन लेंगे । जब जनता की तसल्ली इन महकमों 'के कर्मचारियों से नहीं होती, तब वे डिस्सैटिसफाइड होते हैं, असन्तुष्ट होते हैं । और फिर वे कहते है कि यह सरकार कुछ

नहीं है, कांग्रेस. की सरकार कुछ नहीं है यह बिल्कुल सही बात है । अंग्रेजों ने पुलिस महकमा को इस लिए कायम किया था ताकि वे लोगों को काबू करने मे कामयाब रहें । और पुलिस की मदद लेते रहें । लेकिन जबकि आज हमारा मुल्क आजाद है, अब भी पुलिस का तरीकाकार और जहनीयत वैसी ही है जैसे अंग्रेजो के जमाने में थी । थानों में उसी तरह लोगों की एक्सपलायटेशन होती है, रिश्वत आगे से बढ़ गई है और रोब भी पहले जैसा ही है । अगर थानों मे सरकार का काम दुरुस्त हो जाता है तो गवर्नमेंट के दूसरे सारे कमा ठीक हो जाते हैं और अच्छे चलने लगते हैं । लेकिन हम देख ते है ' कि सरकार एडमिनिस्टेरशन के अच्छा या बुरा होने का अन्दाजा और ला–एण्ड आर्डर का अन्दाजा इ स चीज से लगाती है कि थानों मे कितने के स कत्ल होने के दर्ज हुए, कितने चोरी के दर्ज हुए और कितने दूसरी किस्म के के स दर्ज हुए । पहले से ज्यादा केस हुए हैं या कम हुए हैं, इसी से ऐडमिनिस्ट्रेशन का अन्दाजा लगाया जाता है । लेकिन मै ' आप के नोटिस मे यह लाना चाहता हूं कि थानों में जो केस दर्ज होते है ' उन से कही ज्यादा केस ऐसे होते है ' जो थाने वाले दर्ज ही नहीं करते । जो इत्तलाह देने वाला आता है उसे भगा दे ते हैं और कहते है ' कि पहले इस के स का पता निकालो, चोरी का पता निकालो तो हम ठीक कर लेंगे । मेरे इलाके की गई मिसालें मेरे पास मौजूद हैं । थानों में रिपोर्ट का रिकार्ड ही नहीं होता । एक बार एक लड़के की साईकल छीन ली गई । उस लड़के के पिता तो मर चुके है, उसका बाबा थाने मे गया लेकिन उस गरीब

की थाने में एक भी न सुनी । हमें तो पता था कि वहां पर राहजनी हुई थी, लेकिन जो रिपोर्ट ए आती है उस में राहजनी दर्ज ही नहीं थी । यह तो मैने एक मिसाल पेश की है, इसी तरह की सैकड़ों मिसालें ऐ सी हैं । सरकार को इस तरफ ध्यान देना चाहिए इसके अलावा, महकमा आबपाशी है औरमहकमा माल है जिन मे कुरप्शन बहुत होतीहै । इसके लिए कोई कायदे कानून बनायें और जो अधिकारी रिश्वत लेता है उसके खिलाफ सखत ऐक्शन लिया जाना चाहिए । वाराबन्दी की जो दरखास्ते होती है' उनका फैसला करने के लिए छः महीने लगते हैं । मै समझता हूं कि छः महीने का अर्सा बहुत है, इससे कम ही टाईम लगना चाहिए । लेकिन माल महकमा में लोगों की कई दरखास्ते' ऐसी हैं जिन्हें दो दो साल हो गये हैलेकिन अभी तक बाराबदी का फैसला नहीं किया गया । आप देंखे कि उस किसान की क्या हालत होगी जिसको दो साल से पानी नहीं मिला कब । मैं महकमा वजीर का ध्यान इस तरफ दिलाना चाहता हूं कि ये महकमा की हालत को सुधारें । इसके अलावा दूसरी चीज यह है कि मुजारा कानून के मुताबिक अगर छः साल का हो जाता है तो उसे जमीन खरीदने का हक होता है । ऐसे मुजारों ने दो दो साल पहले दरखास्तें दी हुई हैं लेकिन उन का अभी तक फैसला नहीं किया गया। दो दो साल से मुजरों की दरखास्तें खरीदारी के लिए पैडिंग हैं, ये बहुत तंग हैं, इनका फैसला जल्दी से जल्दी होना चाहिए । जमींदारों को इसका ज्यादा प्रिविलिज होता है, उनके पास पैसा होता है और मुजारों को हरा देते हैं । मेरी सरकार से दरखास्त है कि

इस तरफ ध्यान दे । अब मैं इरीगेशन डिपार्टमेंट के बारे में जिक्र करना चाहता हूं । इसकी मैं एक मिसाल आप के समाने पेश करता हूं । मेरे हल्के में एक गांव है जिसका नाम है भग्गू । इस गांव के पास से एक नहर गुजरती है । इस गांव का आधा रकबा इस नहर के दूसरी तरफ पड़ता है । गांव वाले उस नहर पर एक पुल बनवाना चाहते हैं । महकमा ने गांव वालों से कहा कि तुम आधी रकम दो । लोगो ने साढ़े बारह हजार रुपये की रकम आज से डेढ़ साल पहले दाखिल करवा दी है लेकिन आज तक उस पुल पर काम शुरू नहीं हुआ । वहां पर ईटें भी नहीं फेंकी गई । इसी तरह वाटर सप्लाई और पब्लिक हैल्थ महकमा है, इनका भी यही हाल है । मेरे हलके में एक गांव है जिसका 'नाम है बरवाली । इस गांव के लोगों ने वाटर सप्लाई के लिए पांच छरू साल पहले रुपया कन्टरीब्यूट किया था, लेकिन अभी तक काम शुरू ही नहीं हुआ है । आपदेखे कि जहां इस किस्म की इर्रेगुलैरिटीज हों वहां लोग किस तरह से सन्तुष्ट हो सकते हैं । असल में जो नीचे वाले कर्मचारी हैं वे ही इस तरह की गड़बडी करते हैं, सरकार इसकी तरफ ध्यान दे । अब मैं अपने हल्के के बारे में कहना चाहता हूं ।

उपाध्यक्षा : आप के दो मिनट वाकी है, जल्दी करें ।

चौधरी हरकिशन लाल कम्बोज : दूसरे मेम्बर बीस मिनट तक वोले है मुझे भी उतना ही टाइम मिलना चाहिए । हां, मैं अपने हल्के के बारे में कहना चाहता हूं । सब भाइयों ने कहा है कि मेरा हल्का बैकवर्ड है, लेकिन मैं समझता हूं कि जितना बैकवर्ड इलाका रोड़ी

हल्का है इतना बैकवर्ड सारे हरियाणा में कोई ईलाका नहीं है । मेजर अमीर सिंह ने एक प्रश्न पूछा था जिसके जवाब में बताया था कि उनके हल्के में चार हाई स्कुल हैं । मेजर साहिब ने कहा था कि चार स्कूल कम है, आठ होने चाहिएं । वे चार स्क्रूलों वाले ब्लाक को बैकवर्ड समझते हैं । बेरी हल्के में चार तो क्या, एक ही हाई स्कूल है और उस स्कुल मे नौवीं क्लास ही चल रही है । 22 लड़के इम्तिहान में अपीयर हुए थे, उन में से सिर्फ एक ही लड़का पास हुआ था । अब आप अन्दाजा लगा सकते हैंकि वहां पर किस किस्म का स्टाफ है । रोड़ी एक गांव है उसमें न तो कोई सड़क है और न ही दूसरी फैसिलिटीज हैं । बच्चे दस दस माल से साईकत्र पर पढ्ने जाते है' । मैं सरकार से. निवेदन करता हूं. कि रोड़ी मे जल्दी से जल्दी सड़के बनाई जायें और जहां जरूरत हो वहां पुल बनाये जायें ताकि रोड़ी हैडक्वार्टर के साथ मिलाई जाए । स्कूल भी एक ही है, इस लिए स्कूल बनाने की तरफ भी सरकार ध्यान दे ।

5.00 P.M.

इसके अलावा एक खास समस्या इस सात्र और पैदा हो गई है । तकरीबन चालीस गांव ऐ से हैं जिन को नहर का पानी पं जाब से होकर आता है । पंजाब के कर्मचारी और लोग हमारे साथ निहायत ही वु रा सलूक करते हैं । जब हमें पानी की जरूरत होती है तो पानी नहीं मिलता । इ स साल वर्षा नहीं हुई । वे लोग नहर काटते रहे और अपने राजबाहों में डालते रहे और

हमारे राजबाहो को पानी नहीं आने) दिया । रिजल्ट यह हुआ कि हमारे इलाके की फसल सूख गई, नरमा बिल्कुल नहीं हुआ, अगर हुआ भी है तो किसी को बीस मन हुआ, किसी को पन्द्रह मन हुआ । तो ये मेरे रोड़ी हल्के के 3 0– 40 गांव हैं । इनकी खास समस्या हैँ । पंजाब सरकार के साथ इसके मुताल्लिक कोई खास बात होनी चाहिए । इस लिए, सरकार से मेरी, डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपकी मार्फत प्रार्थना है कि वह इस मतले को खास तौर पर हाथ में ले ताकि अगले सरल भी इसी तरह हमारे साथ यह जुल्म न होता रहे । (घंटी) उपाध्यक्ष महोदया, अब मैं केवल दो मिनट लूंगा ।

शराब बन्दी का जिक्र करते हुए मिनिस्टर साहिवा ने अपनी स्पीच में कहा कि आहिस्ता आहिस्ता इसको बन्द किया जाएगा । मैंतो चाहता हूं कि बड़ी तेजी से इसे बन्द करने का प्रोग्राम चलना चाहिए । क्योंकि शराब के नसो की आदत देहात मे बहुत बढ़ गई है । लोग दिन प्रति दिन अपने करैक्टर को तबाह करते जा रहे हैं । पैसे वाला मामला तो दूसरा है । कुछ सयाने लोग कह गए है When wealth is lost nothing is los; when health is lost something is lost but when character is lost everthing is lost.

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी सरकार से प्रार्थना है कि हमें अपने फाईनेन्सीज के घाटे को किसी और ढंग से पूरा करने की बात सोचनी चाहिए क्योंकि शराब वाली आमदनी को समाज की भलाई के लिए खर्च करना बड़ी शर्म का

बायस है । हम महात्मा गांधी के नाम लेवे हैं जिन्होंने वायदा किया था कि हम शराब फौरन बन्द करेंगे ।

चौधरी गोवर्धन दास चौहान (बरवाला अनुसूचित जाति) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपकी इजाजत से आज सदन मे बोलने का मौका मिला (तालियां) । समय तो आपने बहुत ही कम दिया है, दस मिनट ही मुकर्रर किए हैं, लेकिन दस मिनट में भी जो कुछ कहा जा सकता है, कहुंगा । अफसोस तो इस बात का है कि अपोजीशन वाले मैम्बर साभने नहीं हैं । अगर वे सामने होते तो हमारे इस बजट के बारे मे वे कुछ सुझाव पेश करते, हम उनके सुझावों को देखते कि वे क्या सुझाव पेश कर रहे हैं? यह सरकार का दूसरा बजट हैं । पहला बजट इसी सरकार ने जुलाई में पेश किया था और उस बजट में उस वक्त 8 करोड़ के लगभग घाटा था और अब जब यह सरकार दूसरा बजट पेश करती है तो इस बजट में केवल एक करोड़ दस लाख का घाटा दिखाया गया है । तो इस इतने थोड़े अर्से में सरकार ने अपने उस घाटे को काफी सेज्यादा रिकवर किया है । इस बजट में न कोई नया टैक्स है और न पुराने टैक्सों में ही कोई इजाफा किया गया है । पहले वाले बजट में भी कोई नए टैक्स नहीं लगाए गए थे । इस बजट के पेश करने में जो सरकार ने अलाहिदा अलाहिदा महकमों में अपनी इस्तेमाल रकम दिखाई है वह निहायत की उमदा तरीके से दिखाई है । सरकारी कर्मचारियों को जिनको आजकल के दिनों मैं बहुत कम तनखाह और भत्ता मिलता था, तनखाह और भत्ता अच्छा

कर दिया गया है । यह सरकार का बड़ा ही सराहनीय कदम है क्योंकि अब हिन्दुस्तान में हरियाणा ही एक ऐसी स्टेट होगर जिस में कर्मचारियों को सब से ज्यादा भत्ता और तनखाह मिलेगी । 50 मिडल स्कूल, 50 प्राईमरी स्कूल, और 24 हाई स्कूलों को सरकार ने अपने इस बजट में अपग्रेड करने के लिए रकम रखी है । पहले गुजरे हुए साल में, जो चल रहा है, भी सरकार ने काफी स्कूलों को अपग्रेड किया हूँ । मै सरकार सें दरखास्त करूंगा कि मेरे हल्के मे भी प्राईमरी और मिडल स्कूल अपग्रेड किए जायें । सड़कों के लिए भी सरकार ने काफी पैसा रखा है । पिछले बजट में 250 किंलोमीटर सड़कों के लिए सरकार ने बजट मन्जूर कराया था लेकिन मेरे देखने में तो आया है कि हमारे जिले में 24 किलोमीटर भी सैडके नहीं बनी होगी। पता नहीं सरकार सोच रही है? पता नहीं 31मार्च तक बनेंगी या किसी और हल्के में बना दी गई हैं । परन्तु, खैर, अब जो तीन सौ किलोमीटर सड़के बनाने के लिए अगले साल के लिए प्रोविजन रखा गया है इसके बारे में मैं सरकार से प्रार्थना करूंगा कि इसमें से कुछ हिस्सा मेरे हल्के को भी मिलना चाहिए । मेरे हल्के में 1 5– 20 गांव ऐसे है' जहां सड़क अच्छी न होने की वजह से लोगों को बड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ता है । बरसात के दिनों में अगर कोई बीमार हो जाए, तो नजदीक पड़ने वाले कस्बे तक लोग नहीं जा सकते । बीमार को, आप जानती हैं, बैल गाड़ी में .ही गांवमें ले जाया जा सकता है, मगर वहां रास्ता इतना गन्दा हो जाता है कि बैलगाडी भी नहीं चल पाती । अगर मौसम बरसात से पहले डांगरा से

सनियाना वाली सड़क को बना दिया जाए तो लोगों को बड़ी भारी सहूलियत हो जाएगी । डिप्टी' स्पीकर साहिबा, मैं आनरेबल मिनिस्टर साहिब को सजेस्ट करना चाहता हूं कि जितनी किलोमीटर सड़कें उन्होंने बनानी हैं उस से यदि हरेक कास्टिच्यूएंसी को वे हिस्सा एलोकेट कर दें या हरेक मैम्बर को बता दें कि आपके हल्के में इतनी सड़कें बनेंगी तो बहुत अच्छा होगा ।

उपाध्यक्षा : सुझाव तो आपका बहुत अच्छा हैं ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : बहिन जी, इनका समर्थन करके मेरे ख्याल में आप अपनी मांग रखना चाहती हैं ।

उपाध्यक्षा : मै आनरेबल मैम्बर कौ बताना चाहती हूं कि इसमें बुरी बात नहीं है । पंजाब में श्री प्रबोध चन्द्र जी ने हरेक एमएल.ए. और एम. एल. सी. से यह कहा था कि तुम्हारे हल्के में एक एक हाई स्कूल अपग्रेड हो जाएगा ।

चौधरी हरकिशन लाल कम्बोज : डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस सम्बन्ध में मेरा भी यह सुझाव है कि जिन इलाकों में पहले सड़कें बहुत कम हैंउनको दूसरे इलाकों की बनिस्बत पथादा हिस्सा दिया जाना चाहिए ।

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे हल्के के साथ लगती हुई एकऐसी सड़क हुं जिसको बने हुए 4– 5 साल हो चुके हैलेकिन उस सड़क पर मण्डी आदमपुर से बरवाला तक कोई

बस नहीं चली । अगर बस नहीं चलानी थी तो सड़क बनाने की क्या जरूरत थी? सड़क की एक्चुअल लम्बाई 20 मील की होगी ।

बिजली बोर्ड के बारे में लगभग सभी आनरेबल मैम्बरों ने कहा कि इसने बहुत अच्छा काम किया है । मैं भी उनसे सहमत हूं क्योंकि यह अपनी सरकार का बहुत अच्छा काम है । लेकिन इसके बावजूद भी मेरे हल्के मे 15–20 गांव ऐसे हैं जिन के पड़ोस वाले गांव में तो बिजली है परन्तु इन गांवों को छोड़ दिया गया है । मै सरकार से रिक्वैरट करूंगा कि इन गांवों में भी जो बिजली वाले गांवों से केवल एक एक, डेढ़–डेढ़ मील की दूरी पर है, जल्दी से जल्दी बिजली लगाने की कोशिश की जाए ।

सरकार ने बूढ़ों को पैन्शन देने के लिए कानून बनाया है । मैइस कानून का स्वागत करता हूं । यह बहुत ही अच्छा किया है । कांग्रेस सरकार ने तो इससे पहले भी कानून बना दिया था, लेकिन बीच मेंएक और सरकार आ गई थी जिसने इसको बन्द कर दिया था । इस सरकार ने इसे दुबारा शुरु कर दिया है । इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं ।

अब एक और बात रह गई है, डिप्टी स्पीकर साहिबा, जो हमारे घरेलू मसले की है । मैं जानता तो हूं कि यदि मैइस बात को कहूंगा तो मेरे कुछ भाई मेरे से नाराज हो जायेंगे मगर यदि न कहता हूँ तो मुझे अपने पार्ट पर एक स्लिप महसूस होती है । इस

लिए मैं इस बात को कहे बिना नहीं रह सकता क्योंकि हमारे साथ तो वह बात बनी हुई है :––

न तड़पने की इजाजत है न फरियाद की ह

घुट के मर जाऊं यह मर्जी मेरे सैयाद की है ।

तकरीबन यहां सदन के सभी मैम्बर इस बात पर बहुत जोर से बोले हैं कि हरिजनों का सुधार किया जाए, हरिजनों की उन्नतिकी जाए, हरिजनों को कर्जे दिए जायें, यह किया जाए, वह किया जाए । डिप्टी स्पीकर साहिबा, पिछले बजट में हरिजनों के लिए 78 लाख रुपया रखा गयाथा और इस बजटमे' 65 लाख रुपया रखा है । मैं डिप्टी स्पीकर साहिबा यह रिक्वैस्ट करूंगा कि सरकार ने पैसा तो रख दिया परन्तु क्या कभी सरकार ने यह ख्याल किया है कि वह पैसा किन लोगों के पास जाता है । वह पैसा करीब करीब सारे का सारा एक ही कम्यूनिटी के पास चला जाता है । सरकार से मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या वह दूसरी कम्यूनिटीज को हरिजन कन्सिडर ही नहीं करती है?

सबेदार प्रभु सिंह : मै हम प्वायंट आफ आर्डर । आनरेबल मेम्बर ने जो इल्जाम लगाया है यह गलत है । हरिजनों की 36 कम्यूनिटीज हैं । उस कम्यूनिटी का नाम बतायें जिसको यह पैसा जाता हूँ?

उपाध्यक्षा : आनरेबल मेम्बर जो कुछ बोल रहे हैं ठीक बोल रहे है' । वे कह सकते है कि एक ही कम्यूनिटी को पेसा दिया जा रहा है

और वही फायदा उठा रही है । उनको अधिकार है वे कह सकते हैं ।

चौधरी राम प्रकाश : डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं अपने भाई को एक इन्फेर्मेशन के रूप में अर्ज करना चाहूंगा कि जो कोटा बाल्मीकियों के लिए होता है वह उनको चला जाता है । यह इक्वल डिस्ट्रिब्यूशन होती है । वे कैसे कह सकते हैं कि चमारों को ज्यादा चला जाता है?

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : सरकार की ओर से कोई इंस्ट्रक्शन इस किस्म की नहीं है जिस में कोटा मुकर्रर किया गया हो । मैं अपने दोस्तों को इन सारी बातों की तशरीह करके बतला दू 'गा ।

उपाध्यक्षा : गवर्नमेंट तो यहां मौजूद है । अगर कोई इंस्ट्रक्शन्ज हैं तो वह बतला सकती है कि किस कम्यूनिटी को कितना कोटा मिलता है या सब को बराबर बराबर मिलता है । चौधरी गोवर्धन दास चौहानरू डिप्टी स्पीकर साहिबा मैं इन सब बातों को एक्सप्लेन करने ही वाला था लेकिन मे रे भाई पहले ही बोल पड़े । मुझे पता है कि 3 ह कींमें हैं लेकिन और कौमें तो बराये नाम हैं । डिप्टी स्पीकर साहिबा यहां गवर्नमेट का रिकार्ड मौजूद है जो कुछ हरिजनों (चमारों) को मुरायात दी है उतनी दूसरे हरिजनों को बिल्कुल नहीं मिली हैं । जहां तक सर्विसिज में रिजर्वेशन का ताल्लुक है यहां कहा गया कि 21 परसैन्ट रिजर्वेशन है मैं दावे के साथ कह सकता हूं जितने से विर्सिज मे हरिजन है उतने न जाट

है, न जाहमग है, न किसी और कम्यूनिटी के लोग हैं । इस रिजर्वे शन साईड पर तो खाली चमारों की कम्यूनिटी ही अधिक फायदा उठा रही है ।

सूबेदार प्रभु सिंह : डिप्टी स्पीकर साहिबा जहां दूसरे हरिजन मैट्रिक पास करके भी 125 रुपए की नौकरी करते हैवहां बाल्मीकि हरिजन अनपढ़ होते हुए भी 125 रुपए म्युनिस्पिल कमेटियों में ले लेते हैं । इनके दस हजार के करीब लगे हुए है हमारे तो बीस साल में भी इतने नहीं लग सकते ।

चौधरी गोववर्धन दास चौहान : डिप्टी स्पीकर साहिबा जितना मेरा टाईम ये और लोग ले रहे हैं उतना ही टाईम साथ साथ बढ़ा दीजिए, क्योंकि इनकी बातों के जवाव भी मैने देने हैं ।

उपाध्यक्षा : मैने आपका टाईम तो आल–रेडी ही बढ़ा दिया है ।

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : डिप्टी स्पीकर साहिबा पता नहीं, हमारी बदकिस्मती हे या खुश किस्मती है, हरियाणा स्टेट में एक बाल्मीकि गजटिड अफसर था लेकिन उसी को 19–11– 68 को रिवर्ट कर दिया है । ये पानीपत में टैक्सटाईल मार्किट डिवल्पमैट अफसर लग । हुआ था । उसको रिवर्ट करके असिस्टेंट इन्सपैक्टर, स्कूल्ज, हरियाणा, जो कि उसकी पहली पोस्ट थी, पर वापिस भेज दिया है । अब वहां गया तो कहने लगे कि यह पोस्ट ते अबालिश कर दी गयी है । इस लिए आप कहीं और जाइये । जिस पोस्ट पर आया था वह पब्लिक सर्विस कमीशन के थरु आया

था परन्तु उस बेचारे के लिए कोई जगह ही नहीं है। 19–11– 68 से वह ब कार बेठा हुआ है न कही पर उसको लगाया गया न तनखाह ही मिल रही है, न ही कोई कमरे में बैठने को जगह देता है । किसी अफसर से कहा जाता है तो उसको जवाब मिलता है कि हमारे सिर पर बैठ जाओ और कहा बैठोगे । चार महीने हो गये है परन्तु कोई फैसला ही नहीं हो रहा है । वह सब इसी– कारण से कयोंकि वह एक बाल्मीकि अफसर है । यदि कोई दूसरा हरिजन अफसर होता तो ठीकठाक करा लेता ।

जहां तक म्युनिस्पिल कमेटियों में बाल्मीकियों कीं पोस्टों का सम्बन्ध है । उन पोस्टों पर तो दूसरी जाति का कोई भी आदमी आने को तैयार नहीं है । वे तो इसी लिए रिजर्व हैं कि वहां कोई आना नही चाहता । यदि वहां कोई आना चाहता है तो हमारे लिए तो 75 परसैन्ट औरों को लगा दो और 25 परसैन्ट रिजर्वेशन कर दो । हमतो हटने के लिए तैयार हैं । अगर म्यूनिस्पिल कमेटी में दो चार जमात पढ़ा–लिखा बाल्मीकि चपड़ासी की पोस्ट के लिए अप्लाई करता है तो उसको यही जवाब मिलता है कि तुम तो पहले ही बहुत ज्यादा लगे हुए हो । इस लिए उसको चपड़ासी तक भी नहीं बनाया जाता है ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, चार महीने पहले सफाई मजदूरों की यूनियन की एक कान्फ्रैस हुई थी ।

उपाध्यक्षा : अब आप का टाईम हो चुका है । सात मिनट मैं पहले ही आपको दे चुकी हूं । इस लिए आप अपना भाषण समाप्त करें ।

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : डिप्टी स्पीकर साहिबा मुझे तो पहली हो बार बोलने का मौका मिला है इस लिए मेरा थोड़ा टाईम और बढ़ा दें ।

उपाध्यक्षा : अच्छा आप को चार मिनट और दे देती हूं ।

चौधरी गोवर्धन दास चौहान : डिप्टी स्पीकर साहिबा, थोड़ी सी देर में मैं खुद ही बैठ जाऊंगा । अभी मै जिक्र कर रहा था कि सफाई मजदूरों की यूनियन को कान्फ्रैस हुई थी जिस का इफ्तताह हमारे लोकल बाडी के मिनिस्टर श्री खुरशीद अहमद जी ने यमुनानगर में किया था । वहां यूनियन ने अपनी तकलीफों का इजहार किया था । उस में सब से बड़ी तकलीफ म्यूनिस्पिल कमेटी के सैनेटरी इन्सपैक्टर के बारे में बतायी थी । म्यूनिस्पिल कमेटी में सफाई मजदूरो का सब से बड़ा अफसर वही होता है अरैर उसके बाद सैक्रेटरी होता है । ये सैनिटरी इन्सपैक्टर तो बड़ी ही धांन्धली मचाते हैं । उन गरीबों पर किसी पर पांच रुपये जुर्माना, किसी पर दस और किसी पर बीस रुपये तक जुर्माना कर देता है । इतना जुर्माना तो किसी डिपार्टमेंट के कर्मचारी पर नहीं होता है । वह गरीव मजदर न बोल सकता है न किसी के सामने रिप्रेजेटेशन ही कर सकता है । यह इन्सपैक्टर किसी लोकल बाडीज के किसी न

किसी मैम्बर का रिश्तेदार होता है । ये हमेशा सिफारिशी ही लगते है ।

इस लिए हमने वहां यमुनानगर में मन्त्री महोदय से रिकवैस्ट को थी कि इन दोनों पोस्टों को सैक्टरी और इसपैक्टर को ट्रसफेबल पोस्ट कर दो ताकि उन गरीबों क।. भी भला हो सके । लेकिन बड़े अफसोस के साथ यहां कहना पड़ता है कि सरकार ने अभी तक कोई कदम नहीं उठाये कि आया वे पोस्टें ट्रांस्फेबल होंगी भी या नहीं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा सब से बड़ी हैरानी की एक और बात मैं आपके सम्मुख रख रहा हूं । जितने भी मन्दिर, मस्जिद और गुरद्वारे है सभी केसाथ थोडी बहुत जायदाद होती है चाहे दो दुकानें हों, दस हों, या चार हों होती जरूर है' । उन दुकानों पर किसी जगह पर भी प्रापर्टी टैक्स नहीं लगता है परन्तु कुरक्षेत्र में बाल्मीकियों का एक मंदिर है उसके साथ चार पांच दुकाने है उन पर प्रापर्टी टैक्स लगा हुआ है । तो डिप्टी स्पीकर साहिबा उन बेचारे बाल्मीकियों ने क्या गुनाह किया हुआ है जो इनके मन्दिर की दुकानों पर तो प्रापर्टी टैक्स लगा हुआ है और मन्दिरों पर कोई नहीं । इस लिए मै आपके द्वारा सरकर से निवेदन करूंगा कि उनको भी उस टैक्स से मुक्त कराया जाये ।

अभी जो मेरे साथी बड़े तैश मे आ गये थे । उन को भी मै बताना चाहता हूं उनके तो शुरू से एम.एल.ए. और मिनिस्टर बनते

रहे हैं इस लिए इस 21 साल में रिजर्वेशन के नाम पर उन्होंने ही खाया है, जो कुछ भी तरक्की हुई है उन्ही लोगों की हुई है । हमारी बिल्कुल नहीं हुई । इस रिरूज्ञर्वेशन की बदौलत कभी चान्द राम जी मिनिस्टर बनते रहे कभी कोई वहां गद्दी पर विराजमान हो गया, कभी कोई । इस प्रकार से इनका तो शुरू से ही हकूमत मे' हाथ रहा है । हमारा तो कोई होता ही नहीं था । यह तो हरिजनों के पंडित है । अगर आप हरिजनों का उद्धार चाहते हैतो मेरी आप से प्रार्थना है कि यह जो हरिजन पंडित हैं इनको डीशड्यूल करदेना चाहिए और जो बाल्मीकि हूँ उन को ही हरिजनों की लिस्ट मे रहने देना चाहिए । गवर्नमेंट आफ इडिंया ने एक कमिशन कायम किया था और उसने जांच करने के बाद यह रिपोर्ट दी थी कि जो हरिजन चमार हैं, इन चमारों को डीशडयूल कर दिया जाए और यह रिपोर्ट आल इंडिया लेवल पर लागू चारने की दिशा में थी । लेकिन पता नही इन पडितो ने क्या जादु. मारा कि उसको भी रद्द करवा दिया? डिप्टी स्पीकर साहिबा, मै सदन की जानकारी के लिए यह बताना चाहता हूं कि भारत वर्ष के 17 प्रोविंसिज है, उन सब में किसी भी असैम्बली में कहीं भी चमारो के इलावा और कोई मिनिस्टर नहीं है, किसी दूसरी जाति का मिनिस्टर अब तक नहीं बना और असल बात यह हे कि जिस आदमी के हाथ में हकूमत हेती है, वही आदमी अपने लिए फैसिलीटीज ले लेता है । (घंटी) महात्मा गांधी जब भी. कभी हरिजन बरितयों में ठहरा करते थे तो वे अक्सर बाल्मीकि बस्ती में ही ठहरते थे वह कहते थे कि वह बाल्मीकि जाति का लड़का

भारतवर्षका राष्ट्रपति बने लेकिन बडे अफसोस की बात है कि गांधी की उस इच्छा के विरुद्ध ये राष्ट्रपति तो वया चपड़ासी भी नहीं लगने देते । मै आप से विनती करना चाहता हूं कि यह जो चमार हैं, फैसिलिटीज ले ले कर अब पंडित बन चुके हैं । इस लिए इनको हरियाणा के अन्दर डीशडयूल कर देना चाहिए । इतना कहकर डिप्टी स्पीकर साहिबा मै आपका धन्यवाद करते हुए अपनी सीट ग्रहण करता हूं ।

उपाध्यक्षा : हाउस के अन्दर चार पांच मेम्बर और है' जो बोलना चाहते हैं, अगर आप इस बात के लिए एग्री करते हैं कि एक घंटा सदन का समय बढ़ा दिया जाए तो मैं एक घंटा बढ़ा देती हूं ।

सभी मेम्बर : हां, हम एग्री करते ह' ।

उपाध्यक्षा : एक घंटा टाइम बढ़ाया जाता है ।

HARYANAAPPROPRIATION (No. 2) BILL(S), 1969

(RESUMPTION)

श्री जसवन्त सिंह चौहान (राई) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं इस बजट का स्वागत करता हूं और बहन ओम प्रभा जी को बजट बनाने के लिए बहुत बधाई देता हूं । आज इस पर चर्चा हो रही है लेकिन हरियाणा के अन्दर जो बेचौनी थी, वह खत्म हो चुकी है । पहले यही चर्चा हो रही थी कि जब सैशन होगा तो पता नहीं क्या होगा? जो अपोजीशन मेम्बर्ज थे, वे यहांसे चले गये है', लेकिन मुझे इस बात का अफसोस है कि अगर वे यहां हाजिर होते

तो मै कुछ न कुछ उन के साथ बातें करता लेकिन चलो, उन के कोई न कोई भाई यहां बैठे होंके, वे उन्हें बता देंगे जो कुछ मैं यहां कहूंगा । उन्होंने सारे हरियाणा की जनता में यह अफवाह मचाई हुई थी कि मिनिस्टरी टूट जायेगी और वह अपनी मिनिस्टरी बना लेंगे, लेकिन मुझे एक शेयर याद आ गया :–

बहुत शोर सुनते थे पहलू मैं' दिल का

जो चीरा तो एक कतरा खून का निकला ।

हमारी हरियाणा सरकार डिप्टी स्पीकर साहिबा, बहुत मजबूत साबित हुई और यहां पर यह पता चल गया कि बहुत अच्छी तरह काम कर रही है और अगर यही रफतार रही तो हरि– याणा को सचमुच का हरियाणा बना देगी । हमारे राव साहिब और आपोजीशन के दीगर मैम्बरान गवर्नर साहिब के एड्रैस को भी खोखला बतलाते थे और चीफ मिनिस्टर साहिब को मासूम कहते थे लेकिन उनकी बात बिल्कुल गलत है । हरियाणा को जनता अब इतनी बेवकूफ नहीं रही जितना कि ये दोस्त उसको समझते थे । हरियाणा की जनता आज इकट्ठी है और अकल की पक्की है । वह इस बात को समझ चुकी है कि हरियाणा की सरकार ने थोड़े से अर्से में कितना अच्छा काम किया है । जिस काम को पैतीस पैतीस वजीर सम्भाला करते थे उस काम को सिर्फ चार वजीर सम्भाल रहे हैं और इतनी अच्छी तरह से काम कर रहे हैं कि शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पी रहे है' । किसी गरीब आदमी का कोई

मामला ऐसा नहीं कि उसके साथ किसी प्रकार की बेइन्साफी नजर आती हो । जब अपोजीशन ने देखा कि उनका कोई चारा नहीं चलता तो वे यहां से भाग निकले और यही उन्होंने बहाना बनाया । जनाब डिप्टी स्पीकर साहिबा :––

''न खंजर उठेगी न तलवार उठेगी, ये बाजू मेरे आजमाये हुए हैं ''

मैं इन साथियों के साथ काफी दिन तक रहा और उनका ईमान अच्छी तरह से आजमाया हुआ है । उन मे' सिवाय इधर उधर की बकवास करने के और कुछ नहीं है । कभी हमारे मिनिस्टरों में और कभी पुलिस के अफसरान में बुराइयां निकालते रहते हैं । इस तरह से हमारी सरकार को कोसना उनका काम है लेकिन मै उन्हें बता देना चाहता हूं कि कौओं के कोसने मे ढार नहीं मरा करते । अगर वे जनता की भलाई के काम सोचते तो उनकी हकूमत चल सकती थी लेकिन उनके कारना बदस्तूर उसी तरह से है' औरजैसा उन्होंने पहले किया वैसा ही वे कब भी कर रहे है' । हमारे क्योजीशन के मैम्बरान में से चार पांच भाई तो इतने मजबूत और हटे कटे नजर आते है' कि ऐसा लगता है कि वे किसी अच्छे खानदानी घर से ताल्लुक रखते है और बहुत अच्छे रईस हों मैं उनका नाम तो नहीं लेना चाहता लेकिन वे सिर्फ चमकते ही 4 और जैसे कि अंग्रेजी फूल चमकाता है जिस में खुशबू नहीं होती वे उसी फूल के मानिंद है । लेकिन जो देशी फूल होता है उस मे खुशबू होती है । किसी शायर ने कहा है :––

कांटे से भी खराब है जिस गुल मे बू न हो

वीरानी मेर भी वीरान है जिस जगह तू न हो ।

मै कहता हूं कि मेरे इलाके मे एक ड्रेन नम्बर 8 पर पुल बनना था जब कि हमारे गोड़ साहिब मिनिस्टर थे । उस वक्त वह वहा पर गए और मौके पर जा कर बरसात में उस पुल की हालत्त देखी, वक उस वक्त केसे नगार आता था जैसे दरिया जमुना ही । उन्होने उस वक्त के हालात को देखते हुए वह जनता के सामने पब्लिक मीटिंग में उस पुल के बनाने का एलान कर दिया ले किन मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि आजतक वहां पर काम शुरु कहीं हुआ । मँ आप के नोटिस मे और सरकार के नोटिस में यह बात लाना चाहता हूं कि बरसात में पहले अगर वहां पर पुल न बना तो वहा पर लोगों का बड़ा नुक्सान होगा । आप ने अखबारों मे भी सुना होगा कि देहली के आस पास के 40 गाव डूब गए, वह मेंरा ही इलाका है और वह तमाम फ्लड एरिया है । इस लिए वहा बरसात के दिनों में तो क्या उस के तक साल बाद तक भी वहां पर काम शुरु नही होता । मैं लोगॉ को अब की बार विश्वास दिला कर आया था कि इस बार जल्दी जल्दी पुल तामीर करवा दिया जाएगा । इस लिए इस बात का ख्याल रखा जाए । कब मै सड़कों के बारे में जिक्र करता हूं । हमारे पी. डबल्यु. डी. मिनिस्टर श्री पोसवाल साहिब हमारे इलाके में गए और वहां पर उन्होंने दो तीन जगहों पर पब्लिक मीटिंगज भी एड्रैस की । वहां की जनता ने इनका इस तरह स्वागत किया जैसे कि विंदरावन के

भिखारी यात्रियों का करते हैं । उस वक्त पोसवाल साहिब ने चार पांच सड़कें बनाने का ऐलान जरूर किया था लेकिन उन पर आज तक एक छटांक मिट्टी या रोड़ी नहीं डाली गई । पिछला वजट भी बहुत शानदार बना था लेकिन मेरे इलाके में एक पैसा भी खर्च नहीं किया गया था । पोसवाल साहिब के आर्डर के मुताबिक हम ने एक चौथाई रकम भी जमा करवा दी थी जौ कि दो लाख के करीब बनती थी । इस लिए मै' दरखास्त करूंगा कि उन सड़कों कौ बनाने के लिए जल्दी से जल्दी ध्यान दिया जाए । एक सड़क तो जाखौली से गऊ–शाला, दूसरी अटेरने से मनाली, तीसरी पबसिरे से शेरसा और चौथी झूंडपुर मे जमना को जाती है । इन के ऊपर जल्दी से काम शुरु किया जत्ना चाहिए । डिप्टी स्पीकर साहिबा वहां कोई रास्ता ऐसा नहीं है जहां से वहां के लोग अपने मवेशियो को ले कर गुजर सके और उनका शैलटर दे सकें । एक मेरे हलके मे जी.टी.रोड पर कमला नेहरू शिक्षा केन्द्र की बिल्डिग खाली पड़ी है, मैं दरखास्त करूंगा कि उस में कालेज खोल दिया जाए क्योंकि मेरे हलके मैं कोई कालेज नहीं है । एक वहां पर होम साइंस कालेज भी बनाया जाए । वहां पर इस वक्त चन्द एक मिडल स्कूलों के और दो हाई स्कूलों के औंर कोई शिक्षा केन्द्र नहीं हुँ । हायर एजूकेशन के लिए बच्चों को बहुत दूर भेजना पड़ता है । इस लिए वहां पर कालेज बनाया जाए । एक अर्ज यह है कि मेरे इलाके में जाखोली गांव में एक छोटी सी डिस्पैन्सरी थी जो कि जमना में बाढ आने' से खराब हो गई थी । मैने हैल्थ मिनिस्टर साहिब को खुद वह दिखाई और वह वहां जाते वक्त दो

चार बार ठाकरे खा कर गिरे भी थे क्योंकि रास्ता खराब था और कुछ अन्धेरा भी था । उन्होने वहां पब्लिक मीटिंग मे एलान किया था कि अगर उस गांव की जनता उस की चार दीवारी बना दे तो वहां पर हैल्थ सेंटर बना दिया जाएगा । वहां की पंचायत ने 60–70 हजार की जमीन दी और 15–20 हजार रुपया लगा कर दीवारें भी बनवा दी । लेकिन अभी तक हैल्प सैटंर तो दरकिनार वहां पर डिस्पैन्सरी भी कायम नहीं हो सकी । इस की तरफ भी तवज्जॉह दी जाए । डिप्टी स्पीकर साहिब मेरे इलाके में क्योंकि वाढ आती है इस लिए सिफं एक ही फसल होती है, जो थोड़ा बहुत फ्लड से बच जाता है वहां पर गेहूं होती है । गन्ने की काश्त के इलावा सब्जी की काश्त इतनी होती है कि शायद ही उतनो किसी और जगह पर होती हो । तमाम देहली मे' सब्जी वहां सै हो जाती है लेकिन सब्जी का असानी से देहली तक पहुंचाने के लिए कोई भी आसान साधन लोगो को नहीं मिलता । इस लिए वहां के लिए लोगों को रूट प.रमिफ्र दि ' जापे ताकि लॉग जल्दी से और आसानी से अपनी सब्जी को देहली तक पहुंचा सके ओर उनका ज्यादा फायदा हो । जब कभी आप देहली जाते है तो आपने देखा होगा कि हजारो को तादाद मैं सब्जियों के टोकरे सड़क के दोनों तरफ पड़े हुए होते है और वहां पर इक बहुत थोड़े आते हैं, वह बेचारे सारी रात परेड करते रहते हैं । उन के लिए कोई रूट का इन्तजाम किया जाए ।

चौधरी हेम राज सहरावत (हथीन) : श्रीमती डिप्टी स्पीकर साहिबा यह जो बजट हमारी गवर्नमेट की तरफ से पेश हुआ है यह वाकई बधाई का हकदार है औंर इसके लिए मैं गवर्नमेंट कौ बधाई देता हूं । लेकिन बहुत अच्छा होता अगर इस बजट में मेरी कस्टीचुएंसी का भी जिक्र होता । मेरा हलका हरियाणा में बहुत पिछड़ा हुआ इलाका है । मेरे इलाके में 1947 से लेकर आज तक एक काम भी तरक्की का नहीं हुआ । 1947 में हमारे यहां स्पीकर साहिब गए थे । अच्छा होता अगर वह भी यहां होते तो मेंउन को बतलाता कि उस समय जब आप ब्रिगेडियर थे तो वह वहां अमन कायम करने के लिंए गए थे । उसी तरह वह बतौर स्पीकर इस संसद का इन्तजाम कर रहे है । उन के इशाफ पन्सद होने के बावजूद भी हमारे अपोजीशन के भाई शोर करते है' और वाकआउट कर जाते है । मैं समझता हूं कि यह चीज हमारे लिए नुक्सान देह है और हमें बदनाम कर रही है । यह चीज हमारे इन भाईयों के लिए अच्छी नहीं है और उन्हों ने ठीक नही किया है । हमें लोगों ने इस लिये चुन कर भेजा है कि हम उन के हकूक के लिये यहां पर लड़े और उनकी मांगें यहां हाउस के सामने रखे न कि यह करें कि यहां से उठ कर चले जाप । मैं अब अपने इलाके की तकलीफें आपके सामने रखाना चाहता हुं । सब से पहले बिजली की बात करता हूं । मेरे हूलके में बिजली के बहुत थोड़े कुनेक्शन्ज दिए गए है । यह ठीक है कि हरियाणा मे इस दफा 14 हजार कुनैक्शन्ज दिए गए और इस साल 18 हजार कनैक्शन्ज देने का विचार है । इसके अलावा यह भी बड़ी खुशी की बात है कि

फरीदाबाद में 55 मेगावाट का पावर स्टेशन तैयार करने का विचार है । इससे हरियाणा को फायदा होगा लेकिन जमींदारों को फायदा तब होगा जब उन पर से जो ऐम.सी.जी. लगाया हुआ है वहू हटाया जाये । यह नहीं होना चाहिए जमींदारों को इससे बड़ा नुकसान है । दुसरी बात यह है कि 25 पैसे परयूनिट बढ़ा दिए हैं । वह नहीं बढ़ने चाहिएं । इसके बाद मैं' सिंचाई की बात करता हूं । मेरे हलका मे कुछ ऐसा इलाका है जिसको यू. पी. आगरा कैनाल सैराब करती है वहू पानी वह बिल्कुल नहीं देते है' । मुश्किल से एक माह में एक हफता देते है' और वह भी पूरे पैमाने पर नहीं दे देते हैं । कई दफा मैं ने चीफ मिनिस्टर साहब को लिखा और डी. सी. की मास्क वहां चिटिंयां भिजवाई और मैंने खुद कई दफा लिखा लेकिन वह सुनते ही नहीं हूँ और आबयाना भी ज्यादा लेते हूँ । दूसरे एक गुड़गांव कैनाल जो हमारे इलाके कौ सैराब करती है और उसका ऊटावर माईनर मेरे हलका को सैराब करता है । उसमें आज तक पानी नहीं छोड़ा गया है पता नहीं हस का क्या कारण है । मैं अर्ज करना चाहता हूं. कि उस मे जल्दी से जल्दी पानी छोड़ा जाए । गुड़गांव नहर जो निकाली गई है उस पर पुल बहुत थोड़े हैं । बहुत सारे गांव की जमीन नहर के पार चली गई है, बहुत से गांव एरसे है'' जिनकी आबादी इधर रह गई है और पानी पीने के कुएं और मरघट आदि उधर चले गए हैं । लोगों को मरघट पर जाने के लिये बहुत दूर से हो कर जाना पड़ता है । इस लिये जरूरी है कि वहां कम से कम चार पांच पुल बनाए जाये । दूसरे मेरा हलका 1956 से फ्लडजदा चला

आ रहा है और आए साल फलड आते है' और उन से तमाम जमीन बरबाद हो जाती है जिससे वहां के तो लोगो की हालत बहुत कमजोर हैं । पिछले साल ओले भी पड गए जिसकी रिपोर्ट सरकार के पास आ गई है । इस बारे में यह कहना चाहता हूं कि उनकी मालगुजारी मुलतवी तों कर दी जाती है लेकिन माफ नहीं की जाती है । वित्त मन्त्री जी के ध्यान में बात लाई गई थी और उन्होंने विश्वास दिलाया है कि इस बात पर गौर किया जाएगा । अब कुछ अर्ज सड्कों के बारे में करना चाहता हूं । मेरे हलका मै सड़कें बिल्कुल नहीं है । पलवल से हथीन वाली सड़क जो जिला परिषद की है टूटी हुई है । अब वह पी. डब्लयू. डी. के पास आई है लेकिन उसके आने के बाद भी उस पर बहुत थोड़ा पैसा लगाया गया है और उस पर कारें नही जा सकतीं । मेरा विचार था कि चीफ मिनिस्टर साहब और मिनिस्टर साहिबान कौ वहाँ ले जाता लेकिन मैनेसोचा कि वहां जाते हुए कारें टूट जायेंगी और इसका नुक्सान गवर्नमैटं को भुगतना पडेगा । मेरे इलाका में एक .सडक जो हथीन से मटकोला जाती है बहुत जरुरी है ओर इसे बनाया जाए । अब मेरे इलाके के लोगों को वहां जाने के लिए पहले पमवल जाना पड़ता है और फिर वहां से बस पकडनी पड़ती है और लोग कोर्ट में जाने के के लिए लेट हो जाते है मेरे इलाके के लिए यह सडक बडी जरुरी है इसलिए इसे बनाया जाए कई सडके ऐसी हैं जिनके पैसे दाखिल हो चुके हैं लेकिन फिर भी कोई कार्यवाही नहीं हो रही है । हथीन काफी बडा कस्बा है और उसकी कोई पांच हजार की आबादी है और उसके आस पास

काफी गांव लगते हैलेकिन वहा पर कोई हस्पताल नहीं है । वहां से 9 मील के फासले पर मटकोला में ही हस्पताल है । इस से लोगों को बड़ी दिक्कत हो रही है । मैं अर्ज करता हूं कि हथीन में हस्पताल बनाया जाए । स्वास्थ्य मन्त्री साहव हथीन जाकर इसके बारे में वायदा भी कर आए थे इस लिये वह वायदा पूरा होना चाहिए । एक बस हथीन से नूह को चलानी बहुत जरूरी है । जिसके लिये कई दफा लिख चुके हैंऔर सी. एम साहब ने हां भी कर ली थी लेकिन वह बस अभी तक नहीं चली है वह जल्दी से जल्दी चलाई जानी चाहिए । मेरे हलका में जो मेवात के नाम से जाना जाता है पूरे स्कूल भी नहीं हैं । वहां ज्यादा सेज्यादा स्कूल खोले जाये ताकि हमारे बच्चे पढ़ सकें और सर्विसिज में आ सके । इसके साथ में अर्ज करता हूं कि हथीन में एक मण्डी का बनाया जाना बहुत जरूरी है । इसके बारे में पोसवाल साहब के पास कागजात आा!? थे लेकिन उन्होंने कह दिया कि डाईरेक्टर मौका पर जा कर देखे । डाईरेक्टर की माँका पर जाने की क्या जरूरत है जब कि आप वहां की मुश्किलात जानते ह । हम जानते हैं औंर आप खुद देख चुके है' कि वहां मण्डी की जरुरत है । अब लोगों को होडल या पलवल या नूह. की मण्डी में जाना पड़ता है । 40 / 50 गांव है' जिन के लिये मण्डी की जरूरत है । फिर यह जो सोसाईटियां बनी है उन में चीनी बिल्कुल नहीं मिलती है । एक कानून बना दिया हुआ है कि उस सोसार्डटी कीं चीनी का कोटा मिलेगा जो ओवर ड्यू न ही लेकिन वहां की तमाम की तमाम सोसाईटिया ओवर डयू है । अगर इसी तरह चलता रहा तो

देहात के तमाम लोग चीनी के बगैर रह जायेंगे । इस लिये' यह कानून खत्म कर देना चाहिए । इसी तरह पंचायतों में बड़ी धांधली बाजी चल रही है । पांच साल हो गार है' लेकिन कुछ पचायतों का रिकार्ड आज तक तबदील नहीं हुआ है । सरपंच लोग पांच पांच हजार रुपया खाए बैठे हैं और रिकार्ड नहीं दे रहे हैं । कहते हैं कि कोर्ट में केस दर्ज कराओ लेकिन मैजिस्ट्रैट केस खत्म कर देते है' । मै कहता हूं कि अगर सरकार के रिकार्ड लेने के साधने नहीं हैंतो यह काम कैसे चलेगा । इस बारे में एक्शन लिया जाए ताकि सरपंच रिकार्ड दें और पब्लिक का नुक्सान न हो । कई बातें ऐसी है' जिनके लिये मै सरकार को बधाई देता हूं । एक चीज नशाबन्दी के बारे में की गई है और सरकार ने विश्वास दिलाया है कि नशाबंदी की जाएगी । बलबगढ और फरीदाबाद का जो फैक्टरी एरिया है वहां जमीन काफी तेज है पैसों में खरीदी गई । लेकिन वह लौग अधिकतर वह पैसा शराब में व्यर्थ खर्च कर चुके हैं और अब वह मुहताज है । नशाबन्दी का कदम बहुत अच्छा है । शराब के इस्तेमाल से जो बरबादी होती है उसकी कई मिसालें हुमारे नोटिस में हैं । लोग शराब पी– पी कर अपनी जमीन बेच देते है' और पैसा बरबाद कर देते है' और कई तो अब कंगाल हों चुके है' । हुमारे देहातों में इसका बहुत बुरा रिवाज है और भयानक बीमारी है । इसलिए सरकार को बन्द ही कर देना चाहिए । इस के अलावा सरकार ने 26 जनवरी, 1 969 से हरियाणा के दफतरो में हिन्दी लागू को है, इसके लिए मैं सरकार को मुबारिकवाद देता हूं । हरियाणा के देहातों में ज्यादातर लोग

हिन्दी जानते हैं और सब काम हिन्दी में करना चाहते हैं । इन शब्दो के साथ मे आप का शुक्रिया अदा करता हुं ।

चौधरी माडू सिह मलिक (हसनगढ) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, वित्त मन्त्री महोदया ने एप्रोप्रिऐशन बिल के द्वारा एक अरब, 94 करोड़, 63 लाख, 86 हजार 495 रुपये की मांग की हूँ । यह जो मांग की हूँ यह इस लिये आर्टू है कि दो रोज बहुम के बाद वजट पास हुआ, उसमें जो डिमांड्ज थीं उन पर बहस होती रही और आज बहस के बाद सारी डिमांड्ज मन्जूर हो चुकी है । लेकिन बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि हमारे विरोधी पक्ष के भाइयों ने इस बजट अधिवेशन का बहिष्कार किया है । सैशन बुलाने से पहले, यहां पर विरोधी पअ की ओर से सदन के बाहर यह प्रचार किया जाता रहा था कि सरकार बजट सैथन बुलाने से डरती है । जब गवर्नर साहिब की तरफ से अधिवेशन बुलाने का संदेश गया तो उस वक्त यह कहने लग गये कि एक दिन सैशन बुलाने के वाद यानी गवर्नर एड़ैस के वाद इस अधिवेशन को मुल्तवी कर दिया जायेगा क्योंकि सरकार स्थिर नहीं है । आखिर अधिवेशन शुरू हुआ, गवर्नर साहिब का एड़ैस हुआ और उस के ऊपर ग्रस हुई । इस के बाद यहां सदन मे विरोधी पक्ष की तरफ से हंगामा हुआ, उस हंगामे के परिणामस्वरूप स्पीकर साहिब मे एक सदस्य को बाहर जाने क आदेश दिया । उस सदस्य ने आदेश नही माना । स्पीकर साहिब के आदेश के बावजूद और मारर्शल के आने के बावजुद भी तीन चार सदस्य उन्हे वाहर जाने से रोकते रहे । उस

के बाद जो कुछ हुआ वह हाउस के सामने है, सब भाई इस को जानते है' । विरोधी पक्ष के भाइयों ने. बजट पर बहस करने का जो बहिष्कार किया है उसके लिए बे स्वयं खुद जिम्मेदार हैं । इस में सरकार की तरफ से या सरकारी बैंचिज की तरफ से कोई ऐसी बात नहीं हुई जो कि नियम के विरुद्ध हो । सरकार की तरफ से और ट्रैजरी बैंचिज की तरफ से यही कोशिश होती रही कि सैशन यानी सदन का काम ठीक तरह से और नियमानुसार चलता रहे अगररू ये भाई सदन से वाहर हैं तो वहू अपनी गल्ती की बजह से हैं । सदन के बाहर पब्लिक को यह दिखानेकी कोशिश की कि चूंकि हमारे चार सदस्यों को बाहर निकाल दिया है इस लिये हुमने वाइकाट किया है ऐसी बात नहीं हूँ । किसी किस्म का धोखा ट्रैजरी बैंचिज की तरफ से नहीं हुआ । उन चार मैम्वरों को वाहर निकालने का फैसला हाउस ने किया और यह इस लिये किया कि हाउस के डैकोरम को कायम रखने के लिये आवश्यक हो गया था कि वे स्पीकर के हुक्म की अवहेलना न करे । जब स्पीकर की बात नहीं मानी जायेगी तो हाउस का डैकोरम नहीं रहेगा । जो कुछ हुआ, उस के लिये खुद विरोधी पक्ष के भाई जिम्मेदार हैं । बजट पास हो गया, अगर वे यहां होते तो अपनी राय जाहिर करते, और अच्छे सुझाव देते तो अच्छा था । जनता ने उन्हें यहां जिस काम के लिये भेजा था उस डयूटी को पूरा करते सैशन का बहिष्कार करके तो वे अपने फर्ज की कोताही कर रहे हैं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारे सूवे में दो तीन साल से जो हालात रहे, जिस तरह से उथल पुथल हुई, जिस तरीके से सरकारें बदलती रही, उसके बाद मिडटर्म पोल हुआ और जनता ने कांग्रेस के अन्दर विश्वास जाहिर कियां । उस विश्वास को पूरा करने के लिए सरकार का यह फर्ज है कि सरकार जनता के उन सवालो को पूरा करे जो उन्होंने वोट देते वक्त उठाये थे । जनता आखिर क्या चाहती है? जनता चाहती है अच्छा प्रशासन, स्थिर प्रशासन, सुथरा प्रशासन और वे लाग प्रशासन ।' आपने देखा है कि जब से इस सरकार ने काम संभाला है सब से इस छोटे से प्रान्त में कोई झगडा नहीं हुआ शान्ति के साथ प्रशासन चलना रहा । डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगर हमने जनता का विश्वास प्राप्त कर लिया और जनता को ठीक प्रशासन दिया तो कोई वजह नहीं कि कांग्रेस सरकार जों है वह यहा पर कायम न रहे । डिप्टी स्पीकर साहिबा, आम आदमी चाहता क्या है–– आम आदमी चाहता है कि उसे इन्साफ मिले और उस का काम ठीक तरह से चले ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं सरकार का ध्यान दो तीन बातों की तरफ दिलाना चाहता हूं । कोआप्रेटिव डिपार्टमैंट आम जनता के लिये बड़े फायदे की चीज है । इस के बारे पहले भी मेरे कई भाई बतला चुके .हैं कि इस महकमा के अन्दर अफसरान में नहीं बल्कि कोआप्रेटिव सोसाइटियों के बनाने वाले जो लोग है' उन के अन्दर बड़ी कुरप्शन है । कोआप्रेटिव सोसाटीज बनाई जाती है किसी एक कुनबे के आदमी मिल कर अपने ही घर के आदमियों

को मैम्बर बनाकर सोसाइटी बना लेते है । आम आदमी को कोआप्रेटिव सोसाइटी से फायदा पहुचने का जो मतलब था वह इस से हल नहीं होता। ऐसी ऐसी क्रैडिट सोसाइटियां मौजूद ह' जिन में एक ही कुनबे के आदमी हैं थोड़े सूद पर बैक से कर्ज ले लेते हैं और आगे कर्जे पर दे देते हैं । रोहतक के अन्दर ऐसी सोसाइटियां मौजूद हैं । हाउस बिल्डिंग सोमाइटियां कई आदमियों ने बनाई हुई हैं । जिसमें एक ही कुनबे और एक ही घर के आदमी हैं या उनके अपने रिश्तेदार हैं । उस हाउस बिल्डिंग सोसाइटीज में जमीनें खरीदी जाती हैं, मकान बनाये जातेहैं और वह रुपया जो खर्च होता है, सैन्ट्रल बैंक से लिया जाता है । इस तरह इस रुपये का दुरुपयोग होता है । डिपटी स्पीकर साहिबा, आपके द्वारा में सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इन कोआप्रेटिव सोसाइटियों की तबदीली के लिये, देख भाल के लिये एक हाई पावर कमेटी बनाई जाए । इस तरह प्रान्त के अन्दर जो सोसाइटियां है उन की देखभाल की जायेगी और जो कुरप्शन होती है वह भी दूर हो जायेगी और जनता को कोआप्रेशन के अन्दर विश्वास हो सकेगा ।

6..00 P.M.

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इरीगेशन महकमा है, जिसका आम तौर पर जमीदारों के साथ ताल्लुक पडता है । इस महकमा की मारफत जमींदारों के मोधे बनते है' या उन की रीमाडलिंग होती है उस से आम तौर पर जमींदारो की शिकायत है । इन की रीमांडलिंग में

जो नये मोघे बने है' उन से पूरा पानी नहीं मिलता क्योंकि मोघे ऊपर लगाये जाते हैं जिस से उन के हक का पानी वहां नहीं पहुंचता । इसका प्रोसीजर बहुत लम्बा है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, इरीगेशन डिपार्टमेंट के दो अलग अलग महकमे है, एक रेवेन्यू का और दूसरा इंजीनियरिंग का । इंजीनियरिंग और रैवेन्यू का आपस में तालमेल नहीं मिलता । जिलेदार और डिपटी कलैक्टर रैवेन्यु कलैक्ट करते हं' और इंजीनियरिंग का महकमा जो है बह नहरो का काम करता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, पहले भी बजट में एक दफा था शायद सरदार प्रताप सिंह कैरों के समय की बात है, कि रैवेन्यू के महकमे को इरीगेशन महकमे से अलग निकाल कर सिबिल के मातहत करदिया जाए । अगर यह हो जाए तो रवेन्यू का महकमा जो हूँ बह आपके लिये ज्यादा पेईग हो सकेगा और ज्यादा मुफीद साबित हो सकेगा ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह ठीक वै कि टयूबयैल बहुत लगे है । हमारे मुल्क के अन्दर प्लेनिग जिस तरीके से होती है वह तो ठीक होगी लेकिन उस में एक कमी है । टयूबवैल के. लिये हमारे लोगों के अन्दर बड़ी क्रेज है लेकिन टयूबवैल्ज लगने वहां चाहियें जहां ट्यूबवेल कामयाब हो । हमारे लोग जो हैं बहूत ऐसी जगह टयुबवैल .लगा रहे है जहां पानी नीचे अच्छा नहीं है और कुछ दिनों के वाद उन के टयूबवेल्ज बेकार हो जाते है' । पहले यह सर्वे होना चाहिये कि किस इलाके के अन्दर टयूबवैल्ज कामयाब हो सकते है' ताकि लोग अपने इस फजूल खर्चे से बच सकें और

गवर्नमेंट से जो वहू कर्जा लेते है' उस मे उन्हें छुटकारा मिल सके । टयुबवैल उस इलाके लिए में लगाए जायें जहां वे कामयाब हो सकते है और जहां वे कामयाब नहीं हो सकते वहां नहरों का पानी दिया जाए । इससे नहरों का पानी उस इलाके में ज्यादा पहुंचेगा जहां टयूबबैल कामयाब नहीं हैं । नहरें आपकी बड़ी वड़ी है' । उन के साथ साथ वाटर लौगिन्ग पहुंचा हुआ है । उस वाटर लौगिन्ग को नहरों के साथ साथ टयुबवैल लगाने से दूर किया जा सकता हूँ । आपके रोहतक शहर में, किलोई गांव जो चौधरी रणबीर सिंह जी का है और लाडौत आदि गांव के रकवे में लाखों एकड़ जमीन वाटर–लौगिन्ग से खराब हो चुकी हे । अगर वहां नहर के साथ साथ टयूबवैल लगाए जाएं तो एक तो वाटर–लौगिन्ग कम हौ जाएगी और दूसरे टयुबवैल के पानी को नहर के पानी में डालकर आगे ले जाया जा सकता वै जहां पानी की कमी हो । रोहतक शहर, जैसा मैंने अर्ज किया, नहर के साथ साथ दिल्ली की तरफ बढ रहा है ओर उधर से मालौठ वाच बिल्कुल नजदीक आ गई है, । मौडल टाऊन, तथा मैडिकल कालेज, गवर्नमेंट कालेज, छोटूराम कालेज, ये सब इंस्टिच्यूशन्ज उस की वजह से तबाह होते जॉ रहे हँ' । अगर नहर के साथ साथ टयूबवैल लगा दिये जाये तो न सिर्फ शहर के इंस्टीच्युशन बन सकते है बल्कि शहर का वाकी रकबा भी बच सकता है ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, एजूकेशन के लिये काफी रकम रखी गयी है । एक सवाल लाला दया कृष्ण जी ने पूछा था कि एजूकेशन में

लड़कियों की और लड़की की तादाद में कितना फर्क है? इस. सवाल के उत्तर के जरिए, डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह पता लगा कि लड़कियां बहुत कम पढ़ती हैं और लड़के ज्यादा पढ़ते है' । इस बात को शायद बहिन ओमप्रभा जी नहीं मानेंगी मगर मेरा ख्याल यह हे कि जब तक लड़कियों के स्कूल लड़कों के स्कूलों से अलग नहीं होंगे उस वक्त तक लड़कियों की तादाद बढ़ेगी नहीं । मैं सुझाव दूंगा कि अब अगले साल जो स्कूल अप–ग्रेड किये जायें या नये स्कूल खोले जायें तो देहात के अन्दर लड़कियों के स्कूल ही खोले जाएं । अपग्रेड भी लड़कियां के ही स्कूल किये जायें । पहले ही लड़कों के स्कूलों की तादाद काफी है । लड़की के हाई–स्कूल भी काफी हैं । तेकिन लड़कियों के स्कूल बहुत कम हैं । जब तक पढ़ी लिखी लड़कियों की तादाद काफी नहीं होगी उस वक्त तक हमारा प्रान्त ज्यादा तरक्की नहीं कर सकता।

उपाध्यक्षा : चौधरी साहिब, आपका टाईम हो गया है ।

चौधरी माडू सिंह मलिक : डिप्टी स्पीकर साहिबा, केवल ए क मिनट और दे दीजिये क्योंकि मैं एक दो मिनट छोटी सी बातें अर्ज करके समाप्त कर दूंगा । सरकार ने तनख्वाहों के जी ग्रेड बनाए है उसके बारे में .मैं एक अर्ज करना चाहता हूं । जिलेदार और नायब तहसीलदार इन दोनों की क्वालिफिकेशन एक ही है । मगर नायब तहसीलदार के ग्रेड तो रिवाइज कर दिये गए हैं और जिलेदार के नहीं । इस लिये मेरी सरकार से प्रार्थना है कि ग्रेड नायब तहसीलदार का है वही जिलेदार का होना चाहिये ।

असिस्टैन्ट ट्रेजरी अफसर का ग्रेड 325—450 का है । नायब तहसीलदार का ग्रेड 250— 15— 400 है । डिप्टी स्पीकर माकहबा, नायब तहसीलदार की टयूटी असिस्टैन्ट ट्रैजरी अफसर से किसी तरह मी कम नहीं है बल्कि नायब तहसीलदार को ज्यादा काम करना पड़ता है । इस लिये नायब तहसीलदार का ऐड ज्यादा नहीं तो असिटैन्ट ट्रेजरी अफसर के बराबर तौ होना ही चाहिये । इसी तरह वैटनरी डाक्टरों का है । उन के ग्रेड भी बढने चाहिये क्योंकि उन की और दूसरे डाक्टरों की क्वालिफिकेशन ए क ही होती हूँ ।

इन शब्दों के साथ, डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपका धन्यवाद करता हुआ मै अपना स्थान लेता हूं ।

उपाध्यक्षा : देखिए, अव मेरे पास सारे ही 24 मिनट हैं । तीन मैम्बर बोलने वाले है' । इस लिये मैं रिक्वैस्ट करूंगी कि प्रत्येक मैम्बर 6—6, 7— 7 मिनट से ज्यादा न बोलें । डाक्टर रामेश्वरदास जी अब बोलेगे ।

चौधरी रणधीर सिंह : टाईम बढ़ा दो ।

उपाध्यक्षा : उस के लिये मुझे हाउस की सैन्स लेनी पड़ेगी । वैसे मै समझती हू कि अब समय नहीं बढ़ना चाहिए क्योंकि आज दो सीटिंग्ज हुई हैं । सुबह से सब लोग बैठे हैं । हमे अपने प्रैस वालों, औफिसर्ज और रिपोटर्ज आदि का भी तो ध्यान रखना चाहिये ।

कुछ सदस्य : और टाईम अब नहीं बढना चाहिये..

उपाध्यक्षा : डा० रामश्वरदास जी आप बोलिये ।

डा० रामेश्वर दास गुप्ता (जगाधरी) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, दो दिन से इस सदन में साल 69 –70 के बजट के ऊपर बहस चल रही है । यह बजट जो सरकार ने पेश किया है, एक बहुत अच्छा दूंलैन्स्ड बजट है । इसमे बावजूद घाटे के जनता के ऊपर कोई नए टैक्सीज का बोझ नहीं डाला गया हूँ । इसमे काफी अच्छी अच्छी चीजें हैं मिसाल के तौर पर ओल्ड एज पैन्शन, जो हुमारे से पहली राव सरकार ने बन्द कर दी थी और जिस से बे–सहारा बुजुर्गो को बड़ी तकलीफ हुई थी, उस को रैस्टोर कर दिया है । रैस्टोर ही नही किया है बल्कि पैन्शन की राशि 15 रुपये से बढ़ा कर 25 रुपये कर दी गई है, जो कि एक बहुत ही सराहना काम दे । इमके लिपे बेसहारा वह लोग हकूमत को दुआएं देंगे । बिजली के क्षेत्र में काफी तरक्की हुई है । बिजली का फैलाव भी बहुत ज्यादा हुआ है । इस के लिये भी सरकार मुबारिकबाद को पात है । बच्चों की आठवीं तक की शिक्षा को मुक्त किया है । सरकारी कर्मचारियों के वेतन और महगाई भत्ते को बढाया है । ये बहुत सारे काम ऐसे है जो बहुत सराहनीय हैं और मैं, डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपके द्वारा वित्त मत्री साहिबा को इसके लिये वधाई देता हुं ।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, टाइम चूंकि बहुत थोड़ा है इस लिये मै दो तीन बातें मुख्तसिर कप से कह रहा हूं । अम्बाला जिएं के हालात के बारे में बुजुर्गवार खान साहिब ने बहुत कुछ कह दिया है मदर इन को शराब हालत पर जितना भी कहा जाए थोड़ा है । मैं आपका टाइम उस के ऊपर और इस्तेमाल नहीं करना चाहता जो खान साहिब ने कह दिया है ।

मैं उन से सहमत हूं । मेरी जो कंस्टीच्पुएंसी है जगाधरी वह एक मिली जुली कस्टीच्यूएंसी है । उसमे शहरी रकबा भी है और देहाती इलाका भी है । तो हमें दोनों प्रोब्लम्ज को फेस करना पड़ता है । हमारा देहात जो है वह गन्ना प्रोडयूस करने वाला देहात है ।

हमारे गन्ना पैदा करने वाले देहाती हैं और आजकल ये गन्ने की प्रोब्लम बड़ी भारी प्रोब्लम है । इस साल वहां जमुनानगर में काफी आन्दोलन हुआ, काफी शोर शराबा हुआ । गन्ने को किसान बीजता है, उसकी परवरिश करता है, उस को पालता है मगर जब बेचने का वक्त आता है तो मिल वाले उस के ठेकेदार बन जाते हैं । उस को बेचने की खुली इजाजत होनी चाहिये । लेकिन उस किसान को मजबूरन उसी ठेकेदार के पास जाना पड़ता है और उस गन्ने के काश्तकार को उस की पूरी कीमत नहीं मिलती है ।

कई दफा कोशिश की गयी और डेपूटेशन लेकर भी इस हम मिले । बहिन चन्द्रा– वती को भी वहां बुलाया गया और उन को भी वहां गन्ने वालों की तकलीफें समझायी गयीं मगर नतीजा कुछ नहीं हुआ । मैं गवर्नमेंट से यह प्रार्थना करूंगा कि गन्ने की कीमत का फसल के तैयार होने से पहले ही फैसला हो जाना चाहिये । इस बार गन्ने की कीमतें बहुत लेट फिक्स की गयीं जिस से दिसम्बर के मिडल में मिल चालू किये गये और उस वक्त खुश्की की वजह से गन्ने काफी सूख गये जिसके कारण जमींदारों को काफी घाटा उठाना पड़ा है । इस लिये मैं सरकार से फिर प्रार्थना करता हूं कि गन्ने की कीमतें चाहे पैन्ट्रल गवर्नमेंट के हाथ में हों या स्टेट गवर्नमेंट के हाथ में हों फसल तैयार होने से पहले भी मुकर्रर की जानी चाहिये ।

दूसरी बात यह है कि हमारी पड़ोसी स्टेट यू. पी. के अन्दर जव मिल चालू हो जाती है तो वे अपने घरेलू करैशर चलाते हैं । उनकी गवर्नमैन्ट की तरफ से लाइसेस दिये जाते हैं लेकिन हमारे यहां जमुनानगर के एरिया में दस मील का एरिया मुकर्रर किया हुआ है कि इतने एरिया में कोई करैशर नहीं लगा सकता । उन्होंने रिंग सैन्टर बनाये हुए हैं कि इतने डायमिटर के अन्दर कोई करैशर वगैरह नहीं लग सकता है । डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं यह चाहता हूं कि जिस प्रकार से यू. पी. के अन्दर यह शर्त लगायी हुई है कि मिल चालू हो जाने के बाद जमींदार चाहे अपने गन्ने को मिल में दे या करैशर पर दे । उस की मर्जी पर छोड़

दिया जाता है और उस को जहां पर ज्यादा कीमत मिले उसी जगह दे । इसी प्रकार से हरियाणा के अन्दर भी यह शर्त लागू होनी चाहिये ।

उपाध्यक्षा : आप के केवल दो मिनट रह गये हैं ।

डा० रामेशवर दास गुप्ता : डिप्टी स्पीकर साहिबा, हमारा इलाका कुछ शहरी इलाका भी है । जगाधरी एक बहुत पुराना इन्डस्ट्रीयल टाउन है । वहां पर पीतल के बर्तन बनाने की बहुत पुरानी सैकड़ों सालों से इन्डस्ट्री चली आ रही थी लेकिन पिछले काफी दिनों से वहां काफी बुरी हालत हो गयी है ।

(इस समय 6 बज कर 12 मिनट पर श्री अध्यक्ष पुन पीठासीन हुए)

स्पीकर साहिब, मैं सरकार से अर्ज करना चाहता हूं कि उस पीतल की इन्डस्ट्री को सरकार को बचाने की कोशिश करनी चाहिये । स्पीकर साहिब इस इन्डस्ट्री से स्टेट को दूसरी स्टेटों से साल में पांच सात लाख रुपये की आमदनी होती थी और इन्डस्ट्री से 10–15 हजार आदमियों का गुजारा हो जाता था परन्तु अब न तो आमदनी ही हो रही हूँ और न ही उन मजदूरों को कुछ मिल रहा है । इस इन्डस्ट्री में सब से बड़ी जो दिक्कत आयी है वह यह है कि यू. पी. सरकार पीतल के बर्तनों पर केवल आधा परसैन्ट सेल टैक्स लेती है परन्तु हरियाणा सरकार छः परसैन्ट लेती है । इस लिये इस को यू. पी. के बराबर ही किया जाना चाहिये । सैन्ट्रल सेल्ज टैक्स जो तीन परसैन्ट लिया जाता है । जब कोई आदमी

बाहर बर्तन मंगाता है तो उस को ढ़ाई परसैन्ट ज्यादा देना पड़ता है । जिस प्रकार से अगर किलो का भाव दस रुपये हो तो व्यापारी को 25 पैसे फालतू देने पड़े । इस लिये यह भी आधा परसैन्ट होना चाहिये । अब ज्यादातर व्यापारी हरियाणा की बजाए यू. पी. से बर्तन मंगाते हैं । इस तरह से यह इन्डस्ट्री हरियाणा से मुन्तकिल हो यू. पी. में जाने लगी है । स्पीकर साहिब इस पुरानी इन्डस्ट्री को खत्म होने से बचाया जाये । जो हरियाणा में सेल्ज टैक्स लगता है उस को भी कम करके यू. पी. के बराबर कर दिया जाये । अब स्पीकर साहिब मैं थोड़ा–सा हरिजनों के विषय में भी जिक्र करना चांहूगा

श्री अध्यक्ष : आपने काफी समय ले लिया है इस लिये आप अपनी स्पीच खत्म करै ।

डा० रामेश्वर दास गुप्ता : जनाब, अभी खत्म करता हू । हरिजनों का मसला है, इस पर काफी मैम्बर साहिबान बोल चुके हैं । मैं इस विषय पर ज्यादा टाइम नहीं लेना चाहता हूं । स्पीकर साहिब हरिजनों को सरप्लस लैन्ड अलाट होती है उस अलाटमेंट में कुछ पटवारी लोग और कुछ दूसरे सरकारी अफसर लोग हेराफेरी करते हैं । एक्चुअली वह जमीन उन लोगों को नहीं मिलती है । उन लोगों को तो पोजैशन नहीं मिलती है । मेरे इलाके में बालचोर गांव है वहां पर कुछ फारैस्ट डिपार्टमेंट की जमीन थी । उस जमीन पर कुछ गरीब हरिजन बसे हुए थे । वह कोई 7 0–80 किल्ले जमीन थी । फारैस्ट डिपार्टमैंट ने इस बहाने से कि वहां

पर प्लानटेशन करेंगे वह जमीन ले ली । न वहां पर कोई प्लानटेशन हुई न कुछ और, उन गरीब हरिजनों को बेघर बना दिया गया । इस लिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि इस ओर अवश्य ध्यान दिया जाये ।

स्पीकर साहिब मेरी कांस्टीच्यून्सी में न कोई नयी सड़कें वनी हैं और न ही आइन्दा के प्रोग्राम में नजर आती है । जगाधरी और यमुनानगर ये हरियाणा के बड़े इम्पोर्टेट टाउन हैं । यहां पर गवर्नमेंट का कोई कलेज वगैरह नहीं है । पब्लिक ने अपनी ऐफर्ट से यहां पर कालेज खोला हुआ है । इस लिये मैं आप के जरिए सरकारसे प्रार्थना करूंगा कि यहां एक गवर्नमेंट की ओर से साइंस कालेज खोला जाये । इन चन्द शब्दों के साथ मैं आप का . शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया ।

चौधरी पोकर राम गोदारा (फतेहाबाद) : स्पीकर साहिब, जो बजट यहां हाउस में पेश किया गया है वह काबिले तारीफ है । उस के लिये मैं सरकार को बधाई देता हू । इस पेशा कियसा गया है वह काबिले तारीफ है उसके लिए सरकार को बधाई देता हूं मेरे हल्के में जो घग्गर बैल्ट है उस में आज तक कोई भी काम नहीं हुआ है । हां इस लोकप्रिय सरकार ने जरूर कुछ थोड़ा–बहुत काम किया है परन्तु इस से पहले जो सरकार थी उसने कोई भी काम नहीं किया था ।

मेरे हल्के में सड़कों का भी कोई विशेष प्रबन्ध नहीं है । केवल दो ही सड़कें हैं एक टोहाना से सातरूगढ है और दूसरी फतेहबाद से बरनाला । इस लिये यहां सड्कों का विशेष रूप से प्रबन्ध किया जाना चाहिये । स्पीकर साहिब मेरा हल्का सारे हरियाणा में सब से बड़ा हल्का है । इस में कोई 120 गांवों के करीब हैं । इतने बड़े हल्के में सड़कों का प्रबन्ध न होना बड़े दुःख की बात है । इस लिये जल्दी से जल्दी प्रबन्ध किया जाना चाहिये ।

स्पीकर साहब मेरे हल्के की जमीन बड़ी जरखेज जमीन हूँ । वहां पर पानी भी काफी ऊंचाई पर मिल जाता है इस लिये वहां टयुबवैल बड़ी आसानी से लग सकते हैं । स्पीकर साहिब, आपके जरिए मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि वहां पर जल्दी से जल्दी बिजली पहुंचायी जाये ताकि वहां टयूबवैल लग सकें और जमींदारों की खेती की पैदा– वार में वृद्धि हो सके । दूसरे मेरे हल्के की जमीन में नरमा (कपास) की पैदावार सब से अधिक हो सकती है । फतेहाबाद के हल्के में नरमा पैदावार के विषय में तो एक्सपर्ट की यह राय है कि सारे हिन्दुस्तान से औसत पैदावार ज्यादा है । इस लिये वहा टयूबवैलों का प्रबन्ध किया जाना चाहिये।

स्पीकरसाहिब, मेरे हल्के में फ्लड्ज हूर दूसरे–तीसरे साल आ जाते हैंजिसके कारण हजारों एकड़ भूमि खराब हो जाती है । तो इस फ्लड्ज को रोकने के लिये भी सरकार को कोई न कोई प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये । मेरे हल्के में जब फल्ड आता है तो रंगाई से हो कर पानी फतेहबाद के पास इकटठा हो जाता है जिससे वह

पानी वहां झील की शक्ल अख्तियार कर जाता है । इस के नजदीक के एरिया में जो मुंशी माईनर और रताखेडा माइनर हैं उन को काट देता है जिसके कारण अगले एरिया में उन से जो पानी जाता है वह बन्द हो जाता है और अगला इलाका भी मैरूड हो जाता है । इस लिये यहां साइफन बनना चाहिये । यहां पर एक मंडी बननी चाहिये चूंकि टोहाना बुडलाडा, मानसा, ये सब पजाब के अन्दर चले गये इस लिये इस जगह मंडी का होना जरूरी है ।

एक बात मैं हौस्पिटल्ज के बारे में कहना चाहता हूं । इतने बड़े हल्के के अन्दर हस्पताल नहीं है इस लिये यह जरूरी है कि यहां पर हस्पताल खोले जायें । स्कूलों की हालत भी, जैसे कि हमारे कई भाईयों ने अपने अपने हल्के के लिये कही हैं, मेरे यहां ठीक नहीं है । भिवानी, हांसी, हिसार, सब जगह तो कालेज हैं, लेकिन फतेहबाद के अन्दर एक भी कालेज नहीं है इस लिये वहां एक कालेज जरूर होना चाहिये । इस के इलावा, जो वहां पर तहसील हूँ वह एस. डी. एम. कोर्ट से दूर है, इस लिये लोगों को एक वक्त में दो तारीखें भुगतना मुश्किल हो जाता है । लिहाजा मेरी प्रार्थना है कि तहसील को एस. डी. एम. की कोर्ट के साथ लाना चाहिये नहीं तो तहसील में अलग वकील रखा जाता है और कोर्ट के लिये अलग वकील रखा जाता इस तरह से डबल फीस देनी पड़ती है । सरकार कहती है कि हम आहिस्ता आहिस्ता सारे काम करेंगे और इसी सिलसिले में हम को नशाबन्दी के बारे में भी यही जवाव देती

है कि हम नशाबन्दी भी आहिस्ता आहिस्ता बन्द करेंगे । कई आदमी तो यहां तक कहते हैं कि अगर जीवन में नशा नहीं है, तो वह जीवन नहीं है । लेकिन मैं कहता हूं नशे भी कई किसम के होते हैं—जैसे एक तो जवानी का नशा, दूसरे पैसे का नशा, तीसरे पद का नशा जिसकी वजह से लोग दूसरों को हकीर समझते हैं । और जो हकूमत का नशा है वह तो सब से बढ़ कर नशा है । मैं पोस्त का नशा, अफीम का नशा, भंग का नशा भी गिना देता लेकिन मेरा मतलब तो सिर्फ शराब की नशेबन्दी से है जिसकी वजह से लोगों को बहुत नुक्सान होता है उस को बन्द करने की तरफ सरकार का जल्दी से जल्दी कदम उठना चाहिए । दस इतना कह कर स्पीकर साहिब, मैं अपनी बात खत्म करता हूं ।

चौधरी प्रभु राम (छछरौली अनुसूचित जाति) : जनाब मैं लम्बी चौड़ी बहस में तो नहीं पड़ना चाहता, मैं तो सिर्फ आपके जरिए अपने चीफ मिनिस्टर साहिब को बधाई देता हूं क्योंकि उन्होंने मेरे इलाके में बिजली का प्रबन्ध कर दिया है । स्पीकर साहिब मेरे इलाके में छोटे छोटे काश्तकार हैं जो ट्यूबवैल्ज का खर्चा बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं । मैं आपके जरिए सरकार से प्रार्थना करता हूं कि मेरे इलाके में सरकारी ट्यूबवैल्ज लगाए जाएं ताकि वे लोग भी तरक्की कर सके जो अपने खर्चे से ट्यूबवैत्त्ज नहीं लगा सकते । स्पीकर साहिब, मेरे इलाके में फूस के मकान होते हैं जो कि आग लग जाने पर जल जाते हैं । जिससे कि लोगों का जान माल का नुक्सान होता है । मैं आपके जरिए सरकार से प्रार्थना

करता हूं कि उन लोगों के लिए टीन की चादरें कंट्रोल रेट पर सप्लाई की जाएं और उन के पक्के मकान बनाए जाएं तो सरकार की बड़ी मेहरबानी होगी । हमारे इलाके में महकमा नहर ने वैटरमेंट फीस लगा दी है, जो बिल्कुल नाजायज है । यह बैटरमेंट फीस वापिस ले ली जाए । स्पीकर साहिब, मेरे इलाके में पांच छ रू पुल हैं जो कि टूटे पड़े हैं और अधूरे हैं इन को फिर से बनाया जाए और मुकम्मल किया जाए ।

स्पीकर साहिब, मेरे इलाके में कुछ जंगलात की जमीन है जो काफी दिनों से हरिजनों के द्वारा इस्तेमाल होती रही है वही हरिजन इस पर काश्त करते थे अब उस जमीन पर महकमा जंगलात ने पौधे लगाने शुरू कर दिये, इस लिये वह हरिजन बे–जमीन हो गये हैं । मेरी प्रार्थना है कि उस जमीन पर जंगलात न लगाकर हरिजनों को दे दी जाए । साथ ही मं यह भी कहना चाहता हुं कि मेरे इलाके में हरिजनों के लिये जमीन खरीदने के लिये सरकार कर्ज दे ताकि वह जमीन खरीद सके और खुशहाल हो सकें । स्पीकर साहिब, आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया इस के लिये आपका धन्यवाद ।

लाला किशोरी लाल (कालका) : स्पीकर साहिब, मैं आपका धन्यवादी हूं कि आज भी आपने मुझ को बोलने का समय दिया है । कल मैं बोल रहा था उस के बाद डिप्टी स्पीकर साहिबा ने कह दिया कि मेरा टाईम हो गया । जनाब, मैं आपके जरिए सरकार को अपने हल्के की चंद बातें बतलाना चाहता हूं । मेरे हल्के मे

मनीमाजरा पड़ता है, जिसमें मनीमाजरा समिति है । उस ने लोगों पर टैक्स तो लगाये हैं लेकिन वह समिति वहां डिवैल्पमेट नहीं करती । लोग टैक्स देने के काबिल नहीं हैं लेकिन वहां पर छः छः साल का इकट्ठा लगा दिया है जिसका नतीजा यह होता है कि जो टैक्स की उगराही करने वाले हैं और लोगो कह देते है कि हम आपका टाईम बढ़ा देंगे, लेकिन कुछ दिनो के बाद वही आफिसर फिर आ जाते हैं और दस बीस रुपये लेकर फिर अदायगी का टाइम बढ़ाने की बात कहते हैं । इस तरह वहां पर काफी कुरप्शन बढ़ रही है । यह सिर्फ मनीमाजरा में ही नहीं, जहां एच. एम. टी. है उससे लगते हुए मल्लाह आदि कई गांव हैं, उन पर भी इसका असर है, इस लिये चीफ मिनिस्टर साहिब से दुर्खास्त करता हूं कि बह कुछ ऐसा करें कि पांच साल का पुराना टैक्स एक बार में न लिया जाए । अगर समिति ने टैक्स लगाना ही था तो वह आये साल लगाती ताकि लोग टैक्स दे सकते ।

इसके बाद जनाब मैं उस एरिया की बात करना चाहता हूं जो फायरिंग रेंज एरिया है । मेरे इलाके में 70–80 गांव हैं उन को कहा जा रहा है कि खाली कर दो, लेकिन उन को आल्टरनेटिव नहीं दिया जा रहा । इस लिये मेरे कहने का मतलब यह है कि उन लोगों को उन की जमीनों के लिये कम्पेन्सेशन दिया जाए । जो कम्पन्सेशन दिया जाए वह आज की मार्किट की जो प्राईस रेट है उस के हिसाब से दिया जाए न कि सन् 1960 की मार्किट प्राईस के रेट से, चूंकि आजकल जमीनों की कीमत पहले से छरू

सात गुना पढ़ चुकी है । वह आदमी पहले से ही मुसीबत जदा हैं अगर वे अपने घर छोड़ कर जायेंगे और उन्हें पूरा कम्पन्सेशन कहीं मिलेगा तो उन को बहुत दुःख होगा । मैं सरकार से फिर आपके जरिए निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार इस बात में उन की मदद करे ।

इसके इलावा मेरी जो कांस्टीच्यूएंसी है, वह सेमी–हिल कांस्टीच्यूसी है, यहां पर' छोटी छोटी नदियां बहुत हैं । साथ ही इस एरिया में ऐसे गांव भी आते हैं जिनमें कुएं वगैरह नहीं हैं, उन में ट्यूबवैल्ज वगैरह भी नहीं लगाये जा सकते । तो जैसा कि मैने जिक्र किया कि छोटी छोटी नदियाँ हैं उन्हीं से पानी देने की स्कीम बनाई जाए और छोटे छोटे डैम लगाए जाएं ताकि वह एरिया सैराब भीहो सके औरलोगों को पीने का पानी भी मिल सके । अगर ऐसा न हुआ तो वहां पर न तो पैदावार ही हो सकती है और न ही लोगों की पीने के पानी की दिक्कत ही दूर हो सकती है । जो लोग पहले से ही गरीब हैं, वह लोग और भी गरीब हो जायेंगे । पंपिंग सैट से भी अगर पानी पहुंचाने की स्कीम बनाई जाए तो भी बहुत मुश्किल बात है । इस लिये डैमों की तरफ ख्याल किया जाए ।

एक बात जो बहुत जरूरी है, वह यह है कि कालका और पिंजौर के रास्ते से रोजाना सौ डेढ़ सौ बसों के आने जाने की आमदोरफ्त है । ये बसें कालका के वाजार में से चलती हैं जिसका नतीजा यह होता हे कि रोज एक दो आदमी मर जाते हैं या

एक्सीडेंटिड हो जाते हैं । इस लिये वहां पर बसों के लिये एक बाइ–पास बनाया जाए ।

चौधरी सरूप सिंह जी ने डिफैक्शन का जिक्र किया । हमारा इलाका अम्बाला है जिसमें डिवेल्पमेंट कम हुआ है उस में डिफैक्शन भी कम हुई है । नौ एम. एल. एज. वहां से चुन कर आये हैं जिनमें से एक ने भी डिफैक्शन नहीं की । यह तो डिफैक्शन की बात रही, लेकिन इस का क्रैडिट मिलना चाहिये था मगर फिर भी हमारे अम्बाले के इलाके में डिवैल्पमेंट का काम नहीं हो रहा । मेरी प्रार्थना है कि इस एरिया में भी कुछ डिवैल्प करवाई जाए ।

मुख्य मन्त्री (श्री बंसी लाल) : स्पीकर साहिब मुझे बड़ा अफसोस है कि हमारे भाई विरोधी पार्टियों के सदस्य सदन में हाजिर नहीं हैं । वैसे बहाना तो उन्होंने वाक आऊट करने का किया लेकिन हकीकत तो आप जानते ही हूँ' कि पिछले दो महीनो से वह बड़े लम्बे लम्बे कलेम करते रहे और पब्लिक मीटिंग्ज में यह कह कर आए कि हम 28 तारीख को गवर्नमेंट को टापल करदेंगे और इसके इलावा इन्होंने लोगों को यह कहा कि आप लोग चन्डीगढ अपने खर्चे पर आ जाना वापिस हम आप को सरकारी बसों पर भेज देंगे । लेकिन जब उनके सभी कलेम और बातें गलत साबित हो गई तो सिवाए इस के कि वह वाक आउट कर जाएं उन के पास कोई और चारा न था । एक बात वह बड़े जोर जोर से कहते हैं कि अगर हमारे चार मैम्बर ससपैड न किये. होते, तो शायद हम

गवर्नमेंट को टापल कर देते । मैं पूछना चाहता हूं कि क्या उन चार मैम्बरों को ससपेड करने के लिये सदन ने कोई गलत काम किया था । उन्होंने चेयर का अपमान भी किय।, हाऊस में डिसआर्डर भी किया और नारे भी लगाये । इस लिये हाऊस जस्टीफाइड था उन के खिलाफ एक्शन लेने में । हमारे सामने दूसरे प्रान्तों की मिसालें हैं जहां मैम्बरों को एक्सपैल भी किया गया था औरउन की सीटें भी खाली करवाई गई थीं । लेकिन यह हाउस उस हद तक नहीं गया । मैं कहता हूं कि उन चार मैम्बरों को क्या माइनोरिटी ने ससपेंड किया था, उन को भी तो मैजोरिटी ने ही ससपैडं किया था । अगर वह चार मेम्बर इन के साथ होते भी, तो भी यह कम ही रहते । स्पीकर साहिब विरोधी पार्टी के नेता सिद्धांत की बात करते हैं कि कांग्रेस पार्टी ने चार आदमियों को ससपैडं किया । पता नहीं वह यह बात कैसे कहते हैं, ससपैड करने की बात तो हाउस ने की थी । जो आदमी सिद्धांत की बात करते है' वह खुद भी तो कोई सिद्धांत की बात करें । एक तरफ सिद्धांत और दूसरी तरफ डिफैक्शन करवाना चाहते हैं, आज भी उन के अन्दर 9 आदमी डिफैक्टर मौजूद हैं । पहले इन को नौ मंम्बरों की सीटें खाली करवानी चाहियें । स्पीकर साहिब विरोधी दल के नेता पिछली बार कांग्रेस की टिकट पर इलैक्शन लड कर आए और कांग्रेस छोड़ कर चले गये और अब अगर वह सिद्धांत की बात करें तो वह कहां तक जायज है । अच्छा होता अगर वह बजट डिबेट में हिस्सा लेते और सदन की सारी कार्यवाही में शामिल होते । परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया जो कि खेद की

बात है । मैं कहूंगा कि उन्होंने ऐसा करके अपनी कंस्टीचुएसी के लोगों के साथ धोखा किया है । लेकिन इस के बावजूद भी स्पीकर साहिब मैं सरकार की ओर से यकीन दिलाता हूं कि विरोधी दल के नेता कोई भी अच्छा सुझाव सदन से बाहिर या सदन के भीतर जब कभी देंगे तो सरकार उसका स्वागत करेगी ।

स्पीकर साहिब, चण्डीगढ के बारे में चर्चा चलती है कि यह किस के पास रहे । इस बात का कोई सवाल ही पेदा नहीं होता कि चंडीगढ़ किस का है और किस के पास जाए । मै' यहांपर बताना चाहता हूं कि चंडीगढ़ हरियाणा का है और हरियाणा में ही रहेगा । कुछ मेम्बरों ने' चर्चा की कि जो पे कमेटी की रिपोर्ट सरकार ने मंजूर की है और सरकारी मुलाजमों को डी. ए. दिया है उन में कुछ कैटेगरीज ऐसी हैं जो कि शामिल कहीं की गई और कुछ केसिज में कमियां रह गई हैं । स्पीकर साहिब, मैं यह वायदा तो नहीं करता कि जिस कैटेगरी का मेम्बर साहिबान ने जिक किया है उन बातों को पूरा कर दिया जायेगा लेकिन मैं इतना विश्वास जरूर दिलाता हूं कि जो जायज बात होगी उस को मान लिया जायेगा और इस के लिये हमने फाइनेंस मिनिस्टर साहिबा को सदारत में कमेटी बना दी है जो कि जल्दी ही अपनी रिपोर्ट पेश करेगी और जो कमियां होंगी वह दूर कर दी जाएंगी ।

ट्रैक्टर्ज की डिस्ट्रीब्यूशन के बारे मे कह गया कि प्रापर नहीं है । मैं इस बात को मानता हूं कि पहले ट्रैक्टर्ज की डिस्ट्रीब्यूशन में हुई जिस की कि अब जांच पड़ताल हो रही है । आयदा के लिये

जो मेम्बरान ने अपनी राए दी थी कि डिप्टी कमिश्नरों को ट्रैक्टरों की डिस्ट्रीव्यूशन का काम दे दिया जाए हरियाणा सरकार का भी ऐसा ही इरादा था लेकिन ट्रैक्टरों की डिस्ट्रीब्यूशन का कंट्रोल सैटर का है, उन्होंने हमारा सुझाव नहीं माना । इस लिये इन की डिस्ट्रीब्यृशन तो एग्रोइंडस्ट्रीज कारपोरेशन ही करेगी परन्तु रुल्ज के लिये एक कमेटी फाइनेंस मिनिस्टर साहिबा की सदारत में वनाई गई है । खास तौर पर किसान को अब जब ट्रैक्टर का लोन दिया जाता है तो उस के सामने यह दिक्कत होती है कि लोन किस तरह मिले, अगर उसका ज्वायंट खाता हो तो उस को दिक्कत होती है । तो उन रूल्ज को रिलैक्स करने के लिये हम सोच रहे हैं और इस प्रोसीजर को सिम्पल करने के लिये .कोशिश की जा रही है । हरियाणा के असैट्स और लाइबिलिटीज की भी. चर्चा हुई । मैं याद. दिलाना चाहता ह कि मैने सवालों का जवाब देते हुए भी यह बात बताई थी और आज. भी दोहराता हूं कि असैट्स एंड लाइ।बलिटीज के बारे में सरकार हरियाणा के इंट्रैस्ट का पूरा पूरा ध्यान रखेगी और हम ने बहुत से केस दो साल के अंदर अंदर सैंटर को रेफर कर दिये हैं जो कि दो साल के अंदर अंदर करने थे और जो दो साल के बाद किये जा सकते हैं वहभी कर रहे हैं । इस के इलावा एक कमेटी चौधरी रणबीर सिंह की अध्यक्षता में वनाई ई जो असैटस और लाइबिलिटीज के केसिज को तैयार करेगी । इंडस्ट्रीज के लोन देने के तरीके को सिम्पलीफाई करने के लिये कहा गया । मैं बताना चाहता हूं कि सरकार इस बात पर विचार कर रही है । इस के इलावा फारेस्ट

डिपार्टमेंट की शिकायतों के बारे में कहा गया । यह बात दुरुस्त हैकि इस डिपार्टमेंट की खासी शिकायतें अ।ती हैं, सरकार उन की भी जांच पड़ताल करेगी । स्पीकर साहिब, बिजली के बारे में जिक्र किया गया कि सप्लाई रैगलर नहीं है, यह बात भी दुरुस्त है लेकिन जैसे कि वित्त मत्री साहिबा ने बताया है कुछ लाईने हमने औगमेंट कर दी हैं, कुछ नए सब–स्टेशन और स्टेशन बना दिये हैं । तो बिजली की कमी को दूर करने की कोशिश की जा रही है परन्तु इस को सप्लाई को रैगूलर करने के लिये दो साल और लग जायेंगे एक दम इस कभी को पूरा नहीं किया जा सकता इस के लिये मैं सदन से मुआफी चाहूंगा । प्रोहिबिशन की बात भी स्पीकर साहिब सभी मेम्बरान ने कही है और उनका यह फरमाना कि शराब नहीं होनी चाहिये दुरुस्त है । एक दफा रोहतक जिला में शराबबन्दी की गई थी तो वहां पर इतनी इलिसिट डिस्टीलेशन हुई थी कि उसी तरह शराब चलती रही और आखिरकार उसे तोड़ना पड़ा । मैं यह नहीं कहता कि अगर कोई कानून तोडने वाले हों तो यह कानून ही न रखें लेकिन मै यह कहना चाहता हूंकि जब तक चारों तरफ शराबबन्दी न हो तो ऐसा करना मुश्किल हो जायेगा । अगर एक जगह कर दें और दूसरी जगह चलती रहे तो लोग बाहर दूसरी जगह लेने चले जायेंगे । ऐसा करने पर दिक्कत पेश आती है ।

Mr. Sepaker : It is absolutely correct.

मुख्य मन्त्री : बजाए इस के स्पीकर साहिब जैसा कि तय किया गया है और जैसे काग्रेस वरकिंग कमेटी ने तय किया है देश की कांग्रेस सरकारे उसी पालिसी को इम्पली– मेंट करेंगीं और हरियाणा सरकार भी उसी पालिसी को इम्पलीमेंट करेगी इसे पेज्ड प्रोग्राम से बन्द करेंगे और अवश्य बन्द करेंगे ।

श्री अध्यक्ष : फेज्ड प्रोग्राम से नहीं होगा यह काम (हंसी) ।

मुध्य मन्त्री : स्पीकर साहिब, कोशिश तो की जायेगी । इसके बाद एक वात की चर्चा मैं और करना चाहता हूं । कुछ मैम्बर साहिबान ने हिन्दी के बारे कुछ चर्चा की है कि हिन्दी कैसी हो? कुछ मेम्बर साहिबान की राय थी कि प्योर हिन्दी हो शुद्ध हिन्दी हो और कुछ की राय यह है कि जो जबान हम बोलते हैं वह होनी चाहिये । राय दोनों की दुरुस्त हैं । अगर एकदम से शुद्ध हिन्दी कर दें तो हम में से बहुत से नहीं समझते हैं और जिस जवान को हम बोलते है' हिन्दुस्तानी को उसी जबान को अगर इन्टरोड्युस कर दें तो हम हिन्दी को संकुचित नहीं करेंगे । अगर उर्दू में लफ्ज अच्छे है वह भी इस में आ जायें, फारसी में अच्छे हैवह आ जायें, पंजाबी में अच्छे हैवह आ जायें और वह भाषा हम लिखें देव– नागरी में जिस को सब समझ सकें तो ज्यादा अच्छा होगा ।

कुछ मास्टरों की तबदीलियों के बारेमें भी जिक्र किया गया है । कुछ मेम्बर साहिबान की राय थी कि अच्छा हुआ और कुछ की राय थी कि ठीक नहीं हुआ । स्पीकर साहिब, मुझे लगता है कि सब से

अच्छा हुआ क्योंकि जो मास्टर अपने गांव में रहते थे या आस पास के गांवों में रहते थे वे पालेटिक्स में हिस्सा लेते थे या घर का काम करते थे स्कूल के काम का हर्ज होता था । लीडर आफ दी अपोजीशन राव बीरेन्द्र सिंह जो हाउस में मौजूद नहीं हैं । उन्होंने इस बारे. में बहुत चर्चा की और काफी क्रिटीसाइज किया । स्पीकर साहिब, राव साहिब की कैबिनिट ने अपनी कैबिनिट मीटिंग में पास किया था कि टीचर्ज के तबादले किये जायें लेकिन राव साहिब में यह हिम्मत नहीं थी कि वह अपने उस फैसले को इम्पलीमेंट कर सकते मगर भैने उस फैसले को दुबारा रिइटरेट करके इम्पलीमेट किया है । जिनको इस बात का पता नहीं था या जो इस बात को महसूस करते हैं वह टीक है वह ऐसा महसूस कर सकते हैऔर उन का सुझाव देना दूस्स्त है । लेकिन मुझे हैरानी इस बात की है कि राव बीरेन्द्र सिंह जी जैसे लीडर जो चीफ मिनिस्टर रह चुके है और जिनके वक्त में यह फैसला हुआ वह इसे क्रीटीसाइज करें । उनकी सरकारने फेसला किया उस दिन तो अच्छा था और आज मैने किया तो बुरा हो गया । इस लिए मं यह कहना चाहूंगा कि.....

Mr. Speaker : I think you must thank him for giving you this chance.

मुख्य मन्त्री : स्पीकर साहिब, मैं मेम्बर साहिबान से प्रार्थना करूंगा कि साल दो साल तो इसको देखें और मुझे विश्वास है कि यह स्कीम और पालिसी कामयाब रहेगी । हरिजन वैलफेयर की बात भी

कही गयी है और यह करनी भी चाहिए । हरिजन भाई ऐसे हैं जो समाज में पिछड़े हुए हैं । हम उन को आगे बढ़ाने के लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और करते रहेंगे । एक माननीय सदस्य ने हरिजन भाइयों में भी अलग अलग जाति का चर्चा किया । गवर्नमेंट अलग अलग जातियों के हिसाब से नहीं सोच सकती है । अगर हरिजन भाई अलग अलग जातियों की बात सोचेंगे तो जनरल काभी सोचना पड़ जाता है लेकिन जातिवाद हम हटाना चाहते हैं बढ़ाना नहीं चाहते हैं ।

चौधरी गोवर्धनदास : जातिवाद तो इस गवर्नमेंट का ही चलाया हुआ है हरिजनों के लिये अगर रिजर्वेशन न करें तो क्या जरूरत है बात कहने की । यह जातिवाद नहीं हक की बात है ।

मुख्य मन्त्री : इसके बावजूद भी सरकार इस बात का ध्यान रखेगी कि जो हरिजन भाई हैं उन कौ पूर्ण रूप से प्रोत्साहन मिले । स्पीकर साहिब, सतलुज ब्यास के पानी के वारे का भी जिक्र किया गया है । हम ने यह केस सैंट्रल गवर्नमेंट के साथ टेक अप किया हुआ है और पानी जितना हमारे हिस्से का है उतना पानी हम अवश्य लेंगे और भारत सरकार हमें देगी (चीयर्ज) स्पीकर साहब पीने के पानी की भी चर्चा की गई है । यह दुरुस्त है कि पिछले बीस साल से पीने के पानी की तरफ जितना ध्यान दिया जाना चाहिये था उतना नहीं दिया गया लेकिन अब यह सरकार इस बात की पूरी कोशिश कर रही है कि पीने का पानी ज्यादा से ज्यादा देहात और शहरों में दिया जाए । पिछले आठ नौ महीने में हमें

हस बारे में काफी कामयाबी मिली है और पहले जितना काम बीस साल में नहीं हो पाया थी हम उससे ज्यादा काम इन आठ नौ महीनों में कर पाये हैं । चंद्रावती जी ने गन्ने की कीमत का जिक्र किया और उन्होंने कहा कि वह यमुनानगर गई थीं और वहां किसानों ने उन्हें एक मैमोरैंडम दिया था और शिकायतें उन के सामने रखी थीं । चौधरी रणबीर सिंह जी ने भी कुछ ऐसी ही राय जाहिर की कि उनको कुछ मिलना चाहिये था । इसके साथ साथ उन दोनों माननीय सदस्यों ने यह बात भी कही कि केंद्रीय सरकार के मंत्री ने पालियामैट में इस बात का आश्वासन दिया कि किसानों को गन्ने की कीमत 10 रुपये किवंटल मिलेगी । मैं सदन को बताना चाहता हूं कि यमुनानगर में गन्ने की 10 रुपये कीमत ही दी जा रही है उस से थोड़ी नहीं क्योंकि वहां रिकवरी अच्छी है ।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : आन एप्वायंट आफ आर्डर, सर । मैं बताना चाहता हूं कि वहां भी गन्ने की कुछ कम कीमत दी जा रही है ।

Mr. Speaker : But this is no point of Order. Please do not interrupt again.

मुख्य मन्त्री : मेरी इनफर्मेशन के मुताबिक तो दस रुपये ही दी जा रही है । इसके साथ साथ स्पीकर साहिब, मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं' कि शूगरकेन का रेट फिक्स करना केंद्रीय सरकार का काम है प्रान्त की सरकार का नहीं है । प्रान्त की सरकार तो केद्र की सरकार का ध्यान आकर्षित कर सकती है और वह हम ने

आकर्षित किया था । इस के अलावा डराट अफैक्टिड एरियाज का भी जिक्र किया गया और चौधरी भजन लाल जी ने कहा कि काम नहीं हो रहा है । स्पीकर साहिब, उस पर काम खासा हो रहा है । यह हो सकता है कि उनके हलका में कुछ कम काम हुआ हो और हो सकता है कि उनके हलका में नहर लगती हो । जहां नहर लगती है उसके मुकाबले में जहां नहर नहीं लगती है वहां पहले काम कर रहे हैं । इस के बावजूद जहा इस किस्म की जरूरत हुई कि और अधिक काम किया जाए वहां पहले भी किया है । मैं कहना चाहता हूं कि किसी अकाल पीड़ित इलाका को नहीं छोड़ेंगे पूरा काम करेंगे ।

स्पीकर साहिब, राज्यपाल महोदय के ऐडैरस पर बोलते हुए राव बीरेन्द्र सिंह जी ने कहा कि पुलिटिकल काम के लिये गवर्नमेंट मशीनरी को इस्तेमाल किया जाता है । मै राव साहिब को इस बात का चौलेंज देता हूं कि इस किस्म की एक भी मिसाल बतायें जहां पुलिटिकल परपज के लिये गवर्नमेंट मशीनरी का इस्तेमाल हुआ हो । यह बात बिल्कुल निराधार, गलत और बेबुनियाद है ।

स्पीकर साहिब, कुछ माननीय सदस्यगण ने कुछ अधिक बसें चलाने की चर्चा की है । हम इन सदस्यों की इन मांगों को एगजामिन करवा लेंगे और एगजामिन करने के बाद जहां जरूरत महसूस हुई, वहां वहां बसें चलायेंगे । इनके इलावा आनरेबल मेंबर साहिबान की कुछ ऐसी मांगें थीं जो कि उन के अपने हल्कों से ताल्लुक रखती थीं, हम उन मांगों को एग्जामिन करेंगे, जहां मुनासिब होगा

और हमारे साधन इजाजत देंगे, ये मांगें पूरा करने की कोशिश करेंगे ।

Mr. Speaker : Question is—

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Mr. Speaker : Now the House will take up the Bill clause by clause.

Clauses 2 and 3

Mr. Speaker : Question is—

That Clauses 2 and 3 stand part of the Bill.

The motion was carried.

SCHEDULE

Mr. Speaker : Question is—

That Schedule be the Schedule of the Bill.

The motion was carried.

CLAUSE 1

Mr. Speaker : Question is—

That clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

TITLE

Mr. Speaker : Question is—That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried

वित्त मन्त्री (श्रीमती ओम प्रभा जैन) : मैं प्रस्ताव करती हूं– कि हरियाणा विनियोग (स० 2) विधेयक पास किया जाए ।

I beg to move—

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill be passed.)

Mr. Speaker : Motion moved—

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill be passed.

Mr. Speaker : Question is-

That the Haryana Appropriation (No. 2) Bill be passed.

The motion was carried.

Mr. Speaker : The House stands adjourned sine die.

6.56 P.M.

(The Sabha then adjourned sine die).